मुट्ठी भर फूल

(सामाजिक उपन्यास)

शिरीष

मनोरमा प्रकाशन गृह
नई दिल्ली

[द्वितीय संस्करण
१९६१]

[मूल्य २.५०

"आज कलम चलाये नही चल रही थी···हाथ उठाये नही उठ रहे थे ·····।"

"उफ"

तड़पकर उठ खडा हुआ···खिडकी के पास आया नजर अपने सामने वाली खिडकी से जा टकराई···खडी थी वह।

खामोश, नाशाद, मायूस ··निगाहे विनय की कोठरी पर थी ·· उसे देखकर वह हिली···उसके होठो ने कुछ कहा लेकिन वह सुन न सका क्योकि दूरी काफी थी।

क्यो खडी है···इतनी रात गये···कब से खडी है···एक साथ कई प्रश्न उठे विनय के दिल मे ··।

"ऊह···अपना क्या लेती है···खडी रहने दो ··।"

वह फिर से लिखने बैठ गया···लिख न सका और उसने फाइल बद कर दी दिया बुझा दिया···फिर लेट गया चारपाई पर।

नीद न आ सकी ··चैन न मिल सका···वह तडप उठा·· तेजी के साथ फिर से खिड़की पर आया। वह उसी तरह खडी थी।

"उफ" क्यो खडी है यह···क्या हो गया है इसे ? बडबडाया विनय। एकाएक वह चौक पड़ा।

सन्तू लौट आया था···आज इतनी जल्दी "पूछा विनय ने ·····।"

"हाँ भैया"···उसकी आँखे लाल हो रही थी···बाल बिखरे हुये थे।

"काम पर नही गये क्या ? ·····

"नही"

"फिर कहाँ गये थे।"

"शमशान"······

"किसलिये"······

"मुर्दे को जलाने के लिए।"

"सन्तू।"······

"हाँ...भैया जलानें के लिये...हरी को जलाने के लिये ।"

सिसक उठा सन्तू..."वह मर गया भैया ..हरी...मर गया ।"

"क्या कह रहे हो सन्तू ?".. खडा हो गया विनय ।

"ठीक ही तो कह रहा हूँ . अभी-अभी उसे जलाकर आया हूँ सत्तर रुपये जोड पाया था वह...अपनी बहन की शादी के लिये...हो गई शादी ।" और उसके आँसू बह चले......।

"मरा कैसे ?"

"हार्ट फेल हो गया था.. रिक्शा चलाते-चलाते..."और उसकी बहन ।"

"अकेली रह गई भैया.."एक दम अकेली.. कोई नही है उसका .. अब कोई नही.. ।"

"कौन कहता है उसका कोई नही है...गरीब का सहारा गरीब होता है पगले...हरी न सही...हम तो है ।"

"भैया तडप उठा सन्तू ।"

"हाँ सन्तू...उसका एक भाई मर गया तो क्या हुआ दो भाई तो जिन्दा है ।...चलो.. अभी चलेगे...उसे लेने के लिए...अपनी बहन को लेने के लिये ।"

और कोठरी के दरवाजे मे ताला लगा...खडी रह गई माया अपनी खिड़की पर . बढे जा रहे थे विनय और सन्तू...खीचे लिये जा रहा था बहन का प्यार ?

"भैया".. बोला सन्तू ।

"क्या ?"

"अपना पेट भरना ही मुश्किल हो रहा है और अब..।"

"यह तुम कह रहे हो सन्तू...क्या बाजुओ पर भरोसा नही.. क्या हम एक जिन्दगी नही सम्भाल सकते ।"

"सम्भालेगे भैया...हर तरह से सम्भालेंगे ।'

"घबराओ मत सन्तू···अगर विनय की कलम बहिन का पेट न भर सकी तो विनय भी कलम फेंककर रिक्शा चलाएगा रात के अन्धेरे मे· "और घर आ गया···हरी का घर·· अन्धेरा पड़ा था।

दरवाजा खटखटाया सन्तू ने।

"कौन" अन्दर से आवाज आई।

"मै हूँ···सन्तू।"

दरवाजा खुल गया···हिचकते कदम अन्दर बढे। सन्तू ने दिया जलाया और उसकी रोशनी मे देखा···विनय ने···मुरझाया हुआ चेहरा···गालो पर आँसुओ के निशान अभी तक बने हुये थे आँखो मे सिन्दूर की सी सुर्खी थी। वह तडप उठा···।

"रो रही हो चन्दा"···पर वह चुप रही।

"हँसी· वरना मैं सम्भाल न सकूँगा अपने आपको हँसो चदा।"

हँसा भाई की मौत के साथ ही मर गई।" वह बोली·····

"तो क्या तुम्हारे सब भाई मर गये···क्या मैं तुम्हारा भाई नही हूँ क्या हम दोनो को जिन्दा ही जला देना चाहती हो चन्दा"। तडपकर बोला विनय···।"

"भैया" और वह लिपट गई विनय से आँखो की नदी फिर से लहरा उठी।

"पागली कही की"। आँसू पोछ दिये विनय ने··"तुझे किस बात का डर है जिसके दो भाई जिन्दा हो उसे गम किस बात का···अब आँसू न देखूँ इन आँखो मे· समझी नही तो समझ लेना चला जाऊँगा मैं भी···हरी की तरह।"

"रोती है पगली·· छि"···और चन्दा से छुपाकर उसने अपने आँसू पोछ लिये धीरे से।

कोठरी की दशा ही बदल दी थी चन्दा ने···हर चीज ठिकाने से रख दी गई थी टूटी चारपाई पर साफ चद्दर बिछी हुई थी· टूटी खिडकी पर पर्दा बाँध दिया गया था। छत का जाला एक दम साफ कर दिया गया था।

सारी थकान भूल गया विनय। कुर्सी पर बैठकर एक लम्बी स्वाँस खीची!

"चाय लाऊँ भैया।" पूछा चन्दा ने।

"नही-नही चाय बनाने की जरूरत नही है···चन्दा।"

"लेकिन चाय तो बन गई है" उसकी आवाज मे भोलापन था।

"बन गई।"

'हाँ सन्तू भैया से तुम्हारे आने का समय पूछ लिया था ··सोचा थके हुये आओगे इसलिये पहले से ही बनाकर रख ली।"

"ओह अच्छा तो ले आओ" और वह जूते उतारने लगा।

कितना खुश था आज वह ··आज उसके घर मे भी एक बहन थी उसका ध्यान रखने के लिये कोई था।

और चन्दा चाय ले आई ··वर्षों के बाद वह जैसे चाय पी रहा था· ·कितनी अच्छी लग रही थी उसे यह चाय!

"सन्तू कहाँ गया है ?"

"बाजार गये है सब्जी खरीदने के लिये ·।"

"ओह हाँ ·सवेरे मैं सब्जी लाना तो भूल ही गया था।"

"तो क्या हुआ तुम न सही मै ले आया बात तो एक ही है न" और थैला सन्तू ने चन्दा को दे दिया।

हँस पडा विनय: ·आज कितने दिनो के बाद उसके होठों पर हँसी आई थी।

"चाय पियो तुम भी" बोला विनय।

'अपने 'राम तो पहले ही पी चुके है।'

"वाह मेरा इन्तजार भी नही किया ·"

"तुम्हारा इन्तजार ··वाह ··भैया···अरे याद नही एक बार तुम्ही ने कहा था कि लेखक आदमी का कोई भरोसा नही···कब आये और कब चला जाये।"

"ओह!" और फिर से हँस पड़ा विनय···चन्दा भी मुस्करा उठी।

"एक बात बताओ भैया···" बोली चन्दा।

"क्या ?"

"यह सामने वाले बंगले मे एक लड़की रहती है ··उसका दिमाग तो सही है।"

"क्यो क्या हुआ ?"

"अरे आज सारा दिन देखा है मैंने ··कुछ नही तो पचास बार खिडकी मे खडी होकर घूरती रही है अपनी कोठरी की तरफ ·और हाँ जब मैंने पर्दा लगाया · तो अपने नौकर से कहला दिया कि वैसे ही हवा कम आती है अब और भी नही आ पायेगी इसलिए पर्दा हटा दो।"

"पागल है।" कुछ गम्भीर हो गया विनय। खिडकी के पास आकर पर्दा हटाया। खडी थी वह· ·कुछ देर देखा विनय ने और फिर खींच दिया पर्दे को।

तडप उठी माया एक बार आह-भरी और पलग पर गिर पडी वहीं। आँखो से आँसू बह निकले · पत्थर कही के वह बडबडाई लेकिन कब तक नही पिघलोगे। उसने किताब उठा ली ऊपर लिखा था।

'टूटे तार"

एक पृष्ठ पलटा उसने किसी का चित्र था· ·नीचे छोटे-छोटे अक्षरो में छपा हुआ था "विनय"। बीच मे से खोलकर पढने लगी वह टूटे तार भी जोडे जा सकते हैं अगर सगीत मे दर्द है· · और गायक मे कला का प्यार है।

माया नें किताब सीने से लगा ली—आँखें बन्द कर ली नींद ने

उसे अपने दामन मे समेट लिया और वह सो गई। आँख खुलते ही उसकी घड़ी पर नजर गई· ·एक बजा· · रात का।

वह तेजी से खिडकी पर आयी· ·सड़क पर अँधेरा था· · ·फुटपाथ पर जल रहा था खम्भे का लट्टू।

नीचे बैठा था वह ·कमल चल रही थी माया के कदम बढ चले नीचे की ओर खामोशी से वह धीरे-धीरे सड़क पर निकल आई और आकर खडी हो गई विनय के ठीक पीछे।

वह लिख रहा था।

"जब गरीब की चीख आसमान से जा टकरायेगी· · तब फट पडेगा आकाश · तूफान उठेगा जिसमे जुल्म का डका बजाने वाले आलीशान महल रेत की ढर की तरह गिर पड़ेगे· · लेकिन इसी तरह खड़े रहेंगे गरीब के झोपडे · ·बेदाग· · वे असर।"

उसके माथे पर पसीना आ गया था धीरे से आँचल को लेकर पसीना पोछ दिया माया ने।

चौक पडा विनय। '· ·तुम इतनी रात को।"

लेकिन वह चुप रही उसकी निगाहें विनय के पैरो पर थी।

"चाहती क्या हो तुम · ·बंगले के सामने बैठा देखकर तो तुम्हारे पिताजी ने बन्द करवा दिया था· · अब क्या चाहती हो कि इतनी रात को तुम्हे मेरे पास देखकर · ·वह मुझे फांसी पर लटकवा दें।"

पर वह फिर भी खामोश रही · तडप उठा विनय।

"तुम बोलती क्यो नही हो · क्यो खडी हो यहाँ ·?"

"जो चाहो कह लो· · ·जी भर के गालियाँ दे लो· ·उससे भी दिल न भरे तो मुझे मार लो· · ·उसके होठ हिले · लेकिन मुझे यहाँ खड़ा रहने दो।"

"आखिर क्यो ?"

"यूँ ही· · ·मैं कुछ बिगाडूंगी नही· 'कुछ बोलूंगी नही· · ·खामोश खड़ी रहूँगी।"

"लेकिन किसलिये ।"

"मन का शान्ति के लिए ।"

"क्यो ?" मुस्कराया विनय· · क्या उन महलो मे मन की शान्ति नही मिलती ?"

"नही ।"

वह कुछ देर चुप रहा फिर एकाएक उसका रुख़ बदल गया ।

"रईस लोगो को ढोग रचना भी खूब आता है मन की शान्ति महल मे नही मिलती है तुम्हें · ·तो और भी इतनी जगह पडी हुई है । यहाँ क्यो खडी हो ?"

वह खामोश खडी रही· · ·उठकर खडा हो गया विनय ।

"मैं कहता हूँ होश सँभालो मेम साहब चली जाओ यहाँ से ।" लेकिन वह उसी तरह खड़ी रही मूर्तवत ।

क्या चाहती हो मैं यहाँ से चला जाऊँ· · ·।

और तब वह एकाएक नीचे को झुकी उसके हाथ विनय के पैर से जा लगे· · ·और सोच ही रहा था विनय पैर खीच लेने के लिए· · कि टपक पड़े उन पर गर्म-गर्म दो आँसू ।

"तडप उठा वह,· · ·पिघल उठा वह उसके हाथ धीरे-धीरे बढे उसने उठाते हुये धीरे से कहा· · ·मेम साहब ।"

× × ×

बाहर से आये हुये मुसाफिर तेजी से सीढियाँ उतरते हुये स्टेशन से बाहर आ रहे और उनके बढते कदमो पर लगी थीं चन्द निगाहे· · · जिन्हें इनसे कुछ आसरा था· · ·जो रोजाना इन्ही कदमो के इन्तजार मे झुकी रहती थी ताकि उनकी रोजी चल सके और भर सके उनका पापी पेट ।

इन्हीं रिक्शे वालों के झुन्ड मे एक तरफ प्यासी आँखें लिये खडा था सन्तू । एकाएक अटैची केस लिये छरहरे बदन का अजनबी आकर उसके रिक्शे मे बैठ गया है· · ·न मोल· · ·न तोल ।

"कहाँ चलना है बाबू" सन्तू से पूछा ।

"भूसा टोली· · ।"

सन्तू ने बीड़ी सुलगाई· · ·और फिर घन्टी को एक बार जोर से घनघनाकर पैडिल पर पैर रख दिया ।

चल पडा रिक्शा । "भूसा टोली मे किसके यहाँ जाओगे बाबू ।"· · · कौन से मकान मे ?

"मकान ढूंढना पडेगा यार" वह हँस पड़ा ।

"ढूंढना पडेगा ।"

"हाँ · मैं तो कभी गया नही हूँ बस पता लिखा हुआ है मेरे पास ।"

"नाम क्या है ?"

' मिस्टर विनय· · ·कहानी लेखक हैं ।"

"चौका सन्तू कहानी लिखते हैं ।"

"क्या आप भी कोई कहानी लेखक हैं ।"

"नही मैं कहानी खरीदता हूँ ।"

"तो आप उसे छापते होगे ।"

"ऊँ · हूँ· · हम फ़िल्म बनाते हैं· · ·कहानी खरीद लेते हैं फिर उसे फिल्म की शक्ल मे दुनियाँ को दिखाते हैं ।" ',ओह समझा तो आप विनय भैया की कहानी खरीदने आये हैं ।"

"हाँ लेकिन वह क्या तुम्हारे भाई हैं ?" चौंका अजनबी ।

"धर्म भाई ।"

और रिक्शा टूटी हवेली के सामने रुक गया ।

"एक मिनट बैठिये· · ·बैठिये आप मैं अभी आता आता हूँ ।"· · ·और सन्तू भागता हुआ अन्दर घुस गया ।

विनय सो रहा था· · ·झकझोर डाला सन्तू ने ।

"क्या है सन्तू उठकर बैठ गया विनय। कौन-सी मुसीबत आ गई है ?"

'मुसीबत नही भैया···तकदीर कहो तकदीर···"

"कैसी तकदीर।"

"अरे भैया, एक साहब आये हैं फिल्म बनाते है"···तुम्हारी कहानी खरीदने।

और विनय उठकर तेजी से बाहर की ओर भागा।

"आप।"

"जी हाँ·· " मुझे विनोद भास्कर कहते हैं···"और शायद आप।"

"जी हाँ मुझे विनय कहते हैं···आइये अन्दर चलिये···।"

और विनय ने अटैची केस रिक्शे पर से उतार लिया।

गरीब के घर में तकलीफ तो जरूर होगी आपको एक कोने में अटैचीकेस रखते हुये कहा विनय ने "तकलीफ नही विनय बाबू···मन की शान्ति मिलेगी और विनोद हँसते हुये उस टूटी चारपाई पर बैठ गया।

चन्दा···उठ बैठी थी···उसने जल्दी से अगीठी जलाई और चाय का पानी चढा दिया।

"हाँ तो···विनय बाबू···आपकी रचनायें पढते-पढते एकाएक मेरे दिमाग मे उठा कि क्यो न आपसे कहानी लेकर मैं फिल्म बनाऊँ··· आपके प्रकाशन आफिस से मैंने आपका पता मँगवा लिया था और बगैर आपसे पूछे ही चला आया।"

यह कहकर विनोद ने जेब से एक कागज और कुछ नोट निकाले।

"यह पाँच सौ रुपया आपका एडवास है···और इस कन्ट्रेक्ट पर साइन करना है आपको।"

"लेकिन विनोद जी यह तो बताया ही नही कि कौन-सी कहानी आप लेंगे।"

सन्तू · खुशी और आश्चर्य मे डूबा यह तमाशा देख रहा था।

"कहानी तो आपको लिखनी पडेगी···बोला विनोद ··कल मेरे साथ बम्बई चलिये फिर सब प्रोग्राम वही बनायेगे, "बम्बई तो क्या मुझे भी बम्बई चलना पडेगा।" "of course (बेशक)···बगैर गये काम कैसे चलेगा।

"लेकिन बम्बई तो बहुत दूर है भैया"·· सकपकाया सन्तू।

"इससे घबरा गये" हँस पडा विनोद इतने अच्छे लेखक का घर वह सामने वाले बँगले से भी कही ज्यादा अच्छा होना चाहिये ··और यह कमी पूरी करने के लिये···यह मत सोचिये···कि बम्बई इतनी दूर है · समझे विनय बाबू अच्छा हाँ तो पहले इस पर दस्तखत कर दीजिये बाद मे बात होगी।"

और काँपते हाँथों से विनय ने दस्तखत कर दिये उन्ही काँपते हाथो मे पाँच सौ से नोट विनोद ने पकडा दिये।

और उठ खडा हुआ सन्तू।

"मैं चलता हूँ भय्या · रिक्शा जमा कराना है" और वह बाहर की ओर चल पडा।

"सन्तू 'विनय भी उठकर बाहर चला आया।"

"रिक्शा हमेशा के लिये जमाकर देना · "

"क्यो ···· "

" · अब तुम रिक्शा नही चलाओगे ये पाँच सौ रुपये है इनसे गुजारा चलाना।"

" · मै कुछ ही दिनों मे वहाँ से और भेज दूँगा और जब रहने का ठीक ठिकाना हो जायगा तो तुम्हे और चन्दा को भी वही बुला लूँगा।"

'भैया ··"

"हाँ "

"जरा सामने देखो।"···वह खडी थी खिडकी पर।

"मुझे ··चन्दा को ··और इसे।"

"बकवास करना बहुत आ गया है।"

"कम-से-कम बेचारी से कह तो दो भैया कि तुम जा रहे हो ·· नही तो इन्तजार में रो-रो कर अन्धी हो जायेगी।"

"हाँ-हाँ कल कह दूँगा। जा भाग अब रिक्शा जमा कराके जल्दी से लौट आओ ··समझे···।"

और हँसता हुआ चला गया सन्तू ·विनय ने एक बार ऊपर देखा और फिर अन्दर चला आया।

"चाय तैयार है भैया" ·बोली चन्दा।

"बन गई ··अच्छा ले आओ।" "इस समय तकलीफ करने की क्या जरूरत थी।" बोला विनोद।

"तकलीफ में ही मन को शान्ति मिलती है विनोद जी।"

और चाय का प्याला चन्दा ने विनोद के हाथो मे दे दिया ·· विनय ने भी एक घूट भरा···और फिर खिडकी का पर्दा जरा-सा हटाते हुये कहा मैं जा रहा हूँ।"

मातम-सा छाया हुआ था उस कोठरी मे···चन्दा एक कोने मे सुबक रही थी · सन्तू एक कोने मे मुँह लटकाये बैठा था···बीडी बेशर्मी से जलती चली जा रही थी लेकिन वह बेखबर था।

और परेशान खडा था विनय खिडकी के पास···उसे जाना था · वह जा रहा था ·दूर ·बहुत दूर· ·बम्बई·· कहानी बेचने के लिये।

"आखिर यह सब क्या है···।" वह पलटा ··क्या है सन्तू··· क्यो सिसक रही हो चन्दा···मैं कोई हमेशा के लिये तो नही जा रहा हूँ·····

खामोशी छाई रही···मुंह लटका रहा आँसू बहते रहे·· तडप उठा वह।

"सन्तू···उसने झकझोर डाला सन्तू को। यह तो सोचो मैं क्यो जा रहा हूँ···हमे पैसे की जरूरत है सन्तू···पैसा चाहिये हमे ··

अगर बम्बई जाने से अच्छा खासा पैसा मिल रहा है तो उसमे क्या बुराई है। बोलो न।"

"पैसा किसे चाहिये भैया · सन्तू के होठ हिले···मुझे या चन्दा को ·नही हमे किसी को पैसे नही चाहिये···तो फिर क्या तुम्हें ?···"

"लेकिन तुम्हे तो पैसो से नफरत है ··पैसे से दुश्मनी है भैया।··· फिर क्या तुम अपने आपसे नफरत करोगे।"

"ओह···अब तुम्हे कैसे समझाऊँ···वह फिर परेशानी मे खिड़की की ओर चला गया।"

"मैं रईसी के लिये पैसा नही चाहता कम-से-कम जो हमारी जरूरतें है उसके लिये तो हमे पैसो की जरूरत है।···नही है···अब कल को चन्दा की शादी का सवाल उठेगा···पैसा उस समय पैसा याद आयेगा सन्तू···पैसा नही होगा तो शादी कैसे करोगे इसकी···। और तमाम जरूरतें हैं···ज़रा उन्ही को सोचो ·"

"क्या सोचें भैया सब·· सब जरूरतें पूरी हो जायेंगी···मैं दिन-रात रिक्शा चलाऊँगा· ·कस के मेहनत करूंगा···लेकिन तुम न जाओ भैया ·····"

"यह सब सपने दूर से ही सच्चे मालूम देते हैं लेकिन पास से झूठे होते है·· हमे पैसा नही चाहिये···हमे कुछ नही चाहिये बस तुम हमारे पास रहो···और अगर पैसा भी तकदीर मे होगा तो कहीं-न-कही से आ ही जायगा।···और फिर उन्हें कहानी ही. तो चाहिये न·· तो क्या जरूरत है बम्बई जाकर ही तुम कहानी लिखो···यहाँ से लिख करके भी तो भेज सकते हो······"

"मैंने कहा तो था···लेकिन उससे काम नही चलेगा··· ।"

"तो रहने दो भैया·· तुम यही से लिख करके छपने के लिये दो··· यहाँ भी तो पैसा मिलेगा··· ।"

"यहाँ उतना पैसा नही मिलेगा सन्तू···जितना हमें चाहिये है··· जितना हमे वहाँ मिल सकता है··· ।"

"कितना पैसा चाहिये है आपको ··मे दे दूंगी ··लेकिन बम्बई मत जाईये।" · माया दरवाजे पर खडी थी।

फिर से उसके जख्मी दिल के टूटे तारो को छेड़ दिया गया था··· जिस झनकार से उसे नफरत थी वह फिर से झनकृत हो उठी···तडप उठा वह ·।

"अपना पैसा अपने पास रखिये मेम साहब··मुझे अपनी कलम पर भरोसा है ·।"

"भरोसा होता तो उसे बेचने की कोशिश न करते।"

"क्या मतलब।"

"यह बेचना ही तो कहा जायगा·· पैसे के लिये कलम को लेकर इतनी दू जा रहे हो · अगर कलम मे ताकत है तो पैसे को उतनी दूर से अपने पास खीच लेगी।"

"सीमा के बाहर जाने की कोशिश न कीजिये माया जी"···आप मुझ पर नही मेरी कलम पर कीचड़ उछाल रही हैं जो कि मेरी बर्दाश्त के बाहर है।"

"समझने का प्रयत्न कीजिये विनय बाबू···मैं कीचड नही उछाल रही हूँ ··कुछ तो सोचिये · कितने मासूम दिलो को तोड़कर आप पैसे की तरफ दौड रहे हैं क्या रुपया इन दिलो से ज्यादा कीमती है··· पैसा तो फिर भी मिल जायगा लेकिन ये दिल एक बार टूट गया तो फिर से जुडना मुश्किल हो जायगा।'

"आप अपने दिल की फिक्र कीजिये मेम साहब···मैंने कहा न··· आप·· अपना ख्याल कीजिये।"

"भैया· · बोला···सन्तू · कही ऐसा न हो कि तुम्हारी कहानी के साथ कही अपनी कहानी बन जाय। जाने वाले को किसने रोका है··· खुशी से जाओ लेकिन हाँ इतना याद रखना भैया कि दौलत अपने सामने किसी को नही टिकने देती जो इसके चक्कर में पड़ा है ·· वह सन्तू या चन्दा तो क्या अपने आपको भूल गया है···।"

यह तुम मुझसे कह रहे हो सन्तू' 'क्या ख्वाब मे भी तुम्हे ऐसा विचार आ सकता है कि तुम्हे भूल जाऊंगा अरे बदकिस्मती की कठोर दीवार भी मुझे तुमसे अलग न कर पायी सन्तू ।"

"लेकिन अब डरता हूँ भैया कि कही'''यह दौलत की दीवार'' तुम्हे मुझसे अलग न कर दे ।' और सन्तू उठकर बाहर चला गया आँखो मे आये हुये आँसुओ को छिपाने के लिये ।'''

दोनो तरफ आग जल रही थी ' एक तरफ ट्रेन के इन्जन और दूसरी ओर तीन मासूम दिलो मे'''अपनी आग को दबा सकने के कारण ट्रेन का धुआँ गुब्बार बनकर बाहर निकल रहा था लेकिन'''

"दिल ' ' '

मजबूर दिल

अपनी आग को दिल मे दबाये हुये वे तीनो इन्तजार कर रहे थे ट्रेन छूटने का नही ' अपने साथी के बिछड जाने का ट्रेन की चीखती आवाज को सुनकर आँखे तीनो की मीलो दूर ले जाने वाले इ जन की ओर उठी और फिर एकाएक माया ने विनय की ओर देखा "डबडबाई आँखो से ।"

भैया ! तड़प उठा सन्तू:' फिर से एक बार सोच लो , कही ऐसा हो पैसे की लालच मे तुम सन्तू और चन्दा को खो बैठो ''यह सन्तू कह रहा है भैया ''वह बँगले वह कार नीले बल्बो की तैरती हुई रोशनी:''चाँदी की झन्कार'' छलकती हुई गलियाँ:''बल खाती जवानियाँ'''तुम्हे, जोश न दिला सकेगी'''उन रगीनियो मे तुम कहानी न लिख सकोगे,''तुम ।"

"सन्तू" ''चीख पडा विनय'' 'आँखें एक बार बश मे आकर विनय ने आँखें दूसरी 'ओर हटा ली और इससे पहले की सन्त की आँखो से

दो गर्म-गर्म···टपके रुमाल लगा दिया माया ने उसकी आँखो मे··
"बम्बई की दौलत से अधिक कीमती हैं यह आँसू।"

"और ट्रेन चल दी हाथ उठे··हिले और फिर झुक गये ट्रेन की बढती गति के साथ-साथ बेबस इन्सानो के कदम भी पीछे लौटे।"

"ताला खुला और झटके के साथ गिरती हुई चन्दा को तीन टाँग की चारपाई ने सहारा दिया ·सन्तू के लडखडाते कदम आगे बढे···
"चन्दा वह चीख पडा" मैं कहता था न भैया कहानी न लिख सकेंगे···
देखो वह देखो घबरा कर उठी चन्दा।

"क्या देखूँ भैया अब भी कुछ बचा है।"

"हँस पडा सन्तू ·हाँ पगली उन्होने हमारा साथ छोड दिया और किसी ने उनका साथ छोड दिया···"

"फिर भी न समझी चन्दा क्या दिखा रहे हो"·· कलम ··भैया की कलम वह देखो कोने मे पडी हैं ·जेब मे से गिर पडी होगी ··नहीं शायद दौलत के हाथो बिकना मजूर न था ··सह न सकी बम्बई जाना
"तो क्या हुआ दूसरी कलम खरीद लेगे" ·नही चन्दा हर कलम में यह ताकत नही होती।

"माया दरवाजे पर खडी थी···उसकी निगाह एक बार सन्तू की तरफ उठी और एक बार कलम की तरफ···।"

"यह कलम मुझे दे दो।"

सोचते हिचकते हाथ से सन्तू ने कलम दे दिया और बरबस पूछ ही बैठा · क्या करेगी इसका ·।"

"एक दिन धोखा खाकर भूला हुआ लेखक वापिस आयेगा ··उसे तलाश होगी केवल एक चीज की···"

चन्दा और सन्तू के होठो से एक साथ-साथ निकल पड़ा।

"कलम।"

× × ×

"कलम"

चौंक पडा विनय···मेरी कलम कहाँ गई।···वह परेशानी मे कमरे की चीजें इधर-उधर करने लगा। अचानक ख्याल आया कही उस नाचने वाली···क्या नाम है उसका हाँ याद आया अलका उसके यहाँ तो नही भूल आया।

कमरे में फिर से ताला डाल कर वह तेजी से बाहर आया · इत्तफाक से टैक्सी खड़ी हुई थी·· वह अन्दर बैठ गया मीटर घुमा कर···टैक्सी ड्राइवर···अन्दर बैठ गया और टैक्सी स्टार्ट कर दी "कहाँ चलना है ?"

जेकब सर्किल ··और सिगरेट निकाल कर उसने मुँह से लगा ली। रात के अन्धेरे और बल्बो की रोशनी चीरती हुई टैक्सी आगे बढती चली गई।

एक· ·

दो···

तीन·· सिगरटें जल गईं।

"एक रुपया दस आना।" · और पैसे देकर वह बढ चला अलका से फ्लैट की ओर।

अन्धी जवानी के नशे मे झूम-झूम कर बेदर्दी से दौलत को लुटा कर बरबाद हो जाने वालो की दास्तान की यह बिल्डिंग और मखमल के मुलायम·· गद्दे पर बेचैनी से करवट बदल रही थी मदहोश जवानी ·· फिल्मी तारिका···अलका सोने की तैयारी ही की थी कि फिर से बैल घनघना उठी।

"उफ··अब इतनी रात को कौन आया है· ·वह उठी नौकरो को जगाने की तकलीफ कौन करे।

ब्लाउज रात को सोते समय उतार देने के कारण अब वक्ष पर केवल चार इन्च कपडे की बौडिस थी और वह भी तूफान को सम्भाल न सकने के कारण आधी ऊपर को सरक गई थी ··आधा

दबा हुआ तूफान अलका ने सिलकी दुपट्टे से ढक लिया • •जिसमे से शायद चश्मा लगानें वाला इन्सान भी बगैर चश्मे के देखकर बता सकता था कि नीचे क्या है ?

उसने एक अगडाई ली•••और दरवाजा खोल दिया। आप।•••

वह खामोश खडा रहा•••उसकी आँखे ठहर न रही थी उस नीले दुपट्टे पर।••• ••

"मैं जानती थी आप आयेंगे।"•

वह फिर भी खामोश रहा। "अन्दर आइये न। और उसने विनय का हाथ पकड कर अन्दर खीच लिया, दरवाजा फिर से बन्द हो गया।"

कमरे मे नीला बल्ब जल रहा था रेडियो पर धीमा-धीमा इगलिश सगीत बज रहा था •और चल रही धीमी-धीमी हवा • •बिजली के पखे से।

सिहर उठा विनय• •

"भूल गया कि कलम ढूंढने आया था" दीवार का सहारा लेकर खडा हो गया वह।

"अलका की आँखो मे मस्ती झूम रही थी जवानी का तूफा बार-बार रह-रह कर नीले दुपट्टे को उठा और गिरा रहा था।"

"बैठिये न और उसने एक झटके के साथ विनय को पलग पर ढकेल दिया।"

"वह अधलेटी अवस्था मे पडा था पलग पर और उस पर आधा शरीर अलका का •।

विनय •धीरे से कहा अलका मे• उसकी आँखे • अलका की आँखो मे थी दुपट्टा रह-रह कर सीने से टकरा रहा था • नशा भ नशा मिला• • •।

और न सम्भाल सका अपने आपको • उसके हाथ उठे •और जकड़ लिया उसने अलका को बाहूपाश मे ।

"उँह बस कराह उठी। जरा धीरे से लेखक··कहीं तोड़ न देना।"···

बन्धन सकता चला गया···और फिर एकाएक अलका झटके के साथ उठी ·

"अलका"· तड़प उठा विनय।

"बस· ·वह हँसी···इतनी बेसब्री · लेखक जरा लाइट तो बुझा देने दो।"···

"फक · रोशनी बुझ गई · ·पलग पर किसी के गिरने की आवाज हुई · और···अब बस···बस करो· ···लेखक · ·विनय· ·रोशनी जल गई।

विनय को होश आया वह किस लिये आया था· · और क्या कर बैठा · ·नहीं-नहीं · उसे ऐसा नहीं करना चाहिये था। ··

"क्या सोच रहे हो ।"

उसकी उड़ती-सी निगाहे कमरे के चारो ओर घूम गई।

"क्या देख रहे हो · ।"

उसके होठ हिले क ल म "कहाँ है कलम।" वह फिर से उसे अपनी ओर खीचने लगी। ··

और फिर वह तेजी से उठते हुए बढ़ चला दरवाजे की ओर··· खो ··गई···।

× × ×

"तुम रिक्शा नहीं चलाओगे भैया।···तड़प उठी चन्दा।" अगर ऐसा ही है तो कोशिश करो · फिर से दफ्तरो के चक्कर लगाओ ·· कहीं-न-कहीं नौकरी मिल ही जायेगी।"

"कोशिश करके हार गया चन्दा ··हताश होकर ही रिक्शा चलाना शुरू किया था···वरना क्या मुझे मजा आता है रात के अन्धेरे मे मुँह छिपाकर रिक्शा चलाने मे।"

लेखक की ओर से····!

मुझ पर कुछ प्रिय पाठको ने यह आरोप लगाया है कि प्रस्तुत उपन्यास का अन्त मैंने बहुत ही दुखमय बना दिया है, और यही कारण है कि इसे पढने के बाद प्रर्याप्त समय तक चित्त-अस्थिर और दुःख मे डूबा रहता है ! पाठको का हर आरोप मुझे प्रिय लगता है।

और आज जब कि "मुट्ठी भर फूल" का द्वितीय सस्करण प्रकाशित हो रहा है, मैंने अवसर पाया है कि इस आरोप के विषय मे कुछ लिख सकूं।

मानव के जीवन मे वे क्षण नही के बराबर आते है जबकि वह खुलकर कह सकता है कि मैं सुखी हूँ। कभी हम अतीत के विषय मे सोचते हैं और उदास हो जाते हैं···क्योकि आज हमारे पास वह कुछ नही होता जो अतीत में था—वर्तमान पर आँखें फेक कर हम चिन्तित हो उठते हैं· न जाने जो अब है वह फिर रहेगा या नही और जब कल के विषय में सोचते है तो आँखें शून्य मे झाँकती रह जाती है क्या ?···का प्रश्न लिए !

यही कारण है कि हमारे जीवन मे सुख और दुख एक के बाद एक आते रहते है और हमारी हार्दिक हँसी मे भी दुख और मलिनता का मिश्रण रहता है।

अंग्रेजी के महान कवि शैली ने भी लिखा है···

"Our Sweetest songs are those that tell of saddest thought."

यह तो अपनी-अपनी बात है पर विशेषरूप से मेरी लेखनी पर इस युक्ति का प्रभाव पडा है। फिर कब हम क्या सोचते हैं इसे मैं स्वय भी समझ नही पाया हूँ !

अन्त मे अपने पाठकों को मैं धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने किसी भी रूप मे मेरी रचनाओ को गले लगाना सीखा है ? पुस्तक के प्रकाशक का हृदय से आभारी हूँ। इसलिए नही कि वे मेरी पुस्तक के प्रकाशक है' 'वरन् कुछ ऐसी विशेष बातें उनमे मैंने पायी है जो आज के रूढ़िवादी ''लकीर के फकीर चन्द प्रकाशको मे नही होती। उन्होने कला को गले से लगाना सीखा है, व्यक्ति को नही, और मुझे विश्वास है कि यदि इन्ही जैसे विचार-प्रकाशको मे धीरे-धीरे बढते गए, तो कुछ ही दिनो में हिन्दी-साहित्य के छिपे गौरव पूर्णरूपेण विकसित हो सकेंगे।

करैरा
१४ फरवरी, १९६१

श्रीधर सक्सेना 'शिरीष'

मुट्ठी भर फूल

सिसकती·····कांपती·····लड़खड़ाती······

बुझ गई दिये की लौ।

"क्या हुआ"।···चौककर उठ बैठा विनय। तकिये के नीचे से उसने दियासलाई निकालकर जलाई······दिया सूना था······बत्ती आखिरी श्वांसें गिन रही थी···और उठता हुआ नाजुक धुंआ कह रहा था······

"तेल खत्म हो गया।"

मुस्कान खेल गई विनय के होठो पर···और एक ठण्डी श्वांस खीच कर वह बड़बड़ाया—

"अब तुम भी आराम करो···तेल डिब्बे मे नही है जो तुम्हें फिर से जीवन-दान दे सकूं।"

और वह लेट गया चारपाई पर—जिसकी केवल तीन टाँगें थी—चौथी टाँग टूट जाने के कारण चारपाई ने चन्द ईटो का सहारा लिया था। आँखें बन्द कर ली उसने · मुंह ढक लिया···पर···न सो सका। कहानी अधूरी रह गई थी और दिया बुझ गया···भला नीद कैसे आती।

"उफ़ गरीबी"—वह बड़बड़ाया—"लेकिन नही···मज़ा आता है इस मर-मर के जीने मे·· सीधी-सादी ज़िन्दगी तो सवेरे शुरू होती है और रात को खत्म हो जाती है···इसमे कम-से-कम कशमकश तो है।"

उसने मुंह खोल लिया·· आँखें खोल ली···सड़क पर लगे हुये बिजली के खम्भे की रोशनी मे उसे नजर पड़ी उस कोठरी की छत··· जिसमे मकड़ियों की कृपा से झाड़-फानूस लटके हुये थे ··महाराणा प्रताप ने भी तो मकड़ियो के जाले से नया उत्साह पाया था। वह उठ

बैठा ' छोटी सी खिडकी, जिसके दरवाजे जमाने की हवा को दान कर दिये गये थे'' मे से झाँककर उसने बाहर देखा''''''

रोशनी''''''सडक'''''' सुनसान'''बिजली का खम्भा'''अधूरी कहानी'''''' ।

उसने फाइल उठायी और बाहर निकल आया—हवा के झोके ने स्वागत किया और वह बैठ गया फुटपाथ पर ''बिजली के खम्भे के नीचे । कलम अकड़ गई'' हाथ रुक गये ''ओह समझा विनय'''सिगरेट चाहिये । जेब मे हाथ डाला'''आधी बुझी हुई सिगरेट निकली डूबते को तिनके का सहारा होता है ।

"चलो यही सही ।" वह हँसा'''और मुँह लगी मुँह से जा लगी ।

कलम चलने लगी'''चलती गई'''न जाने कब तक'''और एकाएक चौककर देखा उसने सामने ' बँगले मे कोने वाले ऊपर के कमरे में लाइट जला दी गई थी ।

"तो चार बज गये ।"

"हाँ चार बज गये ।"

वह पलटा सन्तू खडा था'''पतला-सा'' काला-सा'''लम्बा-सा ।

"क्यो सन्तू लौट आए धन्धे से ।"

"हाँ भैया"'''वह बैठ गया वही बराबर मे'''सन्तू के पास ।

"क्या रहा आज ।"

"कुछ न पूछो भैया'''रात भर रिक्शा चलाया'' घोड़े की तरह दम तोड़ा'''और उल्टे दो आना कर्जा चढ़ गया ।"

"वह कैसे ?"

"रात भर मे एक रुपया दो आना कमाया था'''रिक्शे का किराया देना था एक रुपया चार आना'''दिया एक रुपया दो आना'''कर्जा हुआ दो आना ।" और सन्तू के हाथ जेब की ओर बढ़े'''।

"बीडी पियोगे भैया ।"

"विनय खामोश रहा ।"

"लो पियो।" और तब होश में आया वह···बीडी सुलगाकर मुँह से लगा ली और बन्द कर दी फाइल।

"क्या सोचने लगे भैया ?" बोला सन्तू—

"कुछ नही।"

"अरे सोचा न करो दादा···वैसे ही जिन्दगी कौन-सी खुशी से गुजर रही है जो और सोचकर इसमे जग लगा दे।"

"लग चुका सन्तू···अब बाकी ही क्या रहा है"···उसने बीडी फिर से मुँह से लगा ली।

"भैया"···बोला सन्तू

"हूँ"···

"जरा सामने देखो।"

उसकी नजरें ऊपर उठी···कोने वाले कमरे की खिडकी मे कोई खडी थी। कुछ देर खड़ी रही···फिर अन्दर चली गई, मुस्करा उठा विनय।

"कौन है यह ?" पूछा सन्तू ने—

"पाँच-छ. दिन हुये है आये···यह बगला खरीदा है ··शायद चार बजे पढने के लिये उठती है।"

'भैया"···फिर बोला सन्तू—

"क्या ?"

"जरा ऊपर देखो।"

खिडकी मे लडकी के साथ मोटा-सा अधेड़ खड़ा था कोई ···। कुछ देर तक खडा रहा फिर अन्दर चला गया।

"यह कौन था ?"···पूछा सन्तू ने।

"इसका बाप है शायद।"

"लेकिन यह क्यो आया खिड़की मे ?"

"हमे देखने के लिये।"

फिर कुछ देर खामोशी रही···बीडी खत्म होने को आ रही थी ··तभी बोल पडा सन्तू ।

"भैया"

"हाँ"

"जरा बाँये हाथ की ओर देखो ।"

कार चली आ रही थी · सिर्फ बत्तियाँ ही नजर आ रही थी ।

"यह क्या है भैया ?"

"कार है शायद"···

"इस समय इधर कैसे आ रही है ?"

"शायद हमे लेने के लिये !" और हँस पडा विनय लेकिन क्षण भर बाद ही वह हँसी आश्चर्य मे बदल गई ··

पुलिस की कार थी वह जो कि ठीक उसके समीप ही आकर रुकी थी ।

"पुलिस की कार है भैया !" सन्तू ने कहा···और विनय के कुछ बोलने से पहले ही उसमे से उतर पडे चार सिपाही । अकड़कर बोले ।

"बैठो अन्दर ।"

"लेकिन क्यो ।"···चौका विनय ।

"सवाल थाने मे पूछना·· चलो बैठो ।" और मजबूरन वे बैठ गये कार मे ··। रफ्तार के साथ कार आगे चल दी ।

"भैया ।" सन्तू बोला—

"हूँ"···

"यह कैसे ले जा रहे है ?"

"इज्जत के साथ ।"

और हँस पड़ा वह··सूखी हँसी···तडपती हँसी· ·सिसकती हँसी···।

× × ×

चालीस रुपये माहवार पर दिन-रात फर्ज अदा करने वाले दो सिपाहियो ने सवेरे-ही-सवेरे...जब कमरे मे अदब के साथ ले जाकर दोनो को खडा किया...तब गौर से देखा विनय ने उस लडकी को और मोटे से अधेड को जो कि कुर्सियो पर बैठे हुए थे। सामने कुर्सी पर बैठा था तलवार कट मूँछो वाला पहलवान...पुलिस इन्सपैक्टर।

"सूरत से तो शरीफ जान पडते हो।" बोला इन्सपैक्टर।

"सूरत पर न जाइये इसपैक्टर साहब ..वरना फिर धोखा खा जायेंगे आप।" हँसा विनय।

"सेठ जी के बगले के सामने सवेरे चार बजे किसलिए बैठे थे ?"

"चोरी करने के लिये।" तडप उठा विनय।

"अच्छा"...मुस्कराया इसपैक्टर" गुनाह खुद कबूलकर रहे हो।"

"गुनाह"...कौन-सा काम गुनाह नही है...शायद जिन्दा रहना भी तो एक बहुत बडा अपराध है।"

"क्यो।"

"देख लीजिये न...न हमने जिन्दा रहने की कोशिश की होती न इस तरह आपके सामने खड़े होते।"

"तो क्या जिन्दा रहने के लिए तुम इनके बगले के सामने खडे थे ?"

"जी नही मरने के लिए।...सडी हुई बदबूदार काली अँधेरी कोठरी...जिसमे जहरीले मच्छर काट-काट कर छेदे डाल रहे हो...दम घुट रहा हो।...उसमे से निकलकर खुली हवा मे जिन्दा रहने के लिए बैठ जाना गुनाह है क्या ? यह रईस पूँजीपति...जिनके घर मे हवादार खिडकियाँ होते हुये भी बिजली के पखे लगे रहते है...जो टूटी चारपाई की जगह मखमल के गद्दो पर सोते है...जो मच्छरो की भनभनाहट की जगह इत्र की खुशबू सूँघते है...क्या यह ही जिन्दा रहने के अधिकारी हैं।

एक गरीब यदि फटे हुये कपड़े पहन लेता है तो उसे नीच समझा

जाता है एक रईस अगर फटे हुये कपडे पहन लेता है तो उसे महान कहा जाता है—एक धानी अगर चार बजे सवेरे कही घूमने के लिए निकल जाता है तो उसे मारनिंग वाक (Morning Walk) कहा जाता है और अगर एक गरीब अधेरी कोठरी से घबराकर खुली हवा मे बैठ जाता है तो उसे चोर समझा जाता है··। क्या यही है आपका कानून और इसाफ !" खामोशी छा गई कुछ देर के लिये।

"सेठजी ने टेलीफून कर दिया और आपने गिरफ्तार कर लिया। लेकिन क्या यह जानते है कि मै इन्ही के बगले के सामने वाली टूटी हवेली की एक अन्धेरी कोठरी मे रहता हूँ। क्या यह जानते है कि मैं एक प्रसिद्ध कहानी लेखक होते हुये भी भूखो मरता हूँ···क्या आप जानते है कि मेरा यह साथी ग्रेजुएट होते हुये भी रात के अँधेरे मे रिक्शा चलाता है···।

सोने की चहारदिवारी मे बन्द रहने के कारण यह पूँजीपति इन्सानियत को भूल जाते है इसपैक्टर साहब ! रुपये की खनखनाहट सुनते-सुनते इनके कान और कुछ सुनने के लिये बहरे हो चुके है··· जाली बहीखाते बनाते-बनाते इनके दिमागो मे जग लग गया है·· ताकि यह करने से पहले कुछ सोच न सके।"

"आपका नाम क्या है ?" बोला इसपैक्टर।

"लोग मुझे विनय के नाम से जानते है।"

"विनय" ·चौक पडा इन्सपैक्टर "टूटे तार" उपन्यास आपका ही लिखा हुआ है ?"

"बदकिस्मती से"···मुस्कराया विनय।

"इतने अच्छे लेखक की इतनी गरीब हालत।"

"लेखक अगर गरीब न हो तो वह लिख न सके इन्सपैक्टर साहब।"

"किसी हद तक ठीक ही कहते है आप···खैर मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ विनय बाबू···माफ कर देंगे आप ?"

"माफी तो सेठजी से माँगिये···जिन्हें इतनी तकलीफ उठानी पड़ी है···शायद मेरे ही कारण।"

लेकिन सेठजी कुछ न बोले·· सिर झुक-सा गया—गर्दन लटक-सी गई·· स्वाँस ऊपर के ऊपर · नीचे के नीचे···और तब मुस्कराते हुये इन्सपैक्टर ने एक बार उनकी ओर देखकर सिपाही से कहा।

"मिस्टर विनय और इनके साथी को इज्जत के साथ घर पहुँचा दो।"

और सब बाहर निकल आये···विनय से इन्सपैक्टर ने हाथ मिलाया और कार तक उसे छोडने आया। सडक पर चली जा रही थी दोनों कारे·· आगे पुलिस की कार और पीछे···।

× × ×

शाम को पाँच बजे जब थकान के नशे मे लडखडाता हुआ विनय घर आया और कोठरी मे कदम रखा तो चौक पडा उसके पाँव आगे न बढ़ सके।

टूटी चारपाई की जगह पलग·· उस पर मखमल का गद्दा···चारो तरफ देखा उसने···और वह चीख उठा···"किसने बरबाद किया है मेरा घर·· किसने उजाडने की कोशिश की है मेरे बाग को।"

वह बाहर निकल आया···सन्तू खड़ा था सामने···फटी कमीज पैंट की जगह सूट···हाथ मे बीडी की जगह सिगरेट पैर मे ··।

"सन्तू"·· चीख पडा विनय।

"क्या हुआ भैया?"

"यह सब क्या है···क्या है · यह सूट·· यह जूते···पलंग···मखमल का गद्दा···रेडियो सैट···इत्र की खुशबू।···यह सब क्या है···किसने किया है यह?···

"भैया···बोला सन्तू।

"क्या?···

"जरा सामने देखो।"

विनय पलटा···कोने वाले कमरे की खिडकी मे खडी थी वह···होठों पर कुटिल मुस्कान लिये···

"तो क्या ?"

"हाँ भैया···माया जी की कृपा है सब।"

"सन्तू"···तडप उठा विनय···"तुम इसे कृपा कहते हो।"

"क्यो···इसमे बुराई क्या है ?"

"कुछ नही"···हँसा विनय··"बहुत अच्छा है सन्तू···बहुत अच्छा है···चैन से रहो इस कोठरी मे···सुख से रहो इस महल मे। मैं कोई दूसरी कोठरी ढूंढ लूंगा·· मिल ही जायेगी कही-न-कही।"

"क्या कह रहे हो भैया" सहम गया सन्तू···"तो क्या मैं यहाँ अकेला रहूँगा ?

"हाँ अब तुम अकेले रहोगे।"

"क्यो ?"

"उस सन्तू के साथ मै नही रह सकता जिसने अपने आपको बेच दिया हो।"

"लेकिन भैया यह सामान किसी दूसरे का नही है··माया के पिता ने मुझे नौकरी दी है···एडवान्स पैसा दिया है···और उसमे से मैं लाया हूँ यह सब।"

"तो क्या हुआ···क्या इसे बिक जाना नही कहेगे···इन रईसी को तुम नही जानते, साँप को दूध पिला-पिला कर मारते हैं ··खैर अच्छा है नौकरी लग गई · चैन से जिन्दगी काटो·· मैं चलता हूँ।

और वह चल दिया···कुछ ही दूर बढा था कि एकाएक रुक गया···पलट कर देखा।

सन्तू सब सामान निकाल-निकाल कर बाहर फेंक रहा था···वह वही खडा रह गया···एक-एक करके हर नई चीज बाहर आ गई·और

पुरानी चीजे अन्दर रख दी गयी। सन्तू ने कोट की बाँह से पसीना पोछा और उतारकर फेक दिया कोट को।

"सन्तू"···चीखकर भागा विनय सन्तू की ओर···

'भैया"···और दोनो एक दूसरे से लिपट गये, दोनो की आँखो में आँसू थे स्नेह···खुशी के···।

"चलो अन्दर चले।" बोला विनय।

"अब तो नही जाओगे मुझे छोडकर।" पूछा सन्तू ने और उसकी बगल मे हाथ डालकर अन्दर ले जाते हुए कहा विनय ने।

"नही।"

"तीन पैर की चारपाई पर बैठते हुए विनय ने कहा ··कितनी मुलायम है यह।"

भनभनाते हुये मच्छरो को हाथ से उडाते हुए सन्तू ने कहा ··

कितनी अच्छी खुशबू आ रही है···और दोनो हँस पडे। लेकिन अचानक ही चौक पडे।

"और हँसो···जी भरकर हँसो ·किसी को जलाने मे मजा आता है आपको।" माया दरवाजे पर खडी थी।

उठकर खडा हो गया विनय ·····

"आप।"

"जी · हाँ·· मैं।"

"क्या मै पूछ सकती हूँ · किसी के इतने अरमानो से दी हुई चीज को इतना नफरत से फेक देने का मतलब क्या होता है।"

"देवीजी· चीज सोच समझकर देनी चाहिए·· इन कीमती चीजों की जगह जिनका हमारे जीवन मे कोई स्थान नही···मगर आपने थोडी-सी गालियाँ दी होती या पुलिस मे पकडा दिया होता···तो खुशी से हम आपका शुक्रिया अदा करते।"

"और कितना शर्मिन्दा करेंगे· विनय बाबू··गलती इन्सान से ही होती है।"

"लेकिन आप इन्सान नही है···रईस है···।"

"तो क्या धनी इन्सान नही होते।"

"बिल्कुल नही···मेरे साहित्य मे इन्सान उसी को कहते हैं···जो कि हँसता है फिर भी उसकी आँखो मे आँसू रहते है", जो खाता है तो उसे कल की चिन्ता खाये जाती है और जो सोता है तो उसे गम की वजह से नीद नही आती।"

"हर रईस एक-सा नही होता विनय बाबू अँगुलियाँ बराबर तो नही होती।"

बराबर नही होती, लेकिन उनमे असर बराबर का होता है ·समझी· आप।

"अब आपसे बहस मे जीतना तो मुश्किल है, क्योकि आप ठहरे लेखक।"

"आपसे कहा किसने है बहस करने को· · ·मैं नही चाहता कि आप लोगो की हवा भी आ सके हमारे इस झोपडे मे ·वरना श्वाँस लेना भी कठिन हो जायेगा· · ·मेम साहब।"

"तुम्हारा दिल नही है पत्थर है · लेखक· ·वरना घर आये हुये का इस तरह अपमान न करते। तुम ऐसा ही चाहते हो· · तो जाती हूँ· ·।"

और वह चली गई विनय खामोश हो गया एकदम मौन न जाने क्यो · एकाएक वह दरवाजे तक आया झुका और देखा · बिखरे· पड़े थे · ·

"फूल ·····।"

"दो फूल·····।"

मुट्ठी भर फूल ·····।

× × ×

बेचैनी उसे और उसके जिगर को जला-जलाकर खाक किये जा· रही थी· · ·अजीब-सी तड़पन थी · ·अजीब-सा दर्द था परेशान था वह ।··

"कुछ भी हो तुझे रिक्शा नही चलाने दूँगा···।"

"उफ।"·· और उठकर बाहर चला आया सन्तू···यह रुपया कब तक चलेगा···भैया का अब कोई भरोसा नही···भेजे न भेजे··· फिर क्या होगा···रिक्शा नही चलायेंगे तो क्या भूखो मरेंगे।

परेशान था सन्तू···उसके कदम अपने आप बढते जा रहे थे··· वह बेहोश था ख्यालो मे···किस ओर जा रहा है ··उसे खबर नही थी और एकाएक चौंककर जब वह रुक गया तो सामने कॉफी हाउस था। उसके पाँव अनजाने ही अन्दर को उठ चले···और वह एक ओर जाकर कुर्सी पर बैठ गया···बैरा आया···

"कॉफी।"···

वह बेखबर था डूबा हुआ विचारो मे···कॉफी आयी· ·प्याला होठो से लगा और खाली हो गया···बिल आया और जब पैसो के लिये जेब मे हाथ डाला तब होश आया कि पैसा तो लाना ही भूल गया।

काँप-सा उठा सन्तू···न जाने कैसा व्यवहार करें यह होटल वाले। वह उठकर मैनेजर के पास गया।

"Excuse me (क्षमा कीजियेगा) मैं पैसे लाना भूल गया ·आप मेरे साथ किसी को भेज दीजियेगा।"

"बाबूजी···तुम जैसे बहुत से आते है···और सडक की भीड मे गायब हो जाते हैं···आप कोई चीज रख जाइये।

"लेकिन मेरे पास तो कोई चीज नही है।"

"कमीज उतार कर रख जाइये।"

"कमीज···और चेहरे का रग उड-सा गया सन्तू का।" जल्दी कीजिये···सोच क्या रहे हैं।···यह लीजिये···इनके पैसे काट लीजिये।···

और सन्तू ने देखा उस माडर्न-फैशन की तस्वीर को जो हाथ में पर्स लिये खडी थी· ·उसके पीछे-पीछे वह बाहर आया।

अगर आपको कोई तकलीफ न हो तो···पास ही है मेरा घर···पैसे ले लीजिये चलकर।

"ओह।···वह रुकी फिर चलते हुये बोली···चलिये··· ।"

सन्तू आगे बढा···वैसे ही वह फिर बोल उठी उधर···कार उस तरफ खडी है मेरी।

"कार"।···और सन्तू खामोशी से उधर बढ़ गया।

घर पहुँचकर सन्तू ने उसे अन्दर ले जाकर बिठाया···और जब वह पैसे देने लगा तो उसने मना कर दिया।

"उसमे क्या है कभी आप पिला दीजियेगा···और खामोश हो गया सन्तू।"

"आपने अपना और अपनी बहन का नाम तो बताया ही नही।"

मुझे वैसे तो लोग सन्तू कहते है···लेकिन मेरा वास्तविक नाम है सुनिल·· और इसका नाम है चन्दा।

"ओह" अच्छा आप करते क्या हैं?

"अभी फिलहाल तो कुछ नही करता हूँ।"

"यानी नौकरी नही मिली··कहाँ तक पढे हैं आप।"

"मैं···वह अटका···मैं ग्रेजुएट हूँ···।"

और फिर बेकार···आप ऐसा कीजिये कल मेरे यहाँ आइये··· मैं आपको नौकरी दिला दूंगी आपका एहसान कभी न भूलेंगे हम लोग।

"सन्तू को खुशी के साथ कुछ-कुछ आश्चर्य भी हो रहा था··· अजीब है यह औरत·· न जान···न पहचान···होटल के पैसे दे दिये और अब नौकरी दिला रही है।"

और फिर एकाएक वह उठकर खडी हो गई···

"तो अब मैं चलती हूँ कल जरूर आइयेगा···अच्छा चन्दा··· फिर कभी मिलूंगी तुमसे···अच्छी लडकी हो तुम···।"

"और हँसकर खड़ी हो गई।"

वह बाहर आई और उसके पीछे-पीछे आया सन्तू ।

"कार मे बैठते हुये वह बोली…बडे गन्दे मकान मे रहते हैं आप…खैर सब ठीक हो जायगा…जरा तबियत से काम किया अगर आपने ।

"सन्तू खामोश खडा रहा…उसने कार स्टार्ट की ।"

अच्छा तो मैं चलती हूँ…और हाँ…पर्स खोलकर उसने एक कार्ड निकाला । यह है मेरा पता…आप कल आयेंगे कैसे ?

और कार धूल उडाती हुई चली गई सन्तू ने कार्ड देखा लिखा था।

"सन्ध्या चौधरी !"

कल्पना निवास सिविल लाइंस

× × ×

और दूसरे दिन सन्तू सन्ध्या के साथ पहुँचा स्वरूप नगर के एक दफ्तर में । बडी इज्जत थी उस लडकी की…चपरासी ने देखते ही साहब को खबर दी और कुछ ही देर मे आकर कहा—

"चलिये अन्दर ।"

शीशे की मेज थी…घूमने वाली कुर्सी थी । जिस पर बैठा हुआ था मोटा-सा अधेड पुरुष…जिसके चेहरे पर एकाकिपन आँखो में झूलता था ।

"मिस्टर सेठ…आज फिर थोडी-सी आपको तकलीफ देने आई हूँ ।…वह बोली ।"

"आपके लिये…और तकलीफ…फरमाइये ।" भारी-सी आवाज थी । मेरे मित्र हैं ये…ग्रेजुएट हैं लेकिन…

"बेकार हैं ।…वह हँस पडा…खैर बडे मौके से आयी हैं आप… आज ही एक जगह खाली हुई है ।

और उसने घंटी बजाकर चपरासी से मैनेजर को बुलाने के लिये कहा…मैनेजर अपना चश्मा साफ करते हुये चला आया अन्दर ।

"मिस्टर बोस अपने यहाँ जो सीट खाली हुई है ·उसके लिये इन्हें रख लीजिये·· और काम समझा दीजिये।"

"बहुत अच्छा···आईये।"

और सन्तू चला गया उसके साथ ।

"और सुनाइये सन्ध्या जी ·क्या कोई नया अभी नही। वह हँसी···दाना डाल दिया···उम्मीद है चार-पाँच रोज मे ठीक हो जायगा। कोई बात नही ·इन्तजार करूँगा ··लेकिन क्या इसकी ·

"बहन है।" और हँस पडी सन्ध्या···भोली लडकी है बेचारी। भोली ·और खिलखिला कर हँस पडा सेठ।

"अच्छा मैं चलती हूँ।"

"क्या वही जा रही हो।"

"हूँ·· "

और वह चली गई।

चन्दा कमरा साफ कर रही थी···एकाएक सन्ध्या को सामने देखकर चौंक-सी पडी।

"आप आइये बैठिये।"

बैठूँगी बाद मे। ·वह मुस्कराई पहले मिठाई खिला दीजिये···

'क्यो।" ·

"वह···आपके भाई की नौकरी लगे और हमे मिठाई भी खाने को न मिले ·

ऐसी बात नही ···बोली चन्दा····आप बैठिये···मैं मिठाई मँगवाती हूँ।

और वह ट्रंक मे से एक रुपया निकालकर बाहर भाग गई। ·· रज्जो मिठाई देकर चला गया···तश्तरी मे मिठाई सामने रखते हुये बोली वह।

"कितनी तनख्वाह मिलेगी भैया को।"

"यही डेढ सौ के करीब।" तुम भी तो खाओ और दोनो मिठाई पर टूट पडी सन्ध्या तेजी से और चन्दा धीरे-धीरे खाने लगी।

अच्छा एक बात और···शाम को आपके भाई आयें तो उनसे कह दीजियेगा···कि आज आप दोनों का खाना मेरे ही घर पर होगा

"कह दूंगी।"

कह नही दूंगी ··आना पडेगा तुम्हे भी "अच्छा 'और मुस्करा उठी चन्दा।"

पानी पीकर उठ पडी सन्ध्या···अच्छा मैं चलती हूँ।

और वह चली गई···चन्दा खो गई ख्यालो मे डेढ सौ मासिक ठीक है खर्चा चल जायेगा।

सोचते-सोचते सो गई दरवाजा खटकने की आवाज से उसकी आँख खुली···सन्तू आ गया था "नौकरी लग गई भैया···।"

"हाँ···एडवास पैसे भी दे दिये हैं।"

आज शाम को खाने पर बुलाया है।

खाने पर बुलाया है।···चौका सन्तू समझ मे नही आता इतना सब क्यो कर रही हैं देवीजी।

···चन्दा मुस्कराई···मुझे तो ऐसा लगता है भैया तुम पर रीझ गई है।

"धूत···शैतान कही की ··कहाँ वह कार और बँगले वाली ·· और कहाँ मैं रिक्शे वाला···।

वह···तो इससे क्या हुआ भैया···।

अच्छा बस ज्यादा बातें मत बना···जा तैयार हो जा मैं भी नहा लूं जरा।

"और जब यह दोनो सन्ध्या के मकान पर पहुँचे तो···वह किसी से टेलीफोन कर रही थी···देखते ही टेलीफोन बन्द कर दिया उसने।

आइये···मैं इन्तजार ही कर रही थी आप लोगो का···।

और मुस्कराकर वह दोनो सजी हुई कुर्सियो पर बैठ गये···खाना

आया···।

मुझे आलू बहुत अच्छा लगता है···वैसे बैंगन भी कभी-कभी खा लेती हूँ।

"और चन्दा तुम ?"

मुझे तो सब्जी से अधिक दाल ज्यादा अच्छी लगती है।

"और तीनो हँस पडे···।"

तुम सिलाई जानती हो चन्दा···बोली सन्ध्या।

"जी हाँ···।"

"तो फिर· किसी रोज मेरे दो एक कपड़े सी देना।"

"जब आप चाहे···।"

"ठीक है· किसी दिन गाडी भेज दूँगी·· आ जाना अच्छा।

"आपको तो कोई एतराज नही होगा मिस्टर सुनिल "जी नही एतराज सिर्फ इतना है कि पेट बहुत ज्यादा भर गया है।"

"और फिर सब हँस पडे।"

× × ×

"कोई ऐसा प्लाट लिखकर दीजिये जो कि एक बार तहलका मचा दे···अभी तक जो कि किसी ने सोचा तक न हो···बनाना तो बाद की बात है।"

आपने मेरी लिखी हुई किताबें तो पढ़ी है न···उसमे से क्या एक भी पसन्द नही आई।

"नही ऐसी बात तो नही है।···विनोद···टूटे तार तो मुझे काफी अच्छी लगी·· लेकिन ऐसा है कि अगर आप उसे ही दें तो काफी अदल-बदल करनी पड़ेगी।

"तो उसमे क्या हुआ आप मुझे आइडिया दे दीजिये···मैं वैसे ही बदल दूँगा। बोला विनय।

आइडिया क्या···मेरा मतलब था···आज कल पब्लिक क्या

चाहती है…रोमान्स…प्यार मोहब्बत…नाच गाने…उसके अलावा उसमे आपने पूंजीवाद के खिलाफ लिखा है उसे बदलना पड़ेगा क्यो कि सैन्सर पास नही करेगा।

"अजीब चीज़ है यह सैन्सर भी…हंसा विनय…प्यार मोहब्बत नाच गाने…जिससे पब्लिक पर बुरा असर पडता है उसे तो आँख बन्द करके पास कर दिया जाता है…और दिन दहाडे गरीबो की अस्मत और इज्जत पर यह रईस जो डाका डालते है…खून चूसते हैं इस सच्चाई को दुनिया के सामने रखने से वह काट देता है।

"विनय बाबू…आज कल तो उल्टी चक्की चलती है…सीधी चलाओ तो आटे की जगह दलिया पिस जाता है।"

"खैर मैं कोशिश करता हूँ इसके बदलने की… अच्छा एक बात और है विनोदजी…।"

"हाँ…हाँ…कहिये।"

"घर पैसे भेजने थे और मेरे पास भी खत्म हो गये हैं।"

"पाँच सौ और दे दीजिये।"

"मैं चैक काटे देता हूँ आप कैश करा लीजियेगा और विनोद ने चैक काटकर विनय को दे दिया।…तो मैं चलूँ।…

"अच्छा…और हाँ…तुम्हें आलका ने बुलाया है बैंक जाते समय मिल लेना उससे।

"मिल लूंगा।"

और वह चला गया।…विनोद ने टेलीफोन उठाया। "हैलो… कौन अलका…मैं विनोद बोल रहा हूँ…पाँच सौ का चैक दे दिया है …ज़रा सभाल लेना…कह देना तुमने एक हजार मुझसे भी लिया है …हाँ…हाँ…ओ…के…ठीक हैं और टेलीफोन रख कर वह मुस्करा उठी।

बाल सँवार रही थी अलका जिस समय दरवाजे पर थपकी दी…

ग्रौर कौन हो सकता है वह उठी चुनरी उठा कर एक ग्रोर फेंक दी।

ग्रौर खोल दिया दरवाजा।

"ग्रापने याद किया था।"

"हाँ ग्रन्दर तो ग्राइये · क्या बाहर से ही बात करना है।"

ग्रौर वह खामोशी से ग्रन्दर चला ग्राया। उस रात की घटना उस के ख्यालो में घूम रही थी···क्षणिक जोश मे ग्राकर वह क्या कर बैठा था···।

"क्या सोच रहे है।"

"कुछ भी तो नही ··हाँ तो ग्रापने किसलिये बुलाया था।"

"बहुत जल्दी मे है क्या ?"

उसकी ग्रावाज कुछ बदल सी गई।

"या मेरे पास बैठना ग्रच्छा नही लगता। ऐसी तो कोई बात नही।"

तो फिर यह एकाएक बेरुखी कैसी···ग्रौर वह धीरे-धीरे उसकी ग्रोर बढी। विनय सटपटाया कही ग्राज फिर वह रात की तरह होश-हवाश न खो बैठे लेकिन नही···वह ऐसा॰नही होने देगा।

मैं इसलिये पूछ रहा था·· कि जब तक तुम बता नही दोगी मेरी परेशानी बढती ही जायेगी।

"मैं बता दूं ··विनय लेकिन जरा झिझक-सी लगती है ग्रौर कहते समय ग्रलका से होठो पर एक कुटिल मुस्कान बन गई।

"तुम बुरा तो नही मानोगे ?"

"ऊं हूँ ।"

"मुझे दो हजार रुपये की एकाएक जरूरत ग्रा पडी है।"

"दो हजार।" चौका विनय।

"हाँ लेकिन मैंने एक हजार तो विनोद बाबू से ले लिये है··· बस एक हजार की जरूरत ग्रौर है। लेकिन हिचका विनय इस

समय तो मेरे पास सिर्फ पाँच सौ रुपये का चैक है।"

"कोई बात नही···आप ऐसा कीजिये···मुझे कैश करा के ला दीजिये। या रहने दीजिये मैं खुद कैश करा लूँगी।"

और सहमते हाथो से विनय ने चैक अलका के हवाले कर दिया। मुस्कराते होठो से बेग मे रख लिया चैक।

"अच्छा तो···मैं चलूँ।"

"इतनी जल्दी कुछ देर तो करीब बैठ लो तुम आ जाते हो तो सच दिल को सुकून-सा मिल जाता है और अलका ने उसके गले मे बाहे डाल दी।"

"रहने दो अलका" अब मैं चलता हूँ।

और वह उठकर खडा हो गया।

"तुम अपना चैक वापस ले लो।"

"क्यो?"

"मैं नही चाहती पाँच सौ रुपये की कीमत पर मैं तुम्हारा प्यार खो बैठूं तुमसे रुपये लिये है इसलिये तो आज बैठ तक नही रहे हो।"

"नही अलका ऐसी बात नही और वह बैठ गया।"

अलका का तीर निशाने पर बैठा था।

"विनय···और कन्धे पर उसने सर रख दिया तुम मेरे पास आ जाते हो सच जिन्दगी मिल जाती है मुझे।"

पर वह खामोश रहा आज उसे एकाएक कुछ परेशानी-सी थी·· याद आ रही थी उसे वे मासूम निगाहें जो रात दिन अपनी खिडकी से उसकी खिड़की पर लगी रहती थी।

"जो जी आये कह लो उससे भी दिल न भरे तो मुझे मार लो लेकिन मुझे यहाँ खडा रहने दो।"

भीगे से शब्द माया के उसके कानो मे गूंज रहे थे वह बेचैन था।

"फिर तुम कुछ सोचने लगे विनय। लेकिन वह खामोश रहा जैसे उसने कुछ सुना ही नही।"

"विनय क्या हो गया है तुम्हे ?· वह चीख सी पड़ी और एक झटके के साथ उठ खडा हुआ विनय।"

"क्या हुआ ?· ·चौक उठी अलका।"

मैं जा रहा हूँ और इससे पहले की अलका कुछ कहती वह तेजी से बाहर निकल गया।

"उसके कदम बढते जा रहे थे···ख्यालो के साथ कहाँ जा रहा है उसे कुछ ख्याल न था···।"

आज वह परेशान था आज उसे एकाएक माया का ख्याल आया था मासूम माया का जिसने खामोश मोहब्बत की थी जो उसकी खुशी के लिये सब कुछ सहकर खामोश रह गई थी ।

और चौक पडा विनय कार का हौर्न सुनकर बीच सडक पर चल रहा था वह·· पागल कही का।

"सडक के फुटपाथ पर आ गया वह···दुकानें थी···रेस्ट्रा थे···और इगलिश बार।"

"वह रुका···कुछ सोचा और अनजाने ही उसके कदम अन्दर की ओर उठ गये।"

केबिन मे पड़ी हुई कुर्सी शायद उसी का इन्तजार कर रही थी वह बैठ गया।

"क्या लाऊँ सरकार ? उसने सामने देखा बैरा खडा था।"

"व्हिसकी।"

"और छलकती हुई बोतल सामने आ गई" कुछ तो सोचो विनय··· तीन दिल एक साथ टूट जायेंगे।

और गट···गट करके एक पैंग चढा गया।···आज उसे माया याद आ रही थी और वह उसे भूलाना चाहता था।

एक दो तीन ''चार'''पीता रहा जब तक होश ने उसका साथ न छोड दिया।

गिलास हाथ से छूट गया।' 'और वह गिर-सा पडा मेज पर।

होटल वालो ने जेब मे हाथ डाले'''जो कुछ था निकाल लिया''' और निकलवा दिया सडक पर।

उसने उठने की कोशिश की उठा'''चला और फिर गिर पडा।

सडक के एक किनारे वह पडा था कुत्ते ने आकर मुँह चाट लिया'''लोग हँस पडे।'

"शराबी है।"

"अमाँ शराबी क्या'''कुत्ता कहो।"

"कुत्ते से भी बदतर मियाँ।"

और वह वही लुढ़क गया' 'सडक के एक किनारे'''मुँह से बडबड़ाया।

"माया"'''

× × ×

"विनय।'''चौंक कर उठ बैठी माया।'''चारो तरफ अँधेरा था बादलो ने चाद को दामन मे लपेट लिया था वह उठी खिडकी में से झाँक कर देखा।

सडक सूनी पडी थी और खामोश थी सामने वाली खिडकी''' जिस पर कभी वह आँखें गड़ाये रहती थी किसी की सूरत भर देख लेने के लिए।

"तुम पर जरूर कोई मुसीबत आई है विनय।"

"वह तडप-सी उठी'''उसने स्वप्न देखा था'''बहुत ही डरावना स्वप्न। वह तेजी से नीचे को चल दी। कोठरी का दरवाजा बन्द था उसने थपकी दी।"

"कौन ।" कुनमुनाया सन्तू ।

"दरवाजा खोलिए ।"

और सन्तू ने उठकर दरवाजा खोल दिया· ·अरे आप···और इतनी रात को ।

लेकिन वह कुछ न बोली···खामोशी से अन्दर घुस आई ।

"बात क्या है माया जी आप इतनी परेशान क्यो है ।"

परेशान मैं नही वह है उन पर जरूर कोई मुसीबत आई है मेरे स्वप्न कभी झूठे नही होते ।

"अरे ख्वाबो का क्या भरोसा है माया जी आप भी यूँ ही परेशान हो रही है ।"

"नही सन्तू ।" मेरा दिल कह रहा है उन्हें कुछ परेशानी है··· तुम एक काम करो न· "

"क्या ?" ··सन्तू बोला···

"सवेरे की गाड़ी से ही मेरे साथ चलो हम बम्बई चलेंगे ।"

"लेकिन चन्दा का क्या होगा ?"

"तुम चन्दा की फिक्र न करो वह मेरे घर रह जायगी ।"

"तो फिर ऐसा कीजिये अपनी कार लेकर जरा मेरे साथ चलिये मैं जरा कह दूँ कि मैं कुछ दिनो नौकरी पर न आ सकूँगा ।"

और रात के अंधेरे को चीरती हुई चलती चली गई कार ।

सन्ध्या सो रही थी तीसरे पहर की गहरी नीद मे · और एकाएक बज उठी बैल ।

"इतनी रात को कौन आया है ।"

वह उठी दरवाजा खोला· ·सन्तू खडा था । "इस वक्त क्यों " क्या बात है ।···चौकी सन्ध्या ।

"आपको एक तकलीफ देना चाहता हूँ । बहुत ही जरूरी काम से बम्बई जाना पड रहा है···तो आप क्या मिस्टर सेठ से छुट्टी के लिए कह देगी "कब जा रहे हैं आप ।"

"सवेरे वाली गाडी से "

"मैं कह दूंगी···आप जाइये और कुटिल मुस्कान खेल गई उसके अधरो पर।"

"हाँ जरा एक तकलीफ आप भी कीजियेगा· ·" बोलिये · रुक गया सन्तू।"

"चन्दा से जरा कह दीजियेगा कल आकर मेरे कुछ कपडे सी देगी।"

"बहुत अच्छा···मैं चलता हूँ।"

और उसने दरवाजा बन्द कर लिया। टेलीफोन उठाया···

"हैलो ·कौन सेठ साहब बोल रहे है ·नमस्ते···सुनिये कल पाँच सौ भेज दीजियेगा हाँ हाँ कल दोपहर को आ जायेगा आप का काम हो जायेगा हाँ बिल्कुल तय हो गया है· ·ओ ·के··· गुडनाइट ।"

कार रुकी और सन्तू अन्दर चला गया·· माया ने कार हवेली के अन्दर घुमा दी।

"माया।" वह चौंकी· ·तो पिता जी जग रहे हैं।"

"जी।" ··

"कहाँ गई थी रात को।"···

"मैं·· "

"हाँ· हाँ···कहो···क्या बात है।"

'पिता जी, मैं बम्बई जा रही हूँ···सवेरे की गाडी से।"

"क्यो ·और क्या अकेली।"

"नही साथ मे सन्तू को लिए जा रही हूँ।"

'लेकिन किसलिए जा रही है ?"

"वह···मेरा मतलब है उन पर···"

"ओह समझा···विनय से मिलने खैर कोई बात नही लेकिन बेटी जरा होशियारी से जाना बम्बई शहर है ।"

आप बेफिक्र रहिए पिताजी···और हाँ जब तक मैं न आऊँ चन्दा अपने यहाँ रहेगी, जरा उसका ख्याल रखियेगा।

"अच्छा।"

और वह कमरे में जाकर अटेची केस ठीक करने लगी···दिल मे लाखो तूफान लिए सूर्य की पहली किरण फूट निकली। सन्तू आ गया।

"ट्रेन आठ बजकर दस मिनट पर जाती है मैंने नीचे से टेलीफून करके पूछा था।"

"तब तो काफी समय पड़ा है लेकिन फिर भी काम बहुत है···तुम चन्दा को भेज दो···मैं उसे समझा दूंगी।"

"और सन्तू चला गया। कुछ ही देर मे चन्दा आ गई मुझे बुलाया था आपने।"

"हाँ चन्दा मैं तो जा रही हूँ, तब तक तू मेरा कमरा सँभालो यही रहो और किसी भी बात की जरूरत पडे तो पिताजी से कह देना·· मैंने उनसे कह दिया है।"

"आप मेरी चिन्ता मत कीजिये।" हँसी चन्दा। "नही फिर भी·· "

"तैयारी हो गई।"

"हाँ पिता जी, बस थोड़ी देर मे चले जायेंगे। "जितना रुपया चाहिए तुम्हे सेफ मे से निकाल लेना···यह लो चाभी।"

और वे चले गये। कुछ ही देर मे सनसनाती हुई चली गई कार··· स्टेशन की ओर···उन्हें छोड़ने के लिए।

× × ×

खिडकी मे खडी हुई चन्दा आज शाम को बम्बई पहुँच जायेंगे वे लोग···भैया देखकर चौंक पडेंगे· 'सोचेंगे एकाएक कैसे आ गये काश लौटते समय वे भी साथ ही लौट आयें।

एकाएक वह चौंक पडी। सन्ध्या की कार उसकी कोठरी के सामने आकर रुकी थी। वह भागकर नीचे पहुँची।

"कहिए।"

"मेमसाहब ने बुलाया है आपको।" कहकर ड्राईवर मुस्कराया।

चन्दा पहले कुछ सोच मे पड गई···फिर बोली अच्छा रुकिये जरा। और वह वापस ऊपर चली गई। घर में कहकर वह जल्दी ही नीचे आ गई और उड चली कार उसे लेकर एक मासूम को लेकर ··।

आ गई चन्दा···आओ पहले चाय पीलें फिर तुम कपड़े सिलवाना। और दोनो दूसरे कमरे की ओर बढी। चन्दा के कदम ठिठके··· कुर्सी पर एक मोटा-सा अधेड पुरुष बैठा हुआ था।

"अरे रुक क्यो गई···इनसे परदा किस बात का यह तुम्हारे भाई के मालिक है मिस्टर सेठ और नमस्ते करके धीरे-धीरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।"

चाय पीते समय मिस्टर सेठ बराबर सन्ध्या से बातें करते रहे··· चन्दा ने समझा शरीफ आदमी हैं···लेकिन उस नादान को क्या मालूम कि उन सफेद कपडो के पीछे कितनी कालिख लगी हुई थी···उस चेहरे पर पाप की कितनी झुर्रियाँ पडी हुई थी। शराफत की आड मे वह क्या-क्या नही कर चुका था।

"चन्दा दूसरे कमरे मे आकर कपडे सिलने लगी। आधा घण्टा हो गया था उसे कपडे सिलते-सिलते एकाएक दरवाजा बन्द होने की आवाज से वह चौंक पडीं।"

"चेहरे पर कुटिल मुस्कान लिये खड़े थे मिस्टर सेठ क्रूरता नाच रही थी।"

"सहम कर खडी हो गई चन्दा। वह काँप रही थी तो क्या इसीलिये यह नाटक खेला गया था···भैया की नौकरी इतनी सहायता वह तडप उठी।

"क्या चाहते हैं आप।"

"तुम्हारा प्यार।" वह आगे बढ़े···कुछ देर तुम्हे आलिगन मे बाँधकर मीठी-मीठी बातें करना चाहता हूँ।

"शर्म नही आती तुम्हे···गुण्डे नीच कही के···वह बराबर पीछे हटती जा रही थी।"

"इतना गुस्सा···लेकिन क्यों···अरे दो घडी यही सही···और मिस्टर सेठ ने आगे बढकर अपने जालिम हाथो से पकड लिया उसे···"

"छोड दो मुझे ·छोड दो नीच···कुत्ते मैं कहती हूँ छोड दे "

"लेकिन वह न माना · न माना और एक बारगी काँप-सी उठी चन्दा उस चुम्बन से। वह तडपकर हट गई लेकिन सेठ पर भूत सवार था जानवर की तरह वह फिर झपटा उसकी तरफ भूखे शेर की तरह दबा लिया चन्दा को।"

अब बचकर कहाँ जाओगी···मेरी जान और बन्धन कसता चला गया। लेकिन एक शरीफ नारी अगर वह वास्तव मे कुलीन नारी है अगर वह चरित्रवान् है यदि उसमे पवित्र रहने की चाह है तो वह एक बार अपनी अस्मत बचाने के लिये जान पर भी खेल जायगी।

"चन्दा ने आखिरी वार किया। अच्छा बाबा पलँग पर तो लेट जाने दो।"

अब की न कुछ समझदारी की बात और हँसते हुये सेठ ने उसे छोड दिया धीरे-धीरे बढते हुये एकाएक वह तेजी से खिडकी पर पहुँच गई।

"इतनी समय दरवाजा खोलकर बाहर चले जाइये···वरना मैं नीचे कूद पडूँगी।"

"ओह कूद पडो ·बहुत से देखे हैं ऐसे धमकी देने वाले और वह नर-पिशाच आगे बढा।"

उसने नीचे की ओर देखा · सहमी···काँपी ··और कूद पडी नीचे·· एक चीख के साथ। भीड लग गई सडक पर···कौन है···कैसे गिर गई।

और इधर पसीना आ गया सेठ के चेहरे पर।

"सन्ध्या···गजब हो गया।"

"क्यो क्या हुआ।"

"वह पागल लडकी नीचे कूद पडी ··तमाम भीड इकट्ठी हो गई है।"

"अब"···घबरा गई सन्ध्या।

"अभी तो तुम उसे बहन बता दो · बाद मे जब होश मे आ जायेगी तब दौलत से मुँह बन्द करने की कोशिश करेगे।"

और सन्ध्या को कार मे उसकी बहन· ·जिसकी अस्मत की कीमत वह कुछ ही देर पहले ले चुकी थी चली जा रही थी अस्पताल की ओर।

"और होश मे आने पर भी खामोश रही उसके होठ न खुल सके वह मजबूर थी·· इसलिये नही कि उसे दौलत का लालच था ·· उसे तो वह ठुकरा चुकी थी उसे डर था अपनी इज्जत का··· बदनामी का और इसलिये दिल पर पत्थर रखकर वह खामोश रह गई।"

"डाक्टर ने पता लगाने पर माया के घर टेलीफोन कर दिया था फौरन ही माया के पिता आ गये। · "

"तू गिरी कैसे थी बेटी।"

खिडकी मे से झाँक रही थी · सँभाल न पाई अपने आप को··· और · बस ··गिर पडी। मुस्करा दी चन्दा।

बात दब गई इज्जत के डर से···और बला टली मिस्टर सेठ की दौलत भी बच गई और पोल भी न खुली।

"लेकिन एक आग-सी लगी उसके दिल मे हमेशा-हमेशा के लिये ·· अगर इस लड़की को काबू मे न लिया तो मेरा नाम भी सेठ नही ··।"

"और हँस पड़ी सन्ध्या···अब ख्याल छोड दो इस लडकी का और बहुत-सी मिलेगी।"

नही सन्ध्या जब तक यह लडकी नही मिलेगी···मुझे चैन नही मिलेगा।

एक बार तो मुसीबत बच गई मिस्टर सेठ···और फिर से उसी आग मे कूदने से क्या फायदा जिसमे जल जाने का डर हो।

"खैर देखा जायगा।"

और मिस्टर सेठ ने जलती हुई सिगरेट की ओर एक बार देखकर कुचल दिया उसे बाटा के जूते से।

हँस पडी सन्ध्या।

× × ×

"यह बम्बई है माया जी।" बोला सन्तू···इतना बड़ा शहर ··कहाँ ढूढ़ेंगे भैया को···उनका तो पता भी नही मालूम।

लेकिन माया ने कोई उत्तर नही दिया · टैक्सी चली जा रही थी···एकाएक मुस्करा उठी माया···उसके होठो पर सफलता की एक झलक-सी दिखाई दी।

"टैक्सी वाले किसी भी स्ट्डियो चलो वहाँ से पता लग जायेगा।

और कुछ ही देर में घर्र-र्रर्र करती हुई घुस गई टैक्सी मोहन स्टूडियोज के बडे से फाटक मे। पूछ-ताछ के दफ्तर में पहुँची माया।

"माफ कीजियेगा · क्या आप बता सकते है मिस्टर विनोद भास्कर का आफिस कहाँ है।"

"आप फेमस स्टूयोज महालक्ष्मी जाइये···वहाँ पता लग जायेगा। ··टेलीफोन आपरेटर ने जवाब दिया···और मुस्कराते हुये देखा माया को···वह पागल यही समझा कि इस लडकी पर भी शायद फिल्म ऐक्ट्रेस बनने का भूत सवार है लेकिन वह क्या जाने कि किस दर्द मे डूबकर मासूम लडकी बम्बई की सडको पर चक्कर काट रही है।"

टैक्सी चल दी फेमस स्टूडियोज़ की ओर···सन्तू के चेहरे पर भी आशा की लाली छा गई थी और जब फेमस बिल्डिंग्स महालक्ष्मी की

विशाल बिल्डिंग के सामने जाकर टैक्सी रुकी तो एक बार काँप-सी गई माया···इतनी बडी बिल्डिंग मे कहाँ पता लगेगा···लेकिन फिर भी आशा की एक ज्योति ले सन्तू को साथ लेकर वह गई फेमस स्टूडियोज के अन्दर।

टेलीफोन आपरेटर ने कमरे का नम्बर बता दिया···और एक खुशी · अमिट खुशी···जिसका वारा-न्यारा न था हृदय मे लेकर दोनो ऊपर पहुँचे दूसरी मन्जिल पर।

"आप किससे मिलना चाहती है। पूछा चपरासी ने।

"विनोदजी से।"

"लेकिन वे अभी व्यस्त हैं ··आप फिर कभी आइयेगा।"

"लेकिन आप उनसे कहिये कि हम लोग कानपुर से आये हैं···और मिस्टर विनय के घर से आये हैं।"

"विनय बाबू के घर से।"

"हाँ···।"

"और चमरासी अन्दर चला गया। कुछ ही देर मे माया और सन्तू विनोद के सामने बैठे हुये थे।

विनोद ने हँसकर उनका स्वागत किया। "कहिये कब आये आप लोग।"

"आज सवेरे। बोला सन्तू।"

"पहले तो कोई खबर नही दी थी आपने···फिर एकाएक कैसे···।"

यू ही ज़रा और भी काम था यहाँ···सोचा विनय बाबू से भी मिलते चले। · बीच ही मे बोल पड़ी माया।

और चाय आ गई···कहाँ हैं विनय बाबू···? प्याला उठाते हुये माया ने पूछा।

अभी कुछ देर ही पहले गये हैं। शायद अपने कमरे पर ही मिलेंगे अब तो।

"कमरा कहाँ है उनका।" बोला सन्तू।

"जी हाँ ''उनका पता लिख लीजिये'''।"

रूम न० १४'''दादर होटल'''दादर और एक कागज पर लिखकर अपनी जेब मे रख लिया ।

तो फिर इजाजत दीजिए 'और माया उठकर खडी हो गई ।

'' अच्छा ' और तो कुछ सेवा न कर सका आप लोगो की'''फिर आइयेगा ।

जी हाँ'''कोशिश करेंगे और सन्तू ने दोनो हाथ जोड दिये ।

टैक्सी चल दी 'सन्तू ने एक बार आश्चर्य से देखा फेमस बिल्डिंग की ओर ।

"कितनी बडी बिल्डिंग है ।"

और माया केवल मुस्कराकर रह गई । उसके दिमाग मे इस समय ख्यालो की तस्वीर छाई हुई थी । काफी खुश मालम पडते हैं यहाँ'''क्यो न हो ' सब कुछ तो है 'पैसा'''ऐश'' आराम ''और क्या चाहिये । पत्थर दिल को प्यार की चाह क्योकर होने लगी'''और यहाँ न जाने कितनी होगी'' मुझसे लाख दर्जे अच्छी बहुतो से प्यार की प्यास बुझ सकती है ।

यही है दादर होटल । बोला टैक्सी ड्राइवर और चौककर होश मे आई माया ।

होटल मे कदम रखते ही उसकी धडकने बढ़ गई है अब उनका सामना होगा' ' वह चौक पडेंगे एकाएक देखकर' ' 'क्या सोचेगे' ' 'पता नही खुश हो या नही ' 'खैर वह तो देख लेगी उन्हे ' 'उसे तो खुशी होगी' ' 'उन्हें हो या न हो ।

ग्यारह' ' 'बारह ' 'तेरह और ' 'लेकिन चौदह मे ताला पडा हुआ था । ख्याल दूर गये' ' 'अरमानो पर भी ताला-सा पड गया ।

"कही गये हुये है शायद ।"

''पता नही कब तक आये' बोला सन्तू और माया खामोशी से नीचे उतरने लगी ।

"मुझे डबल रूम चाहिए ।"

"मिल जायेगा बोला मैनेजर···कितने दिन रहना है आपको ।"

"कुछ ठीक पता नही है, और माया ने एक सौ का नोट पकडा दिया मैनेजर को···हम अपना सामान मँगवा लें ।

"सन्तू टैक्सी मे से सामान लेने चला गया ।"

और बॉय ने माया को कमरा दिखा दिया···।

ठीक चौदह नम्बर के सामने था·· सोलह नम्बर। "इसे साफ करा दो ।" बोली माया और बॉय के हाथ मे एक पाँच का नोट रख दिया उछलता हुआ चला गया बॉय ।

और कुछ ही देर मे झाड़ की चन्द सीको और कमरे की फर्श मे जग छिड गई । काफी देर तक मुठभेड होती रही · जख्म लगे · लहू निकल आया और चमक उठा कमरा ।

"सन्तू सामान लेकर आ गया था ।"

अभी मैंने मैनेजर से पूछा था भैया काफी देर से लौटते है ।

लौट कर आयेगे न···बस · यही · चाहिये ··हम भी कौन से दूर हैं । "बोली माया" और क्या "घर हमने ले लिया है तेरे दर के सामने ।" और जोर से हँस पड़ा सन्तू · माया भी मुस्करा पडी ।

नीचे से खाना आ गया था···दोनो खाने बैठ गये ··जरा सी भी आहट हुई नही कि माया दरवाजे की ओर भागती थी ।

"खाना तो खा लीजिए चैन से···रात तक उनका इन्तजार करना बेकार है ।"

"और माया खामोशी से खाना खाने लगी ।"

"भई···माया···जी·· मेरा ख्याल है शाम को सिनेमा देखना चाहिए···समय भी आसानी से बीत जायेगा ।"

"जैसी मरजी ।"

और माया हाथ धोने के लिए चली गई ।

× × ×

"यह तुमने क्या किया लेखक ।"

"क्यो क्या हुआ ?···चौका विनय ।"

"तुम जानते हो मुझे बम्बई की सब खबरें मिलती रहती हैं तुम कितना भी छिपो···मुझे पता लग जाता है ।"

"विनय मुस्कराया···लेकिन खामोश रहा ।"

'क्यो पीते हो तुम ।"

"गम भुलाने के लिए ।"

"तुम्हे किस बात का गम है ?"

"जिन्दगी का ।"

"क्यो ।"

"ऊब चुका हूँ···।"

"यह कैसी बात कह रहे हो और अलका ने उसका हाथ पकड़ लिया ।"

"तुम्हें जीना है···किसी के लिए नही···अपने लिए मेरे लिए समझे अपनी अलका के लिए···समझे कि नही और उसने विनय के गले मे बाँह डाल दी ।"

"समझ गया बाबा ।"

"अच्छा·· सुनो···आज मूड है पिक्चर देखने का···चलोगे और अगर मेरा मूड न हो तो ।"

"तो भी चलना पडेगा ।"

'फिर पूछना ही बेकार है···"

"और खिलखिलाकर हँस पड़ी अलका ।" तो फिर तैयार हो जाऊँ ।"

"फिर पूछा ।"

ओह···समझ गई ।···और वह अलमारी मे से एक के बाद एक···कई साडियाँ फेकती चली गई···आखिर मिल ही गई उसकी मन पसन्द साड़ी ।"

"जरा अपनी आँखें बन्द कर लो।"

लेकिन विनय खिडकी से बाहर देख रहा था उसने ध्यान ही नही दिया।

ऐ...लेखक...।

और वह चौंका...।

"मैंने कहा कि अपनी आँखें बन्द कर लो।"

"क्यो ?"

"मैं साडी बदलूँगी...और उसके होठो पर मुस्कराहट खेल गई। विनय ने अपनी आँखे बन्द कर ली।"

"ऐसे नही...और अलका ने साड़ी का एक छोर उसके चेहरे पर डालते हुये कहा...ऐसे।"

और जोर से हँस पड़ी। न सँभाल सका लेखक...उठा झपटा... और समेट लिया अपने आलिगन मे अलका को।

"उफ...अब छोडो भी...देर हो जायगी..."

लेकिन बन्धन कसता गया...कसता गया...और...ले...ख...क। टैक्सी चली जा रही थी चुर्नी रोड...मेरीन लाइन्स और लिबर्टी।

बिल चुका कर विनय बुकिंग आफिस की ओर बढा अलका खड़ी थी एक कोने मे सामने पोस्टर लगा हुआ था...ए० वी० एम० का चोरी चोरी।"

भीड काफी थी...बालकनी का टिकट लेकर जिस समय विनय लौटा...उसी समय तीसरी बैल वज उठी!

"ओ...माई लौर्ड...जल्दी करो...लेखक...मुझे न्यूज रील देखनी है।"

"क्यो ?"

"रेक्सोना साबुन की एडवरटाइजमेन्ट मे मैंने काम किया है।"

"यह बात।" और विनय उसका हाथ पकडकर तेजी से सीढ़ियाँ चढने लगा।"

हाल मे अँधेरा था ··कौन कहाँ बैठा है···अँधेरे में कौन जाने। गेट कीपर ने टौर्च की लाइट मे "टिकट का नम्बर देख कर उन्हे बिठा दिया।"

"तुम्हारी कहानी पूरी हो गई।"

"हाँ।"

"तो फिर शूटिंग कब से शुरू होगी।"

"कल से।"

"कल से···चौकी अलका·· "

"क्यो···चौक क्यो पडी···"

"तुमसे विनोद जी ने मेरे बारे मे कुछ कहा कि नही।"

"हाँ" कहा तो था···और मुस्कराया विनय।"

'क्या।"

"यही कि लड़की बहुत चालाक है···भोली भी है···अच्छी भी है···टेढी··।"

बस···बस मेरा मतलब मेरे करैक्टर से था···मेरे लिए कोई पार्ट सलैक्ट किया या नही।

"किया है।"

"कौन सा ?"

"माँ का।" और विनय जोर से हँस पडा।···एक बार काफी लोग पलटकर देखने लगे !"

"फिर तुमने मजाक किया।"

"अरे···मेरा मतलब है···डान्सर का।"

"समझी।"···और एकाएक गम्भीर हो गई अलका···उसके दिल मे आग लगी हुई थी···यही वायदा है विनोद जी का···मैं उनके

लिए दुनिया भर के पाप करता रहती हूँ और मुझे यही बदला मिलता है कह कर अलका खामोश हो गई ।

तुम खामोश कैसे हो गयी । पूछा विनय ने ।

"कुछ नही ।"

"लेकिन विनय समझ गया···और क्यो न समझता···लेखक था आखिर बोला ।"

"एक बात कहूँ ।"

"क्या ।"

"विनोद जी ने वैम्प लडकी के लिए जिसे चुना है·· वह लडकी मुझे बिलकुल पसन्द नही···मैं चाहता हूँ । तुम उस पार्ट को करो लेकिन लेकिन क्या वह अधिक-से-अधिक विनय के ऊपर झुक गई थी ।"

"तुम्हे कुछ मेहनत करनी पड़ेगी ।"

"कैसी मेहनत ! उसकी आवाज मे घबराहट थी ।"

"विनोद जी से कहोगी तो नही ।"

"नही कहूँगी ।"

"मैंने जब उनसे तुम्हारे लिए कहा था तो वे बोले तुम उस पार्ट को कर नही सकती और मैं खामोश हो गया था ता अब क्या हो सकता है । उसकी आवाज मे निराशा की झलक थी ।"

क्यो नही हो सकता···मैं तुम्हारे घर पर उसकी रिहर्सल कराऊँगा···और जिस रोज उस लडकी की शूटिंग होगी···उस समय मैं कह दूंगा कि अलका और सुन्दरी मे जो अच्छा पार्ट प्ले करे उसी को यह रोल दिया जाय ।

"तुम मेरे लिए इतनी तकलीफ करोगे ।"

"अच्छा जी·· अब इसे तकलीफ कहने लगी है आप ।···और एक हल्की-सी खिलखिलाहट के साथ अलका ने अपना सिर विनय के कंधे पर रख दिया ।"

खामोशी छाई हुई थी हाल मे ··देखने वाले हर इसान के हृदय में एक ज्वार-भाटा सा होता है कि काश वह भी इसी तरह नायक के रूप मे काम कर रहा होगा···लेकिन विनय पर इसका असर कुछ अधिक पडा जब कि उसने देखा कि नायक के चले जाने पर नायिका किस तरह रो-रो कर जिन्दगी गुजारती है।

बिजली-सी गिर पडी हृदय पर और तडप कर वह उठकर खड़ा हो गया।

"अरे कहाँ चल दिये ?"···और अलका ने उसका हाथ पकड कर फिर से उसे बैठने पर मजबूर कर दिया।

"पर अब वह शान्ति मर चुकी थी। बेचैनी-सी छाई थी उसके तन-बदन पर और शेष समय उसने इस तरह गुज़ारा मानो किसी कैदी को केवल दो-चार घडियाँ रह गई हो···और उसके बाद उसे आजादी मिलती हो।"

भीड बाहर निकल रही थी।

विनय ने अलका को टैक्सी पर बिठा दिया·· लेकिन-बहुत ज़ोर देने पर भी साथ न गया वह···एक बार उसने भीगी नजर से बाहर निकलने हुए लोगो की ओर देखा···और फिर चल दिया · लडखडाता-सा बाजार की ओर।

रंगीन महफिल का नजारा ही कुछ और होता है। बेनकेल के ऊँट की तरह उसके कदम उसे खीच लाये मदिरालय मे जहाँ शराब के प्यालो में तबाही घोल-घोल कर पिलाई जाती थी।

कोने की सीट पर जा बैठा विनय···उस जैसे न जाने कितने वहाँ और थे जिनके चेहरे पर तबाही के दाग बन चुके थे·· जिनके दिल जख्म लगते-लगते छलनी बन चुके थे। लेकिन·· इस समय खिल-खिलाहट के सिवा कुछ न था।

"क्या लाऊँ सरकार···"

"व्हिस्की !"... बैरा चला गया। रिकार्ड पर किसी दिलजले शायर की लाइनें बज रही थी।

"शराब लब पे हो...साकी करीब गाती हो"—

किसी के रुख से हवा गुनगुना के आती हो—

नशे मे दिल की तमन्ना भिगोयी जाती है।

और एक ही घूंट मे गट-गट कर के बोतल चढा ली उसने ! आँखो मे सुरूर आया......उठने की कोशिश की और कदम डगमगा गये।

"और लाओ।"...झटके के साथ आवाज निकली और दूसरी बोतल सामने आ गयी। पानी की तरह गले के नीचे उतर गई वह भी।

"और लाओ !"...

"कितनी और पियेंगे साहब।"

"तुमको इससे क्या ?" हसा विनय..."पैसे चाहिये' 'अँ बहुत पैसे है...देखो न ''जेब भरी पडी है...।" उसने सिर मेज पर रख दिया।

"जब तक होश रहे...पिलाते रहो'' बेहोश हो जाऊँ तो... बाहर निकाल देना'' अँ...धक्के मार कर...अरे'' तुम खड़े क्यो हो' 'लाओ न लाओ।"...चीख पडा वह। और फिर बोतल के बाद बोतल।...यहाँ तक कि अन्त में बेहोश होकर मेज पर ही लुढक गया वह।

मैनेजर ने आकर जेबे देखी...एक दस का नोट पडा हुआ था...।

"बेईमान कही का'' कोट उतार लो इसका।"...और बैरे ने जैसे ही कोट उतारने के लिए हाथ आगे बढाया...माया तेजी से आ गई।

"ठहरिये।"...मैनेजर ने चौककर देखा माया की ओर...सन्तू ने जल्दी से सम्भाला विनय को।

"कितने पैसे लेने है आपको···यह लीजिये···और जो बचे वह बैरे को बख्शीश मे दे दीजियेगा··।" और फिर चलते हुए उसने कहा ··

"शराफत तो शराब की धार मे घुल चुकी है।"

और वह सन्तू के साथ विनय को सहारा दिये हुये बाहर निकल गई।

देखता रह गया मैनेजर हाथ मे सौ का नोट था।

और मेज पर खाली बोतलें।

× × ×

अँगडाई लेकर उसने उठना चाहा लेकिन बदन टूट-सा रहा था धीरे-धीरे याद आने लगी रात की घटनाये—चोरी-चोरी अलका··· शराब की बोतले और फिर।···

बहुत कोशिश की लेकिन याद न आ सका फिर क्या हुआ। पलग पर लेटे ही-लेटे उसने बैल बजा दी और कुछ ही देर मे बैरा चाय की ट्रे लेकर आ गया।

"चन्दन···रात तेरी ड्यूटी थी। "

"हाँ···साहब।"

"तुझे मालूम है मैं यहाँ कैसे आया था ?"

"जी सरकार··वह मेम साहब जो दोपहर को आयी थी आपके सामने वाले कमरे मे··उन्होने सहारा दे रक्खा था आपको ·और साथ मे एक साहब भी थे।"

"अब कहाँ हैं वह मेम साहब ?"

"वह तो सवेरे होते ही चली गईं।"

"चली गईं। चौक-सा उठा विनय ··तुझे और कुछ नही मालूम उनके बारे मे—.

साहब जब वह आई थी तो पहले आपको पूछ रही थी और जब पता लगा आप कही गये है तो आपके सामने वाला कमरा ले लिया' उन्होने ।

'तू जरा मैनेजर से पूछ कर आ अपना पता रजिस्टर मे लिखाया होगा उन्होने ?"

बेचैन था विनय कौन मिलने आया था उससे ''एक मेम साहब एक साहब कौन हो सकते हैं ।

"कानपुर से सरकार माया नाम था।"

"चन्दन ' चीख पडा विनय ''कितनी देर हुई उन्हे गये हुये ।

"दो घण्टे हो चुके।"

तू टैक्सी बुलाकर ला अभी शायद स्टेशन पर ही होगी और वैसे ही उठ कर चल दिया विनय ।

बीस मिनट लगे उसे स्टेशन पहुँचने मे लेकिन जब प्लेटफार्म पर जाकर उसने पता लगाया तो मालूम हुआ कि कानपुर को गाडी छूटे एक घन्टा हो चुका है ।

निराश लेखक होटल वापस लौट आया ।

"तुम आईं और चली गईं माया ।"

वह पलग पर गिर गया—उसे कुछ पता न लगा और वह उस समय होश मे आया जिस समय चन्दन ने आकर बताया कि उसके आफिस से फोन आया था ।

उसने कपडे बदले-खाने के लिये मना कर दिया और चल दिया अपमान-सा ' फेमस बिल्डिंग महालक्ष्मी की ओर—

"क्यो विनय बाबू ''कैसे सुस्त हो आज ? मुस्कराते हुए पूछा विनोद ने ।"

"कुछ नही ।"'''

"तुम्हारे घर से आये थे'''मिल गये'''"

"नही।"

"क्यो ?"

"वह मुझसे मिल गये···मैं उनसे न मिल सका।"

"मै समझा नही।"

"शराब के नशे मे था मैं।" ··

"ओह"···और हँस पडा विनोद···

"हँसो मत·· आज जख्म हरे हो गये हैं···कही छिल न जाये।"

"क्यो ऐसी क्या बात है ?"

"सिर्फ बात ही नही विनोद जी ··मैं लुट चुका हूँ···वह मुझे प्यार करती थी···बहुत ज्यादा प्यार करती थी।"

और उसने मुझे इस हालत मे देख लिया···अलका···और शराब दोनो मेरे साथ थी···मैं कितना गिर गया उसकी नजरो मे···

तुम पागल हो विनय···जो एक बार किसी की नजरो मे चढ जाता···वह फिर वहाँ से गिरता नही···कुछ भी क्यो न हो जाय।

"नही विनोद जी···अगर ऐसा न होता तो वह मुझे नशे मे छोड कर चली न जाती।"

"खैर छोडो भी यार इस झंझट को तुम तो लेखक हो समझ लो एक कहानी खत्म हो गई···अब दूसरी शुरू कर दी ··बहुत-सी मिल जायेगी उस जैसी···।"

और वह हँस पडा खिलखिला कर···

लेकिन विनय खामोश था···उदास था···उसकी आँखो के सामने माया मासूम तस्वीर नाच रही थी···वह न सुन सका इस खिलखिलाहट को···और उसके कदम आप ही बाहर की ओर बढ़ चले···।

× × ×

आफिस पहुँचकर सीट पर बैठा ही था कि मैनेजर ने आकर एक लिफाफा उसके सामने रख दिया··· प्रश्न भरी निगाहों से सन्तू ने एक बार उसकी ओर देखा फिर खोल डाला लिफाफा।

"लेकिन क्यो।"

"यह आप मालिक से पूछिये।"

और वह तेजी से सेठ साहब के कमरे की ओर मुडा। कुछ लिख रहे थे वह खडा रहा सन्तू निराश चेहरा लिए।

"कहिये कैसे तकलीफ की आपने।"

"जी·· मैं इस पत्र के विषय मे पूछना चाहता था।"

"क्या ?"

"मेरी गल्ती क्या है · जिस पर मुझे हटाया जा रहा है ?" कुछ देर तक सेठ साहब चश्मे को रूमाल से साफ करते रहे···

"बरखुरदार कुछ पाने के लिए···कुछ खोना पडता है.··लेकिन तुम उसके लिए तय्यार नही हो !"

"मैं समझा नही ?"

"मेरा मतलब था ···सिर्फ एक रात का इन्तजाम।"

'मिस्टर सेठ। सन्तू की आँखो मे खून उतर आया लेकिन वह संभाल गया अपने आपको · हम गरीब जरूर है लेकिन अमीरो की तरह जलील नही ·कि पैसो की खातिर इन्सानियत बेच दे। भगवान ने हाथ पैर दिये है · भूखो नही मर सकते· · समझे· · सभाला अपनी नौकरी को।"

और वह चल दिया· ·डामर की काली सडक पर उसके कदम उठते चले जा रहे थे· · ·वह समझ नही पा रहा था कि एकाएक ऐसा हुआ क्यो · चन्दा सन्ध्या ·के कमरे मे से गिरी कैसे· · ·उसके कदम और तेज हो उठे ·उसके दिल मे तूफान-सा उठ रहा था· · ·आज वह चदा से पूछकर ही दम लेगा।

और कुछ ही देर मे सामने आ गई·.· मासूम· · ·भोली · चन्दा।

"आज इतनी जल्दी भैया।"

"हाँ चन्दा आज तबीयत कुछ ठीक नही थी।"

"क्यो क्या हुआ तुम्हे ?"· · घबरा गई वह····

"मुझे कुछ नही हुआ" "लेकिन तुझे क्या हुआ था ?"

"मुझे । उसने चौककर पूछा ।"

"देख चन्दा 'अपनो से कोई बात छुपाई नही जाती ' आज तुझे बताना ही पडेगा । तू सन्ध्या के कमरे मे कैसे गिरी थी ।"

लेकिन वह खामोश रही उसका चेहरा उतर-सा गया था"

अगर तूने सच-सच न बताया चन्दा' ' तो समझ ले तेरा भाई तुझे अकेला छोडकर चला जायेगा ।

"भैया और वह सिसक कर गिर पडी उसकी गोद मे ' उस दिन सन्ध्या जी ने मुझे बुलाया था' ''मैं चली गई थी वहाँ पर तुम्हारे मालिक भी आये हुए थे और ' । ' ' कह भी न पाई थी चन्दा कि बीच मे ही सन्ध्या आ गई ।

और उन्होने इसके साथ गन्दा व्यवहार करने की चेष्टा की थी मैं खुद तुमसे माफी माँगने आयी थी मिस्टर सन्तू ' मुझे नही मालूम था वह इतना कमीना निकलेगा' ' नही तो कभी भी चन्दा को अकेले घर मे छोडकर न जाती ।"

लेकिन सन्तू खामोश' उसकी आँखे ठन्डी पड गई थी'

मैने बाद मे उसे जलील किया और उसी से बिगडकर उसने तुम्हे नौकरी से निकाल दिया लेकिन तुम परेशान मत होना मैं जल्दी ही तुम्हें दूसरी नौकरी दिला दूँगी ''

"अब उसकी जरूरत नही है सन्ध्या जी ।"

"क्यो ?" ''

"आपको मेरी खातिर तकलीफ उठाने की जरूरत नही है ।"

"तुम मुझे गलत समझ रहे हो सन्तू"''''मैं ''

"मैं किसी की हमदर्दी नही चाहता' 'आप जा सकती हैं ।"

और सन्ध्या चुपचाप उठ कर चली गई । दिल में लगी गई आग को छिपा कर ।

सन्तू ने बीडी सुलगाई—और अपने आप ही उसके कदम बढ़ चले

बाहर की ओर उसकी आँखो मे दर्द के साथ-साथ बदले की आग भी जल रही थी।

"आज की ताज़ी खबर" सन्तू ने सर उठाया।

"सरे-आम कत्ल करके डाकू बाइस हजार लेकर उड गया···आज की ताजी खबर। चौक-सा पडा सन्तू ··उसका खून से क्या सम्बन्ध लेकिन न जाने क्यो काँप-सा उठा और उसने इशारे से अखबार वाले को अपने पास बुला लिया।"

"काश कि ऐसा ही खूनी अपना साथी बन जाये और वह बडबडाता हुआ पैसे देकर आगे चल दिया।"

पैसे छूट गये अखबार वाले के हाथ मे से।

"ऐ बाबू ·वह तेज़ी से आगे बढा।"

"क्यो पैसे पूरे नही हैं क्या ? रुक गया सन्तू।"

"हाँ।" वह सन्तू के एकदम करीब आ गया था।"

"आपसे कुछ बातें करनी है सामने वाले होटल मे बैठो चलके मैं अभी आता हूँ और वह खिसक गया वहाँ से।"

आश्चर्य मे डूबा हुआ सन्तू आ बेठा होटल मे ··कौन है यह खबर वाला· मुझसे क्या बाते करेगा और तभी वह आ गया आते ही उसने दो चाय का आर्डर दे दिया।

"आपका नाम क्या ?"

"सुनील" ··सन्तू ने धीरे से कहा।

"क्या करते है ?"

"कुछ नही।"

"कहाँ रहते हैं ?"

"भूसा टोली · लेकिन आप सब पूछ क्यो रहें ? और वह मुस्करा पडा ··चाय आ गई थी · "

"लो चाय पियो ··सन्तू ने चाय ले ली ·"

"अभी कह रहे थे न।"

"क्या ?..."

"तुम्हे एक साथी की जरूरत है।"

"साथी" "देखिये साफ-साफ बात कीजिये" "वह पहलियों मे नहीं समझ सकता।"

वह कुछ देर खामोशी से चाय की चुस्कियाँ मारता रहा फिर बोला—

"अगर मैं तुमसे कहूँ कि रात को १० बजे तुम मुझसे हटिया के चौराहे पर मिल लेना तो आओगे।"

"लेकिन किसलिये ?"

"तुम अब खुद सोच लो" "हाँ इतना इशारा दिये देता हूँ कि तुम्हारी मन की मुराद पूरी हो जायगी—अच्छा" "फिर मिले तो" इन्तजार करूँगा मैं।"

और वह बिना कुछ सुने ही चल दिया—सन्तू अनमना-सा बैठा रहा।

दस बजे न चाहकर भी उसके कदम उठ चले हटिया की ओर" और जिस समय वह चौराहे पर पहुँचा अखबार वाला सिगरेट की दुकान पर खड़ा सिगरेट पी रहा था।

"मुझे विश्वास था तुम आओगे वह बोला"—

"लेकिन आपने मुझे बुलाया क्यो है।"

"शि "यह बातें यहाँ करने की नही है—उसने मुँह पर उगली रख ली और वह आगे-आगे चल दिया।"

"सिगरेट पियोगे।" उसने एक सिगरेट आगे बढ़ाई और सन्तू ने सिगरेट लेकर सुलगाई।

न जाने कितना फासला उसने तय कर लिया उसे तब होश आया जब अखबार वाले के शब्द उसके कानो मे पड़े।

"देखो इस जगह का किसी और को पता न लगे" "बस्सा।"

और उस खडहर के चारो ओर एक बारगी कांपते से हुये सन्तू ने देखा। वह परेशान था—आखिर बेचैन होकर वह पूछ ही बैठा।

भगवान के लिये आप मुझे इतना बता दीजिते कि आप कौन है मुझे यहाँ किसलिये लाये हैं·· आप।

अभी तुम्हे सब कुछ बता दूँगा इतना घबडाने की जरूरत नही है।

और सन्तू यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि इस खण्डहर मे भी एक अच्छी हालत मे रहने लायक कमरा हो सकता है। जहाँ बगैर मीटर के बिजली भी जल सकती है।

"बैठो।"···और सन्तू बैठ गया।

"चाय पियोगे?"···

"यहाँ चाय?"

"हाँ-हाँ ··ठहरो मैं कह दूँ जरा। और वह उठकर चला गया।

हैरान था सन्तू···लाख कोशिश करने पर भी उसकी समझ मे न आ रही थी यह पहेली और तभी वह आ गया।

"हाँ तो सुनील बाबू···कुछ मालूम होता है कि आप पर कुछ ऐसी ही गुजर चुकी है कि आप बेचैन है आपके दिल मे किसी से बदला लेने की आग सुलग रही···कहिये क्या ख्याल है?

"वह तो सब ठीक है···लेकिन मैं तब तक खुलकर बात न कर सकूँगा जब तक आप मुझे अपना परिचय न दे देंगे।

"मेरा परिचय चाहते है आप · लेकिन क्या मैं विश्वास करूँ कि दोस्ती निभायेंगे और चाहारदिवारी के बाहर आप मुझे अखबार बेचने वाला ही समझेंगे।

"भरोसा रखिये।" सन्तू कुछ सचेत हुआ।

"मेरा नाम रमेश है · वह कुछ देर रुका ·

- "मेरा काम लोगों को लूटना है ··उन इन्सानो को जो गरीब और बेकसो का खून चूस-चूस कर मोटे होते है ·:जो दूसरो की इज्जत लूटकर अपनी इज्जत बनाते हैं—दूसरो की बहन-बेटियों की अस्मत लूट-लूट भी महापुरुष कहलाते हैं···जिनके सफेद कपडो के नीचे काले दाग होते हैं···जिनकी तिजोरियो के नीचे सिसकती इन्सानो की रूह होती है· ·

लेकिन दुनिया की नजरो मे वे देवता हैं और मैं चोर· · ·डाकू· · लुटेरा···
उनकी कारो के पीछे पुलिस घूमती है उनकी हिफाजत के लिये···मेरे
आगे पुलिस घूमती है मुझे गिरफ्तार करने के लिये ?

"बस अब आगे कुछ कहने की जरूरत नही है सब कुछ समझ
गया हूँ · और अब आपसे पूछ रहा हूँ क्या आप मुझसे दोस्ती
निभायेंगे ?"

मुझे अपना ही समझो तुम्हारी कहानी भी किसी दिन फुरसत से
सुनूंगा · यह लो चाय आ गई ।

एक सुन्दर-सा लेकिन मुरझाया हुआ चेहरा था जवानी चढी ही
थी लेकिन उजड-सी गई थी हाथो मे दो चूडियाँ · ·सूनी माँग · ·
सफेद धोती नगे पैर ।

वह दो कप चाय लिए खड़ी थी ।

"यह कौन है ?" · चौक पडा सन्तू ।

"इन्सानियत की तस्वीर ।"

वह चाय रखकर चली गई थी···श यद किसी के रोने की आवाज
सुनकर ।

'इसका पति जेल मे सड रहा है ।"

"क्यो" पूछा सन्तू ने· · ·

"गुनाह किया था ।"

"क्या ?"

"जिस सेठ के यहाँ नौकरी करता था· · ·उसके काले बाजार की
शिकायत पुलिस मे कर दी थी ।"

"तो इसमे उसका गुनाह क्या ?"

"पैसा नही था पैसे से इन्साफ· · · इन्सान · ·और यहाँ तक भगवान
भी खरीदे जा सकते हैं ।"

"ओह ।"

"चाय खत्म हो गई थी ।"

"अच्छा रमेश बाबू मुझे इजाजत दीजिए' ' 'मैं कल फिर मिलूँगा आपसे' ' 'आठ बजे।"

"चलो तुम्हे बाहर पहुँचा दूँ।"

और वह उठकर खडा हो गया।

× × ×

शूटिंग शुरू हो चुकी थी' विनय जी भर के अलका को रिहर्सल कराई थी और उसी का अंजाम था कि वह रोल उसे मिल गया था।

सैट की एक ओर कुर्सी पर बैठा हुआ था विनय' ' 'शूटिंग का सीन उसकी आँखो के सामने नाच रहा था। लेकिन उसी के साथ-साथ गम की एक सिहरन कभी-कभी दिल मे दौड जाया करती थी।

कल होटल का बिल अदा करना है—वह काँप-सा उठा—अगर आज विनोद ने पैसे न दिये तो क्या होगा।

. एक भावी आशका से वह काँप-सा उठा दिल नही लग रहा था शूटिंग देखने मे और वह सैट मे से निकलकर बाहर लॉन मे आकर लेट गया।

दूर के ढोल सुहावने। क्या यही है फिल्मी जिन्दगी जिसके सपने लोग देखा करते है। नीरस' ' 'कठोर वातावरण जिसमे कीडो की तरह इन्सान कुलबुलाया करते है।

उसने आँखे बन्द कर ली' ' एकाएक किसी के हाथों का बालो पर स्पर्श पाकर उसने चौककर आँखें खोल दी।

अलका थी' ' 'वही मुस्कराहट ' 'वही अदा ' 'वही शर्मीली निगाहें ' ' 'लेकिन उसे आज कुछ भी अच्छा नही लग रहा था—आँखें फिर बन्द कर ली।

"क्या बात है लेखक।"

लेकिन वह खामोश रहा।

"यहाँ अकेले क्यो लेटे हुये हो ।"

"ऐसे ही ।"

"ऐसे ही कोई बात जरूर है · ·।"

"नही बात कोई नही है और वह उठकर बैठ गय ।"

"छिपा रहे हो मुझसे बताओ न तुम्हें मेरी कसम और अलका ने उसके गले मे बाँह डाल दी वह कुछ देर खामोश रहा· · ·झिझक-सा रहा था कहने मे ।"

"कुछ नही ऐसे ही जरा सोच रहा था विनोद बाबू के विषय में ।"

"क्या ?"

और तभी एकाएक शोर मच गया लोग भागे हुए अन्दर जा रहे थे विनय और अलका भी तेजी से उठकर अन्दर गये ।

एक लाईट मैन ऊपर से गिर गया था—सिर फट गया था शायद ।

दो आदमियो ने मिलकर उसे उठाया विनोद ने अपने ड्राइवर से कह दिया था। कार मे उसे अस्पताल भेज दिया—शूटिंग फिर शुरू हो गई ।

क्या खूब । ·मुंह से निकल गया विनय के इन्सान के मरने-जीने से काम मे कोई अन्तर नही पड़ता—किसी के चेहरे पर शिकन भी न थी काम बदस्तूर चल रहा था ।

"क्या सोच रहे हो ?· · ·बोली अलका ।"

"घायल हो गया · ·कार मे अस्पताल भिजवा दिया· · ·मर जाता तो कार मे श्मशान भिजवा देते· · ·शूटिंग फिर भी चलती रहती ।"

"ओह ।" हँस पड़ी अलका· · ·यह तो मामूली बात है विनय बाबू · · ·यह बम्बई है· · ·यहाँ एक दिन में न जाने कितने मरते हैं · ·और कितने पैदा होते हैं लेकिन किसी का काम नहीं रुकता ।

"यह बम्बई है ·बड़बड़ाया विनय ।"

"आओ चाय पी लें" और वह अनमना-सा होकर फिर बैठ गया सीट पर · ·सभी चाय पी रहे थे· · विनोद भी वहीं बैठा था ।

"क्यो विनय···ठीक हो रहा है न···तुम्हारा क्या ख्याल है इस सीन के बारे में।"

"ठीक है।"

वह फिर खामोश हो गया···चाय के घूँट एक-एक करके गले के नीचे उतरते चले गये—घडी देखी तीन बज गये थे।

"विनोद जी···बोला विनय···आप जरा बाहर चलोगे।"

"बाहर···हाँ-हाँ चलो और दोनो उठकर बाहर चले आये।"

"मैं यह कहना चाहता था कि अगर आप पेमेट कर दें तो मैं चलूँ, नींद आ रही है।"

इस समय तो हो नही सकता विनय बाबू··मुझे पूरी उम्मीद थी—लेकिन फाइनैसर साहब पैसे लाये नही—कल देने के लिये कह रहे हैं।"

"अगर कल न हो पाया तब मैं फिर क्या करूँगा ··होटल वाले का तीन माह का बिल हो गया है—उसने कल का अल्टीमेटल दे दिया है।"

"कल हो जायेगा···मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूँगा—हाँ यह पाँच रुपये ले लो तुम्हे टैक्सी से जाना पडेगा···इतनी रात और कोई सवारी है नहीं।"

और वे पाँच का एक नोट देकर सैट के अन्दर चले गये।

पाँच का नोट था विनय के हाथ मे—चेहरे पर मायूसी के बादल घिर आये थे···और वह भारी कदमो से चल दिया स्टूडियो के बाहर।

सवेरे ग्यारह बजे आँख खुली विनय की · खिडकी मे से धूप की तेज रोशनी आ रही थी—और उसने उठकर खिडकी बन्द कर दी।

"लैटे-ही-लैटे बैल बजा दी। थोडी ही देर मे बैरा चाय लेकर आ गया।"

"क्यो चन्दन···मैनेजर साहब कुछ कह तो नही रहे थे।"

पूछ रहे थे आपके बारे में···मैंने कह दिया शूटिंग हो रही है··· रात देर से आये थे और अभी तक सो रहे हैं।

चला गया चन्दन· · फीकी-सी हँसी आई उसके होठो पर और फिर चली गई। उसने चाय का घूंट भरा ही था मनेजर साहब आ धमके।

"कहिये विनय बाबू शूटिंग चल रही है।"

"जी हाँ।"

"और हमारा इन्तजाम किया· · ·"

"अभी तक तो हो नही पाया है· · ·आज फिर देने के लिये कहा है।"

"आज किसी भी तरह कर दीजिये· ·आप खुद ही समझ सकते है। होटल का खर्चा भी तो आप लोगो के दम पर चलता है· · तीन महीने हो गये है वैसे मैं कुछ न कहता · ·लेकिन उधर मालिक मुझे परेशान करता है।"

"जी हाँ ठीक भी है आपका कहना· ·मैं आज इंतजाम कर दूंगा।"

"और मैनेजर साहब चले गये।"

"आपके मालिक आपको परेशान करते है और मेरे· · · बडबडाया वह· · और ठण्डी चाय को एक ही घूंट मे गले के नीचे उतार दी।"

× × ×

क्या आप भी मुझे गैर समझते हो सन्तू—माया ने चाय का प्याला मेज पर रखते हुये कहा। इधर-उधर की ठोकर खा सकते हो और घर मे काम करने से झिझकते हो।

"नही ऐसी बात नही है माया जी· · ·कुछ झेंप-सा गया सन्तू।"

फिर और क्या बात हो सकती है· · भाई मैं तो इसमे कोई बुराई नही समझती—तुम और जगह जिस तरह नौकरी करोगे अगर घर के काम मे हाथ बटाओगे तो क्या बुरा है—फिर पिता जी कह भी रहे थे कि उन्हे अपने दफ्तर में एक प्राइवेट सेक्रेटरी की आवश्यकता है।

"मैं सोचकर बताऊँगा।"

"सोचना कैसा···मैं आज पिता जी से कह दूँगी तुम कल से काम करने लगो—नहीं तो मैं समझूँगी तुम अब भी मुझे गैर समझते हो।"

और मजबूर हो गया सन्तू···मना भी किस तरह करता···एक तरफ वह हाथ-पैर जोडता फिरता है नौकरी के लिये···और एक तरफ उससे नौकरी के लिये जिद की जा रही थी।

फिर से चन्दा का मुरझाया चेहरा खिल उठा ··अब भैया रिक्शा चलाने के लिये जिद न करेंगे—

फिर से चल उठा दो दाँतो का कारवाँ सन्तू ने फिर से माया के पिता के दफ्तर में नौकरी कर ली।

"और उधर।" ··

"सुना तुमने सन्ध्या—मिस्टर सेठ ने अन्दर प्रवेश करते हुए कहा—"सन्तू को नौकरी मिल गई है।"

और शायद पहले से कही ज्यादा अच्छी। ढाई सौ रुपया मासिक बोली सन्ध्या।

"और तुम्हें यह कैसे पता लगा।"

"मुझसे क्या छिपा रह सकता है।"

"लेकिन यह समझ मे नही आता उसे वहाँ नौकरी मिल कैसे गई। क्योकि आजकल बगैर जान-पहचान के तो ··।"

"और अगर मालिक की बेटी से जान-पहचान हो तो। · मुस्करायी सन्ध्या।

"तो क्या कुछ दाल मे काला है ?"

"हाँ मुझे तो कुछ ऐसा ही लगता है···बम्बई भी तो उसी के साथ गई थी।"···

चौक से उठे मिस्टर सेठ···परेशान चेहरा कुर्सी के पीछे की ओर लुढक गया···कुछ देर तक तो मौत-की-सी खामोशी छायी रही फिर उन्होने एक सिगरेट निकालकर मुँह से लगा लिया और सुलगाते हुए बोले।

"तुम्हे एक काम करना पडेगा सन्ध्या !"

"क्या ?"

"कोई ऐसा दाँव फेंको कि वह लडकी अपना रुख एकदम बदल दे···।

बहुत मुश्किल है सेठ साहब···मैं तो उसे जानती भी नही।

"बहुत खूब।" "खिलखिला कर हँस पडा सेठ" "और यह तो तुम्हारे बाँये हाथ का खेल है। उससे जान-पहचान बढाना कौन-सी बडी बात है।···पहले उससे जान-पहचान बढा लो फिर कान भर दो उसके···उधर सन्तू वहाँ से निकाल दिया जाय और इधर···। देखो मालामाल कर दूँगा—अगर मेरा काम बन गया तो।"

"मैं एक बात नही समझ पा रही हूँ।"

"क्या ?"

"आखिर उस लडकी में ऐसी क्या खासियत है कि उसके लिये बिचारे सन्तू के पीछे आप इस तरह पडे हुए है।"

"यह तुम नही समझ सकोगी सन्ध्या · गम्भीर हो गये सेठ साहब ·· कुछ देर तक वह खामोश रहे फिर उठते हुए बोले।"

"आग-सी लगा दी है उस लडकी ने जब तक उसे नही पा लूँगा चैन नही मिलेगा। अच्छा मै अब चलता हूँ तुम ख्याल रखना।"

"और सन्ध्या अकेली रह गई।"

धूप कम होने लगी थी · दूर आकाश पर कुछ काले-काले बादलो का जमघट लगा हुआ था चुनौती दे रहा था, कि अब हम बरसेंगे। दो परों के दम पर उड़ने वाले परिन्दे चीं-चीं की मधुर रागनी अलापते हुए अपने नीडो की ओर वापस जा रहे थे।

बॉलकनी में इसी चेयर पर बैठी हुई थी माया के हाथ में कोई किताब थी···लेकिन निगाहें किताब पर नहीं दूर आकाश पर छाये हुये उन्हीं काले बादलों पर लगी हुई थी।

किताब के मुख्य पृष्ठ पर लिखा था बीते दिन ।···और शायद बीते दिन । ··ही याद आ रहे थे उसे भी ।

कमरे मे रेडियो बज रहा था ·यह है तलत महमूद · बिरहन बैठी आस लगाये···झूठी आस लगाये · बिहरन···।

दो आँसू टपक पडे माया की आँखो से ।

तभी सामने कार रुकी · जल्दी से आँसू पूँछ लिये माया ने कार से कोई उतरा और सन्तू के कमरे की ओर बढा ··लेकिन कमरे मे ताला लगा हुआ था ।

"उठ कर खडी हो गई माया ।"

"आप ऊपर आ जाइये ।"

"बिना माँगे मोती मिले । तेज कदमो से सन्ध्या ऊपर चली आई ।"

आप किससे मिलने आई थी···

"जी मिस्टर सुनील या चन्दा से ··वह बैठते हुए बोली ।"

"आप बैठिये जन्दा अभी आती होगी मैंने एक काम से भेजा है मांया खुद भी बैठ गई ।

"आपकी तारीफ जान सकती हूँ । बोली सन्ध्या ।"

"जी हाँ ·मुझे माया कहते है ।"

"ओह तो शायद आप ही के विषय मे सुनील बाबू कह रहे थे ।"

"क्या कह रहे थे···चौकी माया ।"

उनसे कहेगी तो नहीं आप···वैसे कह दे तो भी कोई हर्ज नही है···उस दिन वह बता रहे थे कि माया नाम की कोई लडकी है जो उनसे प्यार करती है । और उसी ने उसे कोई नौकरा दिलाई है ।

"जी ।"···चौक पड़ी माया लेकिन तभी सन्ध्या उठकर खडी हो गई ।"

"वैसे हो सकता है वह कोई और माया हो अच्छा मैं अभी तो चलती हूँ ज़रा जल्दी में हूँ फिर मिलूँगी उनसे ।" नमस्ते ।

"तुम्हें एक काम करना पडेगा सन्ध्या !"

"क्या ?"

"कोई ऐसा दाँव फेंको कि वह लडकी अपना रुख एकदम बदल दे···।

बहुत मुश्किल है सेठ साहब···मैं तो उसे जानती भी नही ।

"बहुत खूब ।" "खिलखिला कर हँस पडा सेठ" "और यह तो तुम्हारे बाँये हाथ का खेल है । उससे जान-पहचान बढाना कौन-सी बडी बात है ।···पहले उससे जान-पहचान बढा लो फिर कान भर दो उसके···उधर सन्तू वहाँ से निकाल दिया जाय और इधर···। देखो मालामाल कर दूँगा—अगर मेरा काम बन गया तो ।"

"मैं एक बात नही समझ पा रही हूँ ।"

"क्या ?"

"आखिर उस लडकी मे ऐसी क्या खासियत है कि उसके लिये बिचारे सन्तू के पीछे आप इस तरह पडे हुए है ।"

"यह तुम नही समझ सकोगी सन्ध्या · गम्भीर हो गये सेठ साहब · कुछ देर तक वह खामोश रहे फिर उठते हुए बोले ।"

"आग-सी लगा दी है उस लडकी ने जब तक उसे नही पा लूंगा चैन नही मिलेगा । अच्छा मैं अब चलता हूँ तुम ख्याल रखना ।"

"और सन्ध्या अकेली रह गई ।"

धूप कम होने लगी थी ·दूर आकाश पर कुछ काले-काले बादलो का जमघट लगा हुआ था चुनौती दे रहा था, कि अब हम बरसेंगे । दो परों के दम पर उडने वाले परिन्दे चीं-चीं की मधुर रागनी अलापते हुए अपने नीडों की ओर वापस जा रहे थे ।

बॉलकनी में इसी चेयर पर बैठी हुई थी माया के हाथ में कोई किताब थी ··लेकिन निगाहें किताब पर नही दूर आकाश पर छाये हुये उन्हीं काले बादलों पर लगी हुई थी ।

किताब के मुख्य पृष्ठ पर लिखा था बीते दिन ।·· और शायद बीते दिन । ··ही याद आ रहे थे उसे भी ।

कमरे मे रेडियो बज रहा था यह है तलत महमूद ·बिरहन बैठी आस लगाये···झूठी आस लगाये ·बिहरन···।

दो आँसू टपक पडे माया की आँखो से ।

तभी सामने कार रुकी ·जल्दी से आँसू पूँछ लिये माया ने · कार से कोई उतरा और सन्तू के कमरे की ओर बढ़ा···लेकिन कमरे में ताला लगा हुआ था ।

"उठ कर खडी हो गई माया ।"

"आप ऊपर आ जाइये ।"

"बिना माँगे मोती मिले । तेज कदमो से सन्ध्या ऊपर चली आई ।"

आप किससे मिलने आई थी ·

"जी मिस्टर सुनील या चन्दा से ··वह बैठते हुए बोली ।"

"आप बैठिये जन्दा अभी आती होगी मैंने एक काम से भेजा है माया खुद भी बैठ गई ।

"आपकी तारीफ जान सकती हूँ । बोली सन्ध्या ।"

"जी हाँ· ·मुझे माया कहते है ।"

"ओह तो शायद आप ही के विषय मे सुनील बाबू कह रहे थे ।"

"क्या कह रहे थे ··चौंकी माया ।"

उनसे कहेगी तो नहीं आप···वैसे कह दें तो भी कोई हर्ज नही है···उस दिन वह बता रहे थे कि माया नाम की कोई लडकी है जो उनसे प्यार करती है । और उसी ने उसे कोई नौकरी दिलाई है ।

"जी ।"···चौक पड़ी माया लेकिन तभी सन्ध्या उठकर खड़ी हो गई ।"

"वैसे हो सकता है वह कोई और माया हो अच्छा मैं अभी तो चलती हूँ जरा जल्दी में हूँ फिर मिलूँगी उनसे ।" नमस्ते ।.

लेकिन हाथ न उठ सके माया के सकते मे आ गई थी वह···
एक पहाड-सा टूट पडा था उस पर।

क्या वह सम्भव हो सकता है कि सन्तू गलतफहमी मे पड जाये · वह परेशान थी लेकिन उसकी बातों से तो कभी ऐसा नहीं लगा···झलक तक नही मिली।

तो क्या सन्तू उसे गलत समझ बैठा···क्या किसी से हमदर्दी रखना प्यार कहलाता है उससे बैठा न गया और वह तेजी से अन्दर जाकर गिर पडी पलँग पर···

रेडियो पर बज रहा था।

"झूठा रूप सिंगार।"

× × ×

चाँदनी छिटकी हुई थी—कुछ ही देर पहले बारिश हो चुकी थी और अब सितारे जगमगा रहे थे—पूरे यौवन पर इठलाता हुआ चाँद बाहर निकल आया था—काली डामर की सडक के किनारे, फुटपाथ पर लगे हुए बिजली के बल्बो की रोशनी बड़ी अच्छी मालूम पड रही थी—गीली सडक ··इधर-उधर बारिश का भरा हुआ पानी।

चला जा रहा था विनय···खाली जेब और सूनी निगाहें लिये···

आज वह बेघरबार था· बेआसरा था· ·जेब में खाने के लिये पैसे नही थे और होटल मे पैसे न दे सकने के कारण रहने की जगह नहीं थी।

"इतना अच्छा लेखक आज भटक रहा था भूखे पेट कही सोने के लिये जगह की तलाश में।"

चलते-चलते आखिर आ ही गई इमारत जिसमें अलका रहती थी।

"अलका का प्यार शायद सहारा दे।"

वह ऊपर चला गया—बाहर का दरवाजा भिडा हुआ था।···वह

अन्दर पहुँचा अन्दर के कमरे का दरवाजा भी बन्द था।

बीच की दरार मे से विनय ने अन्दर झाँककर देखा···अलका को कसा हुआ था अपने बाहुपश मे विनोद ने।

तेज कदमो से वह बाहर लौट आया—उसका दिल धडक रहा था।

· यह औरत है या वैश्या क्या फिल्मी समार की हर औरत का जीवन ऐसा ही होता है।

लेकिन फिर एकाएक उसके विचार बदल गये—इसमे दोष किसका है क्या इन लडकियो का—अपने पेट के लिये कौन क्या नही करता। गुनाहगार है यह समाज-फिल्मी दुनियाँ के यह स्तम्भ जिन्हे लोग महान् कहते है।

'पेट से मजबूर खूबसूरत फूलो को यह जालिम मसल डालते है उनकी मजबूरी का नाजायज फायदा उठाते है।"

उसके कदम ढीले पड गये—कुछ अजीब-सी बाते आ रही थी दिमाग मे। वह अलका से पूछना चाहता था कि ऐसे जीवन से वह निकल क्यो नही भागती। क्यो हिन्दू-समाज की अन्य नारियाँ विवाह के बन्धन मे बंधकर पति को भगवान मानकर दो सूखी रोटियो मे गुजारा नही चलाती। •

क्या जीवन मे कार, रेडियो, आलीशान हवेली और ऐशोइशरत इन्ही की अधिक कीमत है।

वह लौट पडा उसने निश्चय कर लिया था आज वह पूछकर ही रहेगा अलका से।

लेकिन एकाएक अलका के घर के पास जाकर रुक गया ठीक भी था विनोद के सामने वह वहाँ जाता न था।

सामने सिगरेट की दुकान थी और जेब मे छ पैसे।·· यही सही और उसने सिगरेट की दुकान से स्टार की आधी पैकट ले ली। एक सिगरेट मुँह से लगाकर बैठ गया वह वही पडी हुई बैंच पर।

एक घण्टा गुजर चुका···तब कही जाकर नीचे उतरा विनोद···

जब कार की आवाज काफी दूर निकल गई तब वह उठा ·।

अलका वैसे ही लेटी हुई थी आँखें बन्द थी। पैरो की आवाज सुन कर उसने आँखे खोल दी।

"अरे तुम···मै डर गई थी पता नही कौन घुस आया।"

"चोर।" और वह बैठ गया इसी चेयर पर।

"उतनी दूर क्यो बैठे हो ?"

"अब दूर ही बैठा करूँगा ?"

"क्यो।"

वह कुछ न बोला· अलका उठकर उसके पास आई वह फिर भी खामोश रहा।

"क्या बात है आज।"

"ऐसे ही इरादे कुछ बदले हुये हैं···मुझे तुमसे पूछना है—लेकिन एक शर्त पर।" बोला विनय।

"क्या ?"

"तुम बुरा तो नही मान जाओगी।"

"जो कुछ मैं पूछूँगा उसका।"

"नही।"

"तो फिर बैठा।" और वह बैठ गई। कुछ देर तक वह खामोश रहा फिर उसने कहना शुरू किया।

"तुम यह तो जानती ही हो अलका कि मैं एक लेखक हूँ और एक लेखक को अगर किसी कहानी के लिये जरा-सा सहारा मिल जाय तो फिर वह उसकी गहराई तक पहुँचने की चेष्टा करता है।"

तुम्हारा मुझसे जो कुछ सम्बन्ध था उसके लिये मैं यही सोचता था कि तुम मुझे प्यार करती हो और प्यार मे सब कुछ किया जा सकता है। लेकिन वे विचार आज एकाएक बदल देने पडे जब मैंने तुम्हे विनोद जी के आलिंगन मे बँधा हुआ देखा।

"तुम उस समय कहाँ थे चौंक पड़ी अलका।"

"मैं उसी समय का आया हुआ हूँ ··लेकिन तुम्हे ऐसी हालत में देखकर वापस लौट गया था।"

"ओह।" और अलका ने दोनो हाथो से अपना मुँह ढाँक लिया।"

"तुम परेशान क्यो हो गईं···मैं जानता हूँ अलका इसमे तुम्हारा कोई दोष नही है आज के युग मे इन्सानो ने अपना धर्म बना लिया है दूसरो की मजबूरी का फायदा उठाना·· और उसी की शिकार तुम हो गई इसमें तुम्हारा कोई पाप नही ·।"

अगर मैं तुम्हे दोषी समझता तो शायद लौटकर तुम्हारे पास न आता लेकिन मुझे तो तुम्हारे इस विषय मे बहुत कुछ पूछना था।

हाँ तो मैं तुम्हारे विषय मे कुछ जानना चाहता हूँ अलका।

तुम क्या थी ऐसे जीवन मे तुमने प्रवेश क्यो किया · तुम पर उस समय क्या गुज़री और तुम्हें क्या इस जीवन मे खुशी मिलती है।

लेकिन तुम जो कुछ कहो परदा हटाकर कहना ··क्योकि मैं सब कुछ जानना चाहता हूँ।

वह खामोश हो गया· जेब मे से सिगरेट निकाल कर सुलगा ली ··।

"बोलो अलका।"

लेकिन जवाब मे अलका के मुँह से एक हल्की-सी सिसकी निकल गई।

"यह क्या छि यह तो पागलपन है··· ।"

पागलपन नही लेखक···वह अटकते हुए बोली। "तुमने आज दिल के उस तार को छेड दिया है ·जिसके बजने से दर्द बेकाबू हो जाता है।"

मै जानता हूँ अलका···खैर रहने दो अगर इसमे तुम्हे दुःख होता है तो नही पूछूंगा···

"नही मैं तुम्हे बताऊँगी आज···आज सब कुछ बताऊँगी और उसने अपनी आँखें पोछ ली।"

"मैं लखनऊ की रहने वाली हूँ···मेरा असली नाम हमीदा है ··

अम्मीजान जब मैं दस साल की थी तभी चल बसी थी···और अब्बाजान ने दूसरी शादी कर ली थी दूसरी अम्मी मुझे नही चाहती थी।"

जीवन के सत्तरह साल तो किसी तरह गुजर गये···लेकिन जवानी का खून अम्मी का जुल्म न सह सका···और मैं चुप-चाप बम्बई वाली गाडी पर बैठ गई।

यहाँ आकर तीन दिन तक तो मैं एक होटल मे रुकी रही·· लेकिन जब देखा कि पैसे खत्म होने लगे हैं तो कोई कमरा ढूँढने लगी। उसी तलाश मे मेरी जान-पहचान चाँद बीबी से हुई जो एक्स्ट्रा सप्लायर थी। · उसने मुझे अपने नजदीक ही एक छोटी कोठरी दिला दी और मुझे विनोद जी से मिला दिया।

विनोद जी ने मेरा स्क्रीन टैस्ट लिया· ·डान्स देखा और फिर अपनी फिल्म मे काम करने को दे दिया। मैं बहुत खुश थी वह करीब दो हफ्ते बाद की बात थी।

उसी शाम को चाँद बीबी ने मुझसे कहा कि विनोद जी ने मुझे रायल होटल मे बुलाया है। · मुझे रायल होटल मालूम नही था .इस-लिये चाँद बीबी के साथ गई।···मुझे वहाँ पहुँचाकर जब वह चलने लगी तो बोली—

"अगर तरक्की करनी हो तो किसी बात मे झिझकना मत।"

मैं कुछ समझ न सकी अपने में ही खोई हुई जब मैं कमरे मैं पहुँची तो विनोद जी वहाँ मौजूद थे ··देखते ही उन्होने मुझे सीने से लगा लिया। ··मैं हडबडा कर पीछे हट गई।

"शर्म नही आती आपको···किसलिये बुलाया था आपने मुझे···" मैंने कहा और जवाब मे दरवाजा बन्द करते हुए उन्होने कहा इसलिए बुलाया था।···मुझे जाने दीजिये···मैंने कहा और उन्होने फिर से मुझे जबरदस्ती पकड़कर कहा—फिल्म मे काम नही करना है क्या··· ।"

मैंने अपने आपको छुडाने की कोशिश की तो बोले यहाँ तुम चीख-

चीखकर मर जाओगी तब भी कोई नही आयेगा—अब अच्छा यही है कि तुम सीधी तरह मान जाओ।

मैं मजबूर थी इधर मेरी आँखो से आँसू टपक रहे थे और उधर अस्मत लूटी जा रही थी।

"दूसरे दिन मुझे काम मिल गया।"

कुछ देर के लिए अलका खामोश हो गई।

"अब मैं इशारे मे समझाये देती हूँ कि उसके बाद मुझे बहुत जगह सौदा करना पडा क्योकि घर लौटकर जा नही सकती थी ··मेकपमैन ने कहा मैं मेकप बिगाड दूंगा। कैमरामैन ने कहा मैं फोटोग्राफी बिगाड़ दूंगा और फिर प्रोड्यूसर तो प्रोड्यूसर ही ठहरे।

मुझे सब के आगे सर झुकाना पडा और अभी तक झुकाना पड रहा है।

यह है मेरी कहानी और मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि यहाँ की हर औरत की ऐसी ही कहानी होगी।

कुछ देर तक खामोशी का आलम रहा विनय ने ठन्डी स्वाँस भर कर एक सिगरेट और सुलगा ली और फिर उठता हुआ बोला—

"अच्छा अब चलूं।"

"अब इतनी रात गये कहाँ जाओगे यही सो जाओ।"

और कुछ सोचकर बोला विनय अच्छा तो बिस्तर लगा दो दूसरे कमरे मे।

× × ×

दिन गुजरते चले गये ··दुनियाँ का हर कारोबार उसी रफ्तार से चल रहा था···इन्सान बदल गया था लेकिन जमाना ·।

किराये पर लिए हुए नये मकान के बाहर वाले कमरे को साधारण रूप से सजा दिया था चन्दा ने और मकान के बाहर एक साइनबोर्ड भी लटक गया था जिस पर लिखा था "सुनील बी० ए०।"

बैठा हुआ अखबार पढ रहा था सन्तू शाम हो चुकी थी अन्धेरा हवा उडते हुए आँचल की तरह लहराने लगा था···अन्दर चन्दा के गुनगुनाने की आवाज आ रही थी —

"मैया मैं नही माखन खायो।"

एकाएक चौक पडा सन्तू—अखबार मे विज्ञापन था···फिल्म जगत की अनूठी भेंट टूटे तार १५ अगस्त को सम्पूर्ण भारत मे प्रदर्शित दिग्दर्शक—विनोद ' सम्वाद व कथा—विनय ।

"चन्दा···चीख-सा उठा सन्तू ।"

"क्या हुआ भैया ' दौडी आई वह ।"

"यह देखो भैया की पिल्म १५ अगस्त को रिलीज हो रही है··· उनका नाम भी दिया है ।

और चन्दा ने हर्ष व उत्साह से काँपते हाथो से अखबार पकड लिया सन्तू फूला न समा रहा था—मानो उसी का नाम अखबार में छापा गया है ।

"मै माया को दिखा दूँ जाकर ।"

"लेकिन अब रात हो गई है कल दिखा देना जाकर—"

"दूर ही कितना है मैं तो आज ही जाऊँगी सच भैया कितनी खुश होगी बोलो चली जाऊँ ।

"अच्छा जा" लेकिन जल्दी आ जाना रात होने वाली है ।

और हिरनी की तरह छलागे मारती हुई वह बाहर की ओर भागी ।

बाजार पार करने के बाद इस मोड से उस मोड तक सड़क सुनसान पड़ी हुई थी—आज शायद बिजली मे कुछ गडबड़ हो गई थी । कदम रुक गये चन्दा के । इस अँधेरे मे अगर उसका कोई गला भी घोट दे तो कोई चीख सुनने वाला भी नही है—एक बार तो काँप सी उठी वह—अखबार को उसमे कस के भींच लिया और फिर हिम्मत करके वह आगे बढी ।

तभी पीछे से कार की रोशनी आने लगी—जान-में-जान आई

चन्दा के—जब तक यह कार गुजरेगी तब तक रोशनी रहेगी ही और फिर आधा रास्ता रह जायगा—उसने चाल और तेज कर दी।

कार समीप आ गई थी—वह एक ओर को दब गई लेकिन यह क्या उसने चौककर पीछे देखा कार भी उसके पीछे-पीछे आ गई थी बहुत ही कम रफ्तार पर। वह खडी हो गई और तभी कार की रोशनी बुझ गई।

काँप उठी चन्दा भावी आशका से भागने के लिये उसने कदम उठाया ही था कि दो बलिष्ट भुजाओ ने उसे पकड लिया—चीखने की चेष्टा की तो मुँह पर हाथ रख दिया गया।

कार चली जा रही थी पीछे की सीट पर पडी थी मासूम चन्दा दोनो हाथ बँधे हुए थे मुँह मे कपडा भर दिया गया था।

दिल की धडकने कार की रफ्तार के साथ चल रही थी—और फिर कुछ ही देर मे कार रुक गई—दो आदमियो ने मिलकर उसे उतारा—दोनो के चेहरे ढके हुये थे।

और उन जालिमो ने उसे अन्दर ले जाकर एक पलग पर पटक दिया।

"वैसी ही पडी रही चन्दा" ··कमरा बाहर से बन्द कर दिया गया था—परेशान थी कि उधर भैया इन्तजार कर रहे होगे—अब क्या होगा ?···कौन लोग हैं यह ? पता नही मेरे साथ क्या व्यवहार करें।

तरह-तरह के विचार उसके दिमाग मे आ जा रहे थे।

तभी धीरे से दरवाजा खुला और बन्द हो गया—सेठ साहब खड़े हुए थे होठो पर बेरहम मुस्कान लिए।

चौक पड़ी चन्दा · अब उसके समझ मे आ रहा था···अपने हर सवाल का जवाब खुद ही मिल गया था उसे।

"राम राम" क्या हालत करी है···इस मासूम के मुँह पर कपड़ा···जिसके बोलने में शबनम बरसता हो।

और सेठ साहब ने आगे बढकर उसके मुँह से कपडा निकाल दिया।

"तुम चाहते क्या हो आखिर ?" तडप उठी चन्दा।

"जो पहले चाहता था।"

"शर्म नही आती तुम्हे—कुत्ते कमीने कहीं के क्या तुम्हारे माँ-बेटियाँ नही है ?"

यह तो आम बात हो चुकी है—सभी इसी तरह कहा करते हैं। खैर तुम कहती हो मैं अपनी मनचाही करता रहता हूँ।

"यह कहकर सेठ साहब ने लाइट बुझा दी।"

"छोड दो मुझे मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ···जालिम···

और कुछ देर मे सब कुछ शान्त हो गया। लाइट फिर से जल गई थी—सेठ साहब कुर्सी पर बैठे हुये सिगरेट सुलगा रहे थे और तकिये मे मुँह छिपाये सिसक रही थी चन्दा।

हैरान सा था सन्तू—दो घन्टे से अधिक बीत चुके थे और चन्दा अभी तक नही लौटी थी—उसका माथा ठिनका—और मकान मे ताला डालकर चल दिया माया की ओर।

माया खाना खाकर उठी ही थी—आजकल तबियत खराब होने के कारण दिन-रात वह पलग पर ही लेटी रहती थी।

तभी तेजी से हाँफता हुआ सन्तू ऊपर आया—चौककर उठ बैठी माया।

"चन्दा कहाँ है ?"

लेकिन माया आश्चर्य से मुँह देखती रह गई सन्तू का।

"मैं पूछ रहा हूँ चन्दा कहाँ है ?"

"मालूम नही।"

"यहाँ नही आई।"

"नही तो···लेकिन बात क्या है··तुम इतने घबराये हुए क्यो हो ?"

दो घन्टे हो चुके हैं जब वह घर से निकली थी आपके यहाँ आने के लिये और अब तक वापस नही लौटी है।

"क्यो ?"...उठ कर खडी हो गई माया। तो खड़े-खड़े क्या देख रहे हो...पुलिस मे खबर करो—नीचे से गाडी ले लो...या ठहरो मैं भी चलती हूँ और वैसे ही पैर मे चप्पल डालकर वह नीचे की ओर भागी।

पुलिस मे रिपोर्ट लिखा कर माया ने सन्तू को उसके घर छोड दिया—और कार फिर चल दी माया के बगले की ओर।

साँय-साँय करते हुये हवा के झोके वीरान खडहरो से टकरा रहे थे—अधेरा मौत के आँचल के समान बढता चला जा रहा था—हाथ-को-हाथ नही सूझता था—चाँद काले बादलो की ओर आ छिपा था। शायद धरती पर होने वाले पापो से काँप कर...बिजली बीच-बीच मे कड़क उठती थी ताकि काले बादलो को धरती वाले देख सकें।

और ऐसे सन्नाटे मे सन्तू के कदम उठते चले जा रहे थे उस खडहर के अन्दर...बच-बच के चलना पड़ रहा था...क्योकि अन्धेरे मे यह भी नही दिखता था कि किधर पत्थर है और किधर गड्ढा।

और आखिर धीरे-धीरे वह आ ही गया उस कमरे के सामने उसने छिपी हुई बैल पर हाथ रखा और कुछ ही देर मे दरवाजा खुल गया।

"कौन सुनील ?"

"हाँ मैं।" वह अन्दर चला आया—दरवाजा फिर से बन्द हो गया था।... कुछ देर तक खामोशी छाई रही और सिगरेट सुलगाते हुये बोला रमेश।

"कहो कैसे आना हुआ ?"

"चन्दा के विषय मे तुमसे मैं शायद पहले भी जिक्र कर चुका हूँ।"

"हाँ...हाँ...क्या हुआ उसे ?"

"आज शाम ढले वह माया के यहाँ जाने को निकली थी...तब

से लौटकर नही आयी है···न ही माया के यहाँ पहुँची है ।"

"तो फिर·· ···।"

"क्या हो सकता है ?"

कुछ देर तक खामोशी छायी रही ।

"मुझे तो उसी सेठ पर शक होता है ।"···बोला रमेश—

"तो फिर अब क्या किया जाय ?"

"कल तक और इन्तजार करो···नही तो फिर धावा बोलना पड़ेगा ।"

"जैसा तुम ठीक समझो लेकिन यह मेरा फैसला है रमेश कि अगर यह बात सच निकली तो मैं उस कुत्ते का खून कर दूंगा ।"

"एकाएक जोश ठीक नही ··कल तक इन्तजार करो फिर फैसला करेंगे ।" और निराश कदमो से दिल मे भड़कती हुई आग को दबाये सन्तू वापस लौट आया ।

× × ×

सेठ साहब का अरमान पूरा हो चुका था—और अब वह इस कोशिश मे थे कि चन्दा उनकी हमेशा-हमेशा के लिये हो जाये—रात काफी गुजर चुकी थी मन-ही-मन मे जवाब सवाल सोचते हुये उन्होने बाहर से दरवाजा खोला ।

वह अब भी उसी तरह तकिये मे मुँह छिपाये पडी थी । सेठ साहब उसके एकदम करीब बैठ गये—अगुलियाँ चन्दा के बालो में उलझ गई ।

"जो होना था वह हो चुका चन्दा···अब ग़म करने से फायदा क्या ? लेकिन सच पूछो मैं तुम्हें बरबाद नही करना चाहता ।" कुछ देर वह खामोश रहे लेकिन चन्दा उसी तरह पड़ी रही ।

"अब तुम्हीं सोचो अगर तुम माँ बन गई तो दुनिया पूछेगी ··

तुम्हारा पति कौन है ''इस बच्चे का बाप कौन है उस समय तुम क्या कहोगी। तुम्हारा जिन्दा रहना कठिन हो जायेगा—सही माने में तुम बरबाद हो जाओगी'''लेकिन मैं यह नही चाहता'''मैं तुमसे प्रेम करने लगा हूँ इसलिये यह हमदर्दी महसूस होती है—अगर तुम अपने भाई को ''इस दुनियाँ को भुला दो'''तो मैं तुम्हें अपना बना सकता हूँ—खुशी से यहाँ रहो'''और कुछ दिनो बाद मैं तुमसे शादी कर लूंगा।"

"लेकिन वह फिर भी खामोश पड़ी रही।"

"बोलो मेरी रानी।"

"मुझे भूख लगी।"

"और तो पहले क्यो नही कहा ''ठहरो मैं अभी खाना मँगवाता हूँ।"

और जोश में सेठ साहब दरवाजा खुला छोडकर चले गये।

निकल भागी चन्दा—गेट पर चौकी पर अन्धेरा था—दबे पाँव बाहर निकल गई।

और इस रात मे लुटी हुई अबला तेजी से चली जा रही थी—अन्धेरे मे रास्ते का पता नही चल रहा था फिर भी उसके कदम उठे जा रहे थे—दिल की धडकनें बढी हुई थी।

तभी उधर से एक रिक्शे वाला निकला—पहले दिल मे आया चन्दा के कि रिक्शे पर बैठ जाय—लेकिन तभी ख्याल आया इतनी रात और सन्नाटे मे यह रिक्शे वाला कही और न ले मरे और वह खामोशी से बढ़ती रही।

"कहाँ जाना है।"

"मैं चली जाऊँगी।"

"जाना कहाँ है आपको।"

"परमट।"

"परमट यहाँ से तीन मील है बाई जी—चलो पहुँचा दूं।"

"नही मैं चली जाऊंगी।"

"क्यों डर लगता है हँसा रिक्शे वाला गरीब आदमी हूँ मेरे भी तुम जैसी बहन-बेटी हैं चलो बैठो ।"

"और हिचकिचाते हुये बैठ गई चन्दा ।"

सन्तू को नीद नही आ रही थी—बेचैनी से वह इधर-उधर टहल रहा था तभी दरवाजे पर किसी ने थपकी दी । तेजी से लपका वह दरवाजे की ओर—और दरवाजा खुलते ही चन्दा उसने लिपटकर सिसक उठी ।

"चन्दा ।"···चीख उठा सन्तू···कहाँ थी तू अब तक·········
···चल अन्दर चल···और उसने उसे अन्दर कर दरवाजा बन्द कर लिया ।

"पलंग पर गिर पड़ी वह ।"

"सच-सच बता कहाँ थी अब तक ?"

"भैया···सिसक उठी वह और तब प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुये कहा सन्तू ने ।"

"घबरा मत शान्ति से बता क्या बात है ।"

एक बार बच गई थी भैया···लेकिन आज तुम्हारे सेठ के हाथों से न बच सकी ।

"चन्दा । चीख उठा सन्तू···लेकिन उसने सिसक कर तकिये में मुँह छिपा लिया ।"

आग सी लग गई थी सन्तू के दिल मे उसका गर्म खून खौल-खौल कर उसे कुछ कर मिटने पर मजबूर कर रहा था···और तेजी से वह दूसरे कमरे की ओर बढा—बक्स खोलकर उसने कुछ निकाला और फिर दबे पाँव निकल गया कमरे से बाहर ।

सेठ साहब परेशानी से कमरे मे टहल रहे थे—आदमियों को भेज दिया था उन्होंने चन्दा को पकड़ने के लिये—डर था कही पुलिस तक न चली जाय ।

रईस आदमी इज्जत से भी इसलिये डरा करते हैं कि इज्जत चला जाने पर उन्हे पैसा कम मिलता है···और अगर उन्हें कोई यह विश्वास दिला दे कि इज्जत जाने पर उन्हे और पैसा मिलेगा तो शायद वे खुले आम सडको पर अपनी इज्जत लुटाया करते।

बस इसी तरह धक्-धक् हो रही थी उसके दिल मे और तभी खिडकी से किसी के कूदने की आहट से वह चौककर वह खड़े हो गये।

सन्तू खडा था हाथ मे चमकता हुआ छुरा लिये। दम खुश्क हो गया उनका।

"तुम।"

"हाँ मैं···लेकिन तुम्हारे चेहरे का रंग क्यो उड़ गया—इसलिये न कि तुम सिर्फ चूडियाँ पहनने वाली मासूम लडकियो को डरा धमकाकर उनकी अस्मत ही लूटना जानते हो और कुछ नही लेकिन क्या तुमने सोचा था कि मेरी बहन की कीमत क्या होगी।"

"मैं···मैं तुम जो चाहो···दे···दे सकता हूँ पाँच दस···पन्द्रह··· बीस हजार।"

"कुत्ता कही का···जलील यह कीमत तो तेरी भी नही है···।"

"तो···तो···फिर तुम कितना चाहते हो।"

"मैं तुम्हारी जान लेना चाहता हूँ···तुम्हें कुत्ते की मौत मारना चाहता हूँ।"

"मैं···मैं···पुलिस को फोन कर दूँगा।" और वह फोन की ओर बढ़ा।"

फोन नीचे रख दो···वह डायल घुमाने लगा···और तब न सँभाल सका सन्तू अपने को और···

"आह···मार···डाला···।"

एक···दो···तीन···बार छुरा आर-पार हो चुका था।

चौककर उठ बैठी चन्दा। सन्तू खड़ा था···हाथ मे खून से भरा हुआ छूरा लिये।

"भैया चीख पडी चन्दा···यह क्या किया तुमने।"

खून उस जानवर का खून जो कि इन्सानियत के काम पर कलंक था।

"लेकिन अब तुम्हारा क्या होगा भैया। कॉप रही थी चन्दा।"

"पगली कही की·· देख अब घबराने से काम नही चलेगा···। मेरा इस समय यहाँ रहना ठीक नही है···दो-तीन दिन के लिये मैं यहाँ से चला जाता हूँ अगर तुमसे कोई पूछने आये तो कह देना बम्बई गये है काम से और देख घबराने की ज़रूरत नही है क्योकि उससे किसी को शक पड़ सकता है···।

"तो तुम आओगे कब।"

"मैं जल्दी ही आऊँगा···अच्छा मैं चलता हूँ···और होशियारी से रहना···नहीं तो तू ऐसा कर···कुछ दिनो के लिये माया के यहाँ चली जा···उसे कुछ न बताना कह देना बम्बई गये है। दरवाजा बन्द कर ले।

और वह तेजी से रात के सन्नाटे मे चन्दा की आँखो से ओझल हो गया···देखती रह गई चन्दा।

× × ×

बम्बई गये हैं और मुझसे मिलकर नही गये···हो सकता मुझे काम ही होता।

"मैंने कहा तो था लेकिन पता नही क्यो···बोले मैं बहुत जल्दी मे हूँ।"

"मेरे ख्याल से तो पिताजी से भी नही कहा है क्योकि छुट्टी के लिये कहकर तो जाना चाहिए था।"

लेकिन चन्दा ने कोई उत्तर नहीं दिया—वह डर रही थी कि घब-राहट मे कही उसके मुँह से ऐसी-वैसी बात न निकल जाये जिससे राज खुल जाय।

"अरे···चौककर सीधी बैठ गई माया।"

"क्या हुआ ?"

"यह देखो···कल रात किसी ने रोशनलाल सेठ की हत्या कर डाली···पुलिस परेशान है कि हत्या क्यों की गई—क्योकि उनके घर से एक पैसे का सामान इधर-से-उधर नही हुआ···इसलिए अनुमान है कि यह चोरी या डाका नही बल्कि किसी दुश्मनी के कारण यह हत्या की गई है···कातिल ने अपने पीछे कोई निशान नही छोड़ा है···दौड़-धूप जारी है।"

"काँप-सी रही थी चन्दा···माथे पर पसीने की बूंद चमकने लगी थी···हृदय की धडकन···ट्रेन की बढती हुई गति की तरह बढ़ती जा रही थी।"

इन्सान भी क्या अजीब चीज है चन्दा। माया ने फिर से कुर्सी पर पीछे सहारा लेते हुए कहा।

अपने ही जैसे हड्डी और मांस के बने हुए खिलौने को किस बेरहमी से तोड-फोड देता है उस समय उसे यह ख्याल नही आता कि उसी की तरह वह खिलौना भी किसी ने कितने अरमानो से बनाया होगा··· फिर उस खिलौने के सहारे कितने लोगों का जीवन आश्रित होगा··· और फिर यह नहीं सोचते कि खून के धब्बे मिटाये नहीं मिटते· आज नही तो कल सामने आ ही जाते हैं। पुलिस की निगाहो से बचना आसान नही है···जब पकड़े जायेंगे तब ?

"तब क्या होगा ?"···चौककर बोली चन्दा।

"जो बुरे कारनामों का अंजाम होता है।"

"तो क्या वास्तव में पुलिस की नजरो से बचना मुश्किल है।"

"असम्भव होता है पगली···और तभी एकाएक माया की नजर

चन्दा पर गई···जो काँप रही थी··चेहरा पीला पडता जा रहा था।

"तुझे क्या हो रहा है चन्दा।"

"कुछ नही···कुछ भी तो नही।"··उसने अपने आप को सभालने की चेष्टा की।

"फिर तेरा चेहरा पीला क्यो पड़ता जा रहा है।"

"पीला···अ···कहाँ··नही तो··मैं । यह उठकर खडी हो गई··"

"मेरी तबियत ठीक नही है उसने आगे बढना चाहा···लडखडायी सम्भली···और भागकर वह कमरे मे बिछे हुए पलंग पर जाकर गिरी माया भी तेजी से पीछे-पीछे भागी।"

"हुआ क्या आखिर ?···लेकिन वह खामोश रही आँखे बन्द थी माया ने सीने पर हाथ रख कर देखा। हृदय की गति तेजी से चल रही थी···कपोलो पर हाथ रखा जल रहे थे बुरी तरह।"

"अरे तुझे तो बुखार है और वह तेजी से दूसरे कमरे की ओर बढी।

डाक्टर का नम्बर··एँगेज्ड था··तीसरी बार डायल घुमाने पर कही डाक्टर से बात हो सकी—उसके बाद माया ने सेठ जी को फोन किया और कुछ देर बाद डाक्टर और सेठ जी दोनो चन्दा के पास खड़े थे।

"इसे कोई भारी सदमा पहुँचा है···और एकाएक बढ गया है···अच्छा हुआ आपने फौरन बुला लिया मुझे।

और डाक्टर ने बैग खोलकर दो इन्जैक्शन एक साथ बेहोश पडी चन्दा के लगा दिये।

डाक्टर के जाने के कुछ देर बाद होश आया···चन्दा को सून निगाहो से वह चारो ओर देख रही थी। रह-रहकर एक ही ख्याल आता था उसे कहीं भैया पुलिस के चक्कर मे पड़ गये तो।

"कैसी तबियत है अब ? पूछा माया ने···।"

"ठीक है·· लेकिन माया को सन्तोष न हुआ इतने से उत्तर से। आखिर उसे भी भगवान् ने सोचने की शक्ति दी थी···वह खबर सुनते-सुनते एकाएक चन्दा को ऐसा क्यो हो गया····· ।"

"तू मुझसे कुछ छिपा रही है चन्दा·· वह बोली और एकाएक फिर से चौक पडी चन्दा।"

"नही तो·· मैं क्या छिपाऊँगी ।"

"मुझे गैर समझती हो क्या ?"

"नही तो आप यूँ ही मन छोटा कर रही है अगर कोई बात होती तो भला मैं आपसे क्यो कर छिपाती ?"

"कुछ भी हो चन्दा·· लेकिन मुझे भी भगवान् ने दिमाग दिया है ·· परिस्थिति को देखकर इन्सान को थोडी बहुत झलक तो मिल ही जाती है·· अब तू ही बता· अच्छी खासी बैठी हुई थी एकाएक ऐसी खबर सुनकर तुझे क्या हो गया · पहले तो कभी ऐसी हुआ नही ।"

चन्दा के पास कोई जवाब नही था वह खामोश हो गई।

अगर तेरा कोई राज है भी तो क्या वह मेरे लिये नही है · मैं तो यही समझती हूँ कि अगर तुम पर कोई आपत्ति आती है तो वह तुम पर नही वरन् मुझ पर आयेगी हो सकता है बता देने पर कुछ सहायता ही कर सकूँ—फिर गम बता देने से मन हल्का हो जाता है।

"मैं मजबूर हूँ हाँ राज़ अवश्य है लेकिन उसे मुझसे मत पूछिये · ·मै आपके हाथ जोडती हूँ· ·और वैसे समय आने पर आपको सब से पहले पता लग जायेगा। ·और अनायास ही सिसकने लगी चन्दा।

"उसके सिर पर हाथ फेरते हुये बोली माया।"

"पगली···तो इसमे रोने की क्या बात है···मैं तुझसे जबरदस्ती थोडी ही कर रही हूँ।···अच्छा मैं तेरे लिये दूध लेकर आती हूँ।"

वह उठकर अन्दर चली गई और एक बार हल्की-सी सिसकी लेकर चन्दा ने तकिये मे मुँह छिपा लिया।

× × ×

आज पूरे सात माह बाद विनय को सन्तू चन्दा और माया की याद आ रही थी "काश वे इस समय यहाँ होते।"

टूटे तार···फिल्म का प्रीमियर शो चल रहा था। बराबर मे अलका बैठी हुई थी जो व्यस्त थी अपना अभिनय देखने मे। विनोद अपने साथ के डायरेक्टरो मे दिग्दर्शन सम्बन्धी बातें करता जा रहा था।

लेकिन विनय।······

रह-रहकर उसके ख्याल इस समय कानपुर मे दौड लगा रहे थे। ···कितने दिनो से उसने खबर तक नही ली···पता नही कैसे होगे वे सब क्या सन्तू फिर से रिक्शा चलाने लगा होगा···पैसे तो भेज नही पाया तो वह ··तब फिर वहाँ खर्चा कैसे चलता होगा।

अचानक ही हाल में तालियाँ बज उठी।···कोर्ट मे मजदूर पक्ष के वकील की और सरकारी वकील से बहस हो रही थी।

एक-एक डायलाग पर रह-रह कर तालियाँ बज उठती थी।

"डायलाग बहुत अच्छे लिखे हैं तुमने बोली अलका ··।"

"क्या अच्छे है।"

"देख लेना···सवेरे ही अखबार मे तारीफ छप जायेगी।"

"लेकिन उसने कोई उत्तर नही दिया। शो समाप्त हुआ—सब विनोद को बधाइयाँ दे रहे थे—अलका का अभिनय काफी सफल रहा था—हाथो हाथ तीन फिल्मो मे काम मिल गया उसे।

और जिस समय टैक्सी में विनय और अलका वापस लौट रहे थे—तो विनय सोच रहा था कि उसे किसी ने पूछा तक नहीं—लेकिन अलका के दिमाग मे कुछ और ही था।

घर पहुँचते ही जब अलका से न रहा गया तो वह कह बैठी विनय को अपने कमरे की ओर जाता देखकर—

"अगर मैं कहूँ कि आज तुम इसी कमरे मे सो जाओ तो क्या तुम टाल दोगे ?···।

"लेकिन क्यो ?"

"मैं जानता हूँ ··तुम क्या कहना चाहती हो···बोला विनय।

"क्या ?"

"कि अब तुम्हे तीन फिल्मो मे काम मिल गया है और मैं अपना यही रहने का इन्तजाम कर लूं।—लेकिन तुम्हे यह कहने की आवश्यकता ही नही पडेगी।"

और अलका के कुछ कहने के पहले विनय अपने कमरे मे जा चुका था। एक ठण्डी श्वास खीचकर रह गई अलका।

"ओह"···वह तेजी से उठी···बाथरूम की ओर जाते समय अचानक ही निगाहे विनय के कमरे की ओर पड़ गई।

वह सामान बाँध रहा था···सूनी-सी आँखे लिये वह आगे बढी।

"कहाँ की तैयारियाँ हो रही है।"

"कही की नही।

"फिर यह सामान क्यो बाँधा जा रहा है।"

"मैं जा रहा हूँ।"

"कहाँ ?"

"जहन्नुम मे ··चीख पड़ा विनय···तुम्हें आखिर इसमे क्या लेना देना·· मैं कही भी जाऊँ।"

"क्या मुझे कोई मतलब नही है क्या मुझे कुछ भी पूछने का अधिकार नही है।"

"तुम्हें केवल यहाँ से निकालने का अधिकार है···और मैं वैसे ही जा रहा हूँ।

"किसने कहा है तुमसे निकलने के लिये।"

हर बात कहने से नही समझी जाती···इस फिल्म ससार का हर इन्सान ऐसा ही है···कल विनोद जी ने मुझे निकाल दिया है और यही तुम्हारे दिल मे भी था···

"विनोद जी ने निकाल दिया।"

"जी हाँ ··अब वह कहानी किसी और से ले रहे हैं।"

तो तुमने मेरे विषय मे अपने आप ही ऐसे ख्यालात बना लिये।

लेकिन विनय ने कोई उत्तर न दिया वह सामान बाँधता रहा।

"तुम नही जाओगे।"

"मुझे रोकने वाली तुम कौन हो ?"

"जिस समय तुमने मुझे सहारा दिया था उसी समय तुम्हे रोकने का अधिकार भी दे दिया था और यह भी सुन लो कि जबरदस्ती तो मैं तुम्हे रोक न सकूँगी···लेकिन इधर तुम जाओगे और उधर मेरी लाश उठेगी।"

"और आई हुई सिसकी को न रोक सकने के कारण वह कमरे से भाग गई।"

पशोपश मे पड गया विनय···उसे क्या लगाव है मुझसे···प्यार इन फिल्मी तारिकाओं का दिल बहलाव है···इसलिए इनसे यह आशा करना कि शायद प्यार करती हों···एकदम व्यर्थ है···फिर आखिर क्यो रोक रही है यह।

बहुत देर तक बैठा-बैठा सोचता रहा फिर अनायास ही उसके कदम अलका के कमरे की ओर बढ चले।

वह पलग पर पडी हुई थी···मुँह तकिये मे छिपाया हुआ था।

"कल तुम कुछ कहना चाह रही थी।"

"कहने का अवसर कब दिया तुमने।"

'अब कहो क्या बात है ?"

कुछ देर तक वह वैसे ही खामोश लेटी रही फिर एकाएक तेजी से उठकर बैठ गई।

"मैं तुम्हे यहाँ से निकालना नही चाहती थी···बल्कि हमेशा के लिये एक धागे मे बाँध लेना चाहती थी ताकि तुम फिर कभी भी यहाँ से जा न सको।"

"मैं समझा नही।" चौका विनय।

"साफ-साफ सुनना हो तो सुनो फिल्मो मे मैं काम अवश्य करती हूँ लेकिन मेरा दिल वहाँ के वातावरण से परे है···मुझे एक जीवन-साथी की आवश्यकता है जो इस जिन्दगी को सहारा दे सके और उसके लिये मैंने तुम्हे चुना है मै जानती हूँ तुम्हे पाना मेरे लिये उतना ही कठिन है जितना भगवान् को पाना लेकिन फिर भी मैं तुमसे कहना चाहती थी।"

"तुम पागल हो गई हो। बोला विनय।"

"मुझे मालूम था तुम यही कहोगे · ।"

कहाँ तुम और कहाँ मैं जमीन आसमान का अन्तर है · लेकिन तुम तो लेखक हो सुना है और पढा है कि लेखक ही एक ऐसा इन्सान होता है जो समाज की दीवारे तोड देता है·· जिसके आगे समाज की रूह काँपती है···लेकिन क्या यह सब लिख देना ही कहा जायेगा क्या वास्तव मे लेखक ऐसा नही कर सकते।

यह बात नही है तुम गलत समझ रही हो ?

"और क्या समझूँ लेखक· मैं पतित हूँ···मुसलमान हूँ फिल्मी ससार की एक गिरी हुई औरत हूँ ·इसलिये सहारा देने से घबरा रहे हो। लेकिन क्या तुम्हारा यह फर्ज नही कि जो गिर चुका हो उसे फिर से उठने को सहारा दो न कि उसे निराश करके अपनी ठोकरो से कुचल दो।"

"तुम ठीक कह रही हो अलका ··विनय मात खा चुका था···लेकिन इन्सान को कुछ भी करने से पहले सोच लेना चाहिये कि वह क्या करने जा रहा है।"

"क्या सोचना चाहिये ··जरा तुम्ही बता दो न।"

"मैने अभी तक केवल एक कहानी लिखी है आगे कोई आशा नही कब अवसर मिले। ''तुम्हे अभी तो लोग हाथो-हाथ काम दे रहे है''' लेकिन क्या शादी के बाद तुम्हारी यही कीमत रहेगी कोई नही पूछेगा उस समय क्योकि तुम अपने आपको बेचने के लिये तैयार न होगी'' तब क्या होगा'''दोनो भूखो मरेंगे'''क्यो अपने आपको बरबाद करना चाहती हो ?"

"बरबादी और आबादी तुम भगवान के ऊपर छोड़ दो 'जिसने इस दुनियाँ मे भेजा है वह खाने पहनने का इन्तजाम भी करेगा'''लेकिन तुम मेरी बात का उत्तर दो।"

खामोश हो गया वह अजीब कशमकश मे था। वह'''इस मासूम को यह नही मालूम कि पहले ही वह किसी से'''और कोई उससे प्यार करता है'' और अगर बता देता है तो इसका दिल टूट जायेगा।

"बोलो लेखक।" अलका ने उसके दोनो हाथ पकड लिये।

"मुझे सोचने का समय दो।"

"लेकिन अब जाओगे तो नही यहाँ से।"

"नही'''और धीरे-धीरे वह कमरे से बाहर निकल गया।" खिल उठा अलका।

× × ×

"क्या सोच रहे हो सन्तू ?"

"कुछ नही ' ऐसे ही कुछ अतीत की बातें याद आ रही हैं''।"

"क्या ?'

"यही कि अब मैं पहले जैसा आजाद पक्षी नही हूँ ' सड़को पर निडर होकर घूम-फिर नही सकता'''अपनी बहिन की खुले आम देख-भाल नही कर सकता।"

और खिलखिला कर हंस पड़ा रमेश।

पागल हो तुम···दोस्त तकदीर ने अब तुम्हारे हाथ खून से रग दिये हैं समाज ने तुम्हे कातिल साबित कर दिया है लेकिन फिर भी भूलते हो तुम ··अब तुम पहले से अधिक आजाद हो पूछो क्यो ? ·· तो सुनो ··तुम्हारी आँखो पर से वह काला चश्मा हट गया है जिसके कारण तुम्हे समाज की बुराइयाँ नजर आती थी । · तुम्हारे दिल से वह बादल हट चुका है जिससे तुम पर समाज का भय छाया रहता था ।"

"यह तो सब ठीक है बोला सन्तू···लेकिन ऐसे सुनसान मे अकेले 'खाली मे कब तक बैठा रहूँगा ।"

कौन कहता है तुमसे खाली बैठे रहने को···यही तो अवसर है तुम्हारे लिये जबकि तुम किसी दुखिया के आँसू पोछ सकते हो · और किसी की माँग का सिंदूर मिटने से बचा सकते हो···लेकिन तुम तो खामोश हो ।

और सन्तू वास्तव मे खामोश रह गया ।

मेरी आरजू है मेरे दोस्त···कि तुम्हारे इन खूनी हाथो मे और खून लगे · तुम्हारे दिल मे एक साथ लाखो शोले सुलग उठें ··और तुम आँधी और तूफान की तरह इन्सान की इन्सानियत पर जमा हुआ जुल्म का पहाड हटा सको · और अगर इन्ही कामो मे·· किसी दिन मुझे तुम्हारे मौत की खबर मिलेगी ··तो मैं आँसू नही गिराऊँगा···वरन् खिलखिला कर हसूँगा क्योकि तुम्हारी इस मौत की कीमत वे लाखो जिन्दगियाँ होगी जो मौत के जालिम शिकन्जो से निकल चुकी होगी ।

चाय रखकर चली गई थी वह । ··उसे देखकर एकाएक चौक पडा था सन्तू ।

"क्या हुआ ? बोला रमेश···"

"कुछ नही ··यह शायद वही औरत है न जिसका पति ··

"जेल मे सड रहा है· लेकिन तुम इसे देखते ही एकदम चौक क्यो पड़े ?"

"ऐसे ही जरा इसकी जिन्दगी का ख्याल आ गया था ।"

"नाम क्या है ?"

"कमला।"

"इसका नही···इसके पति का।"·· बोला सन्तू।

"पति का नाम श्यामलाल है·· ठहरो तुम्हे उसका फोटो दिखाता हूँ।"

और रमेश अपने कमरे मे से जाकर फोटो ले आया। गौर से देखा सन्तू ने जो इस समय जेल मे सड रहा था।

चाय के घूट एक एक करके गले के नीचे उतरते चले गये।

"अच्छा·· अब तुम भी आराम करो मैं अपने कमरे मे चलता हूँ।"

रमेश चला गया और फोटो रह गया सन्तू के हाथ मे।

रात अँधेरी थी बादलो के चन्द टुकडे इधर-से-उधर पुलिस के दस्ते की तरह घूम रहे थे लेकिन बारिश होने के आसार नही थे। मेज पर रक्खी घडी टिक-टिक करती बढी चली जा रही थी।

और सन्तू बैठा हुआ था अपनी चारपाई पर···ख्यालो मे खोया हुआ···दूर जगल मे सियार के रोने की आवाज आ रही थी।

"धीरे-धीरे वह उठा···बाहर आया···खामोशी थी चारो ओर··· कदम बढ चले उसके· अनायास ही अन्धेरे रास्ते पर।

शहर सोया हुआ था—अब उसे कुत्तो की आवाज सुनाई दे रही थी·· उसने चाल और तेज कर दी और कुछ ही देर मे··

छक·· पर·· छक···टी···

स्टेशन आ गया था।

"उन्नाव की गाड़ी कितनी देर मे मिलेगी ?"

"बस जाने ही वाली है।"

"एक टिकट दे दीजिये।"

और अपने आप को औरो की नजरो से बचाता हुआ वह जा बैठा गाड़ी पर।

भीड अच्छी-खासी थी···कोई एक गाने वाले की मण्डली सी जान पड़ती थी क्योंकि उनके साथ गाने-बजाने का काफी सामान था। कुछ सोचा सन्तू ने· और फिर एक मुस्कराहट खेल गई उसके होठो पर।

"कहिये आप लोग कहाँ जा रहे हैं?"

"उन्नाव जेल।· ·उसमे से एक ने कहा आज वहाँ सालना जलसा है।"

यह तो बडा ही अच्छा हुआ ·मैं भी वही जा रहा हूँ· ·और पहली बार जा रहा हूँ · रास्ता भी मालूम नहीं था मुझे तो।

"तो उससे क्या है आप हमारे साथ चलिये?"

"हाँ अब तो चिन्ता दूर हो गई है आपके साथ ही चला जाऊँगा।"

"क्या गाने का शौक रखते हैं?"

"यही टूटे-फूटे फिलमी गाने।"

"वाह क्या खूब· ·दूसरा बोल पडा· · फिर हो जाये एक· रास्ता ही कटेगा।"

"अच्छा · जैसी आपकी इच्छा· सम्भालिये तबला···।"

और सन्तू की स्वर लहरी हवा मैं तब तक गूंजती रही जब तक कि स्टेशन न आ गया।

"आप तो बडा ही सुन्दर गाते है · हमारी मण्डली की तरफ से गा दीजियेगा।"

"हाँ-हाँ मुझे क्या ऐतराज हो सकता है?"

और उन सबके साथ ही उतर पडा उन्नाव स्टेशन पर।

बडी रौनक थी जेल मे· · शामियाना और उसके अन्दर स्टेज सजाया हुआ था · ·कलाकारो की चाय का प्रबन्ध कैदियो के कमरो के बराबर ही था।

मण्डली के साथ ही सन्तू भी पहुँच गया चाय पीने के लिये।

सब दौड-धूप मे लगे थे· ·और सन्तू की आँखे · ।

चाय पीते-पीते ही वह खिसक लिया अन्दर की ओर··जलसे की

खुशी में थोडी-सी आजादी मिली हुई थी कैदियों पर पहरा भी कोई खास नही था।

सब की निगाहो से अपने आपको बचाकर पहुँच गया सन्तू उन कैदियो के नज़दीक···जेब मे से उसने फोटो निकाल लिया।

और कुछ ही देर बाद नजर आ गया उससे मिलता हुआ चेहरा···

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"श्यामलाल।"

"मेरे साथ आओ।" ··और आगे-आगे चल दिया, सन्तू कमरे खत्म हो जाने के बाद दीवार आ गई थी।

"दीवार के उस तरफ क्या है ?"

"खाई।"

"कितना पानी है ?"

"कुछ पता नही मुझे।"

"खैर कोई बात नही।"···तुम मेरे कन्धे पर खडे होकर चढ़ने की कोशिश करो···। लेकिन फिर भी फासला रह गया था···एक झटका-सा दिया सन्तू ने।

मेरे हाथो पर अपने पैर रख लो।

एक बार फिर से झटका दिया और ताकत लगाकर हाथ ऊँचे कर दिये और साथ ही हाथो से पकड़कर लटक गया श्यामलाल।

"शाबाश···कोशिश करो।" और क्षण भर बाद ही वह चढ़ गया था दीवार पर···

"अब यह रस्सी सँभालकर पकड़े रहो···देखो छूट न जाये।"

और धीरे-धीरे रस्सी के सहारे सन्तू भी ऊपर पहुँच गया।

अचानक ही घण्टे बज गये सीटियाँ बज उठी···चारो तरफ शोर-गुल मच गया···आवाज़ साफ सुनाई दे रही थी उसे।

"कैदी भाग गया।"

"कूद पड़ो नीचे।"···और तेजी से वे दोनो खाई में कूद पड़े···

आधा शरीर कीचड मे धस गया था फिर भी तेजी से सन्तू श्यामलाल का हाथ पकड़कर आगे बढ़ता गया···

तभी एक साथ बहुत-सी बत्तियो की रोशनी आने लगी खाई पर जो कि शायद दीवार के ऊपर से फेकी जा रही थी।

इसी कीचड के अन्दर लेट जाओ और सन्तू उसे दबाकर खुद भी नीचे घुस गया।

दम घुटा जा रहा था · सारा शरीर कीचड के अन्दर था ··और फिर भी दम साधे पडे थे।

"धीरे-धीरे खाई के इस पार भी उन्हें आवाजें सुनाई देने लगी।"

जगल मे देखो···खाई मे तो कही नजर नही आते। ऊपर से आवाज आई—और दम मे दम आया सन्तू के।

एक घण्टे बाद जब चारो ओर खामोशी छा गई तब सिर बाहर निकाला सन्तू ने।

खाई के अन्दर-ही-अन्दर धीरे-धीरे आगे बढते चलो।

आकाश मे चाँद निकल आया था···कही-कही पर तारे भी झाँक लिया करते थे।

खाई में से निकल कर-वे दोनो जगल मे से गुजर रहे थे। नई जिन्दगी मिली थी श्याम को डेढ साल के कारावास के बाद जगल की खुली हवा मिली थी।

"अब क्या मैं जान सकता हूँ आप कौन है ?" उसने पूछा।

चुपचाप चलते चलो।

और एक बार बराबर से चलते हुए सन्तू की ओर देखकर खामोश हो गया श्याम।

रात की कालिमा को धोने के लिये पूर्व मे भानु का चेहरा निखर आया था···तारे शर्म के मारे मुँह छिपाकर भाग रहे थे।···"और तभी धीरे से बटन दबा दिया सन्तू ने। दरवाजा खुला···रमेश ने मुँह बाहर निकाला।

"कौन सन्तू ?"

"हाँ मैं हूँ ।"

"और यह पीछे कौन है ?"

"किसी की माँग का सिन्दूर ।"

"और दोनो अन्दर चले गये कीचड मे सने हुए सन्तू को सीने से लगा लिया रमेश ने ।

तुमने वह काम किया है जो शायद मैं भी न कर पाता···लेकिन फिर भी अब श्याम की जिन्दगी ही क्या ?"

"वह क्यो ?" चौक उठा सन्तू ।

"पुलिस जमीन आसमान एक कर देगी इसे ढूँढने के लिये ··ऐसी हालत मे इस खण्डहर से बाहर इसकी कोई दुनियाँ नही है ।"

वाह दोस्त· ·हँस पडा सन्तू···अब खुद ही भूल रहे हो···

"क्यो ?"

"यही तो अवसर है जब कि यह भी किसी दुखिया के आँसू पोछ सकता है···किसी अबला की लाज बचा सके और किसी की माँग का सिन्दूर मिटने से बचा सके ।"

"शाबाश !" ··चीख पड़ा रमेश···चलो अब चला जाय मै भी तुम्हारा साथ दूँगा ।"

"किस बात मे ?"···

"नहाने मे !"···

"तुम भी नहाओगे ?"·· बोला सन्तू ।

"क्यों नही ।"···तुम कीचड मे सने थे और मैं कीचड से लिपट गया था···।

तीनों खिलखिला कर हँस पड़े और फिर एकाएक खामोशा छा गई—रमेश ने जल्दी से कमला के बच्चे को जो कि पैरो पर पड़ा हुआ था, गोद मे उठा लिया··और सन्तू ने कमला की बाहें पकड़कर उठाते हुए धीरे से कहा ।· ·

"छि·· पगली···बहन-भाई के चरण नही पूजती।"

× × ×

मौत के से रात के सन्नाटे पर रह रहकर किसी के खाँसने की आवाज सुनाई दे रही थी—कही-कही से एकाएक कुत्तो के भौंकने की आवाजें भी उठ आती थी—हवा खामोश थी—शमाँ खामोश थी।

माया के सिरहाने इजीचेयर पर बैठी चन्दा कोई किताब पढ रही थी।

खिडकी पर धीरे से किसी ने थपकी दी। चौककर उठी चन्दा· · धीरे-धीरे काँपते हृदय से वह पहुँची खिडकी तक—दीवार से चिपका हुआ खडा था सन्तू।

"कौन भैया···चोरो की तरह यहाँ क्यो खडे हो ?"

"अब तो मैं चोर ही हूँ पगली···उधर से आता तो शायद किसी नौकर की नजर ही पड जाती।"

अच्छा अब तो अन्दर आ जाओ।

वह तेजी से अन्दर कूद आया और चन्दा का हाथ पकडकर बराबर वाले कमरे मे ले गया।

"क्या बात है···तबियत तो ठीक है माया की।"

"कहाँ ठीक है···पता नही क्या हो गया है···एकाएक इतनी खाँसी आने लगी है···बुखार काफी पुराना है·· ख्याल नही किया गया।"

यह तो काफी खतरनाक साबित हो सकता है।

तभी माया को फिर से खाँसी उठी—भागकर पहुँची चन्दा··· जल्दी से पानी का गिलास होठो से लगा दिया और तब शान्त हुई खाँसी···।

"आज कौन सी तारीख है चन्दा ?"·· पूछा माया ने।

"पन्द्रह।···क्यो···?"

"सोच रही थी आज ही के दिन पिक्चर रिलीज़ होगी उनकी।"

"हाँ एक महीना और है।"

"देखो...एक महीने अगर मौत ने इन्तजार किया तो देख ही लूंगी।"

"क्या पागलपन की बातें कर रही हैं सो जाइये अब आप।"

लेकिन माया की आँखो मे नींद कहाँ।

"सन्तू की भी कोई खबर नही आई।"

"हाँ अभी तक तो नही आई।"

"अच्छा जा तू सो जा जाकर।"

और माया के लेट जाने पर चन्दा फिर कमरे मे चली गई।

"थोडी देर और बैठो भैया मैं तुम्हारे लिये चाय बना लाऊँ।"

नही बाबा...चाय मे चाह न हो जाय...मैं अधिक देर नही रुकूंगा।.. तुमसे कुछ जरूरी बातें करने लिये आया था मैं...।

देख चन्दा . अब मेरी जिन्दगी तो खत्म हो गई क्योकि छिप-छिपकर जिन्दा रहना भी क्या है सवाल उठता है तेरा इसलिये तू एक काम कर—विनय भैया को एक पत्र लिख दे कि बस एक हफ्ते के लिये चले आयें वह...ताकि मैं तेरे हाथ पीले करवा दूं वे ही आकर जल्दी से कोई लडका ढूंढ लेंगे...रुपये का इन्तजाम मैं कर दूंगा।

"मुझे अभी शादी नही करनी है' 'शर्मा सी गई चन्दा।"

'तब फिर क्या करेगी?"

"तुम्हारे साथ ही चलूंगी ..जहाँ तुम रहोगे वही रहूँगी।"

"दिमाग खराब है तेरा...अच्छा अब मैं चलता हूँ...दो-तीन दिन बाद ले जाऊँगा तुम्हे अपने साथ।"

"अच्छा...।"

और कुछ ही देर में चन्दा की नजरो से ओझल हो गया सन्तू।

पलग पर गिर पडी चन्दा···इधर कुछ दिनों से परेशान थी वह रह-रहकर उसके हृदय मे एक भय की लहर-सी दौड जाया करती थी · सेठ के कारनामो का असर नजर आ रहा था उसे··· कई दिनो से शक था उसे अपने ऊपर। ऐसे ही अजीब ख्यालो में डूबते उतराते आँखे लग गयी···और नीद ने अपने दामन मे समेट लिया उसे।

"अरे चन्दा तुझे यह क्या होता जा रहा है।···जब देखो तब पेट मे दर्द · उल्टियाँ ··यह सब···अच्छा ठहर मैं डाक्टर को बुलाती हूँ।

और माया के फोन करने के कुछ ही देर बाद लेडी डाक्टर आ गई। काँप-सी उठी चन्दा·· न जाने क्यो उसके हृदय की गति एकाएक बढ गई थी ··और काफी देर तक हर सदेश लेने के बाद मुस्कराते हुए बोली डाक्टर।

"मिठाई खिलाइये मिस माया ·" आपकी सहेली माँ बनने वाली है।

"माँ चीख-सी उठी माया"···और फिर एकाएक अपने को संभालने की कोशिश करते हुए वह बोली···।

हाँ · जरूर खिलाऊँगी···आइये चलें।

लेडी डाक्टर चली गई···माया वापस लौटकर आई ··चन्दा सिसक रही थी।

"कौन है वह ?"

लेकिन खामोश पड़ी रही चन्दा।

"बता दे पगली ताकि समय से पहले तेरे हाथ उसके हाथो मे थमा दूँ·· नही तो समाज तुझे जीने नही देगा···यह दुनियाँ है चीख-चीख कर पूछेगी···यह किसका बच्चा है · इसे बच्चे का बाप कौन है···तू माँ कैसे बन गई।"

"और बिलख-बिलख कर रो उठी चन्दा।"

"रोने से काम नही चलेगा ··तेरी जान इस तरह नही बचेगी ·· अब भी समय है···बता दे कि वह कौन है ··नही तो तू स्वय बरबाद होगी ही यह होने वाला बच्चा भी बरबाद हो जायगा। लोग तुम्हे कल-मुँही कहेगे और इसको लावारिस।"

घबराकर उठ बैठी चन्दा···चीख मुँह से निकलते-निकलते रह गईं थीं। हृदय धौकनी की तरह धडक रहा था माथे पर पसीने की बूँदे चमक रही थी···और न जाने क्यो काँप-सी रही थी वह।

स्वप्न देखा था उसने एक भयानक सपना जो कि एक दिन सत्य बन सकता था और भावी आशका के काँपते हुए उसने अपने दिल पर हाथ रख लिया। चारो ओर से रात के सन्नाटे को चीरती हुई एक ही आवाज उसके कानो तक आ रही थी।

यह माँ बनने वाली है···यह माँ बनने वाली है···इस बच्चे का बाप कौन है···यह माँ बनने वाली है।

दोनो हाथो से उसने कान बन्द कर लिये।···धीरे-धीरे वह उठी··· चोरो की चाल से वह माया के कमरे मे पहुँची···वह सो रही थी · शान्ति की नीद।

जल्दी से वह फिर वापस लौट आई ··कुछ देर तक परेशान-सी होकर वह इधर-से-उधर टहलती रही और फिर अचानक ही बक्स खोलकर उसने दो जोडी कपडे निकाले केवल तेईस रुपये पास मे थे··· एक छोटी-सी पोटली बाँधकर दबे पॉव वह माया के कमरे की ओर बढी दोनो हाथ जोडकर उसने प्रणाम किया·· फिर सेठ जी के कमरे मे पहुँचकर काँपते हाथो से उनके चरण छुए' और हवा की तरह निकल गई कमरे से बाहर।

रात के सन्नाटे मे गुजरती हुई कुछ ही देर मे वह जा पहुँची स्टेशन के विशाल प्लेटफार्म पर।

"यह गाडी कहाँ जायगी ?"

"लखनऊ।"···और वह बैठ गई बराबर के जनाने डिब्बे मे···

उसे लग रहा था मानो सब औरते उसी की ओर ध्यान से देख रही हैं·· काँप-सी उठी वह···और घबराकर पेट के पास धोती को ठीक करके दोनो हाथो से पोटली दबा ली।

× × ×

चन्दा ·वह भाग कर दूसरे कमरे मे पहुँची चन्दा·· तेजी से वह नीचे की ओर भागी·· हर कमरा देख लिया बगले का कोना-कोना छान मारा·· लेकिन चन्दा कही नही थी।

पिताजी! चीख पडी माया·· और तेजी से सीढियाँ चढने लगी वह।

पिताजी! ·और फिर एकाएक बीच जीने पर ही अधलेटी-सी अवस्था मे गिर पडी वह बदहवास होकर खाँसी का दौरा हो गया था—मुँह से खून गिर रहा था।

क्या हुआ बेटी? ·भागते हुये आये सेठजी ··ऐसी हालत मे देखकर चीख निकल गई उनके मुँह से।

"माया।"···नौकर भागकर आ गये थे···गोद मे उठाकर ऊपर ले जाया गया माया को .सेठजी टेलीफोन की ओर बढे···

'पि · ता·· जी कटकती आवाज मे बोली वह · पहले चन्दा की फिक्र कीजिये।"

"क्यो उसे क्या हुआ है···?"

"बगले मे कही नही है ।"

"हे भगवान और काँपते हाथों से उन्होने डायल घुमा दिया।"

"कौन डाक्टर·· जरा जल्दी चले आइये आप···माया को एकाएक खून की कै हुई है···जी हाँ·· फौरन आ जाईये।"

और फिर उन्होने दोबारा डायल घुमाकर कहा।

पुलिस स्टेशन···देखिये मैं सेठ रतनचन्द बोल रहा हूँ · जी हाँ··· आप फौरन किसी को यहाँ भेज दीजिये·· मेरी लड़की की सहेली जो कि

मेरे साथ ही रह रही थी···अचानक घर से चली गई है ··जी हाँ ·· जल्दी कीजियेगा।

और फिर वह माया की ओर बढे।···वह आँखें बन्द किये पडी थी ··चेहरा सफेद पड गया था।···कुछ ही देर में डाक्टर साहब आ गये।

अपनी सहेली को खोजने के लिये वह ऊपर से नीचे की ओर गई थी ··और वापस ऊपर आते समय सीढियो पर ही खाँसी के साथ खून की कै हो गई।

"आप जरा बाहर आयेंगे।···बोले डाक्टर।"

"जी हाँ चलिये।···और बाहर आकर कुछ परेशान से स्वर मे बोले··· ।"

मैं किस तरह कहूँ सेठजी···कल शाम को ऐक्सरे की रिपोर्ट आ गई है।

"हाँ···हाँ···क्या पता चलता है··· ?"

"टी० बी० · और वह भी बढ चुकी है।"

"डाक्टर···। और फिर सिर पकडकर बैठ गये सेठजी वही जमीन पर··· ।"

'घबराने से काम नही चलेगा···सब्र से काम लीजिये···अगर मरीज को जरा भी शक हो गया तो बीमारी और भी खतरनाक हो जायेगी।"

"सब्र क्या डाक्टर···मैं पागल हो जाऊँगा परेशानियाँ इस तरह हाथ धोकर पड गई है कि बस··· ।"

"नमस्ते सेठ जी।"···

"ओह नमस्ते···बैठिए और पुलिस इन्सपैक्टर बैठ गया··· सोफे पर।"

माफ कीजियेगा।···मैं अभी आपसे बात करता हूँ।···हाँ तो डाक्टर·· कुछ भी करो···लेकिन इसकी जिन्दगी··· ।

मैं अपनी ओर से पूरी कोशिश करूँगा सेठजी···और तो कुछ फिर भगवान के हाथ मे है। अच्छा मैं चलता हूँ·· कुछ इन्जेक्शन लाने पडेगे।

"जल्दी आइयेगा··· । डाक्टर चला गया।"

"हाँ इसपैक्टर साहब···लडकी का नाम चन्दा है गोरे रग की है···गाल पर एक तिल है इकहरे बदन की है और उम्र यही कोई अठारह साल की होगी।"

"कब से नही है वह ?"

"रात तक तो हमने देखा ही है उसे बस सवेरे जब देखा तो कही नही मिली।"

"यहाँ और कोई रहता है उसका ?"

"हाँ एक भाई है ··वह आजकल बम्बई गया हुआ है···इसलिये मेरे पास रह रही थी वह।"

"अच्छा हम पूरी कोशिश करेगे।"

"मगर एक बात का ख्याल रखियेगा· यह अखबार आदि मे इसकी खबर न आये क्योकि उससे हमारी इज्जत पर आँच आने का डर है।"

"कोई बात नही आप बेफिक्र रहिये।"

"और इन्सपैक्टर भी चला गया।"

कमरे मे कदम रखते ही उसे माया की आवाज सुनाई दी।

किसी भी तरह चन्दा का पता लगवाइये पिताजी नही तो मै सन्तू को क्या मुँह दिखाऊँगी ?

मैं भी यही सोच रहा हूँ बेटी ··दोनो हाथो से सिर दबाते हुए बोले· वह··· ।

भगवान पर भरोसा रखो।

× × ×

और थक कर सीढियो पर बैठ गई चन्दा ''तीन दिन से बराबर वह नौकरी की तालाश मे घूम रही थी ''रात को धर्मशाला मे जाकर सो जाना और दिन मे नौकरी खोजना ' बस यही एक काम रह गया था उसके पास ।'''और अब निराश होकर वह सडक के किनारे बने हुये किसी के मकान की सीढियो पर बैठ गई थी ।

तभी दरवाजा खुला ''एक अधेड-सी औरत बाहर निकली ।''' चन्दा एक ओर खिसककर बैठ गई ।

"कैसे बैठी है री ।"

"थक गई थी इसलिये बैठ गई अभी चली जाऊँगी ।"

"कहाँ जाना है •?"

"पता नही ।" •

"पता नही'''अरे चौककर बोली वह ?"

"नौकरी ढूंढ रही हूँ उदास स्वर मे कहा चन्दा ने ।"

"अच्छा'' तो ऐसा बोल न ''फिर कुछ देर वह एकटक देखती रही चन्दा को'''।"

"नौकरी करेगी ?"

"हाँ • ।"

"चल अन्दर'''अभी मालकिन सो रही है जागेगी तब मिला दूँगी उनसे और वह चन्दा को अन्दर ले गई । दम-मे-दम आया चन्दा को ।"

और करीब एक घण्टे बाद वह औरत आकर बोली ।

"चल मालकिन बुला रही हैं तुझे ।"

कमरे मे कदम रखते ही चौंक पडी चन्दा ।

'तुम'''"

"आप'''"

"कहाँ'''यहाँ कैसे आ गयी ?"'''बोली सन्ध्या ।

"नौकरी की तालाश मे ।"

"क्यो सन्तू कहाँ चले गये ?" उसके स्वर मे तीखापन था।

"पता नही ··।"

"बस···भाई ने बहन का साथ छोड दिया।"

"और कुछ न कहियेगा मेरे भाई के विषय मे।"

सन्ध्या एकाएक सम्भल गई थी।

"मैं क्या कहूँगी पगली · वह एकाएक गम्भीर हो गई।" मुझे तुम दोनों पहचान न सके···न जाने कब से इस दिल मे तुम्हारे भाई के लिये प्यार छिपाये बैठी थी···लेकिन तुम्हारे भाई ने मुझे समझने की कोशिश ही न की। · और एक कुटिल मुस्कान खेल गई सन्ध्या के होठो पर।"

"खैर घबराने की बात नही है···इसे अपना ही घर समझो··· मुझे अपना ही समझो · मैं भी समझूंगी · मेरे खामोश प्यार की निशानी हो तुम।"

और उसकी बातो से धोखा खा गई भोली चन्दा।

आपने इस बात को छिपाकर क्यो रखा।

छिपाती न तो क्या करती···तुम्हारे भाई को तो मुझ पर पूरा-पूरा शक था।···कि सेठ साहब वाले मामले मे मेरा हाथ था· ·और सच मानो तो मुझे यह नही मालूम था कि वह ऐसा आदमी हो सकता है· और देख लो मैं· · बुरे कामो का बुरा फल होता है कुछ दिन पहले अखबार मे पढा था कि किसी ने उसकी हत्या कर दी—अच्छा ही हुआ ऐसे ज़लील आदमी का मर जाना ही अच्छा था।

लेकिन चन्दा खामोश रही···उलझन मे पडी थी वह···क्या वास्तव मे उस मामले मे इसका हाथ नही था···क्या वास्तव मे यह भैया को प्यार करती थी। तभी वह फिर बोल पडी ?

"कपड़े लाई हो अपने।"

"नही।"

"अच्छा तो ऐसा करो·· मैं तो शाम को क्लब चली जाऊँगी···तुम माँ जी के साथ जाकर अपने लिये कपड़े खरीद लाना···।

और एक सौ का नोट उस अधेड औरत की ओर बढाते हुये कहा सन्ध्या ने।

"माँ जी···इनके साथ चली जाना।"

कुछ देर तक खामोशी छाई रही फिर सन्ध्या ने उठते हुए कहा।

तुम आराम करो मैं नहाने जा रही हूँ ··और फिर उस औरत की ओर रुख करते हुए वह बोली···नहाने के लिये पानी रख दो माँ जी।

चन्दा लेटे-लेटे सोच रही थी···यह क्लब क्या है·· यह माँ जी कहाँ से आ गईं···वहाँ तो कोई माँ जी नही थी।

फिर एकाएक उसे माया का ख्याल आ गया न जाने कैसी तबियत हो···मेरे कारण और भी परेशानी बढ गई होगी···हर तरफ खोजा जा रहा होगा।

भैया न जाने क्या सोचेगे···और इन्ही सब ख्यालो मे उलझते-उलझते सो गई।

शाम को सात बजे उसे माँ जी ने जगाया···चन्दा ने उठकर मुँह-हाथ धोया बाल सवारे और जैसे ही बैठक मे कदम रखा··माँ जी चाय लेकर आ गयी।

चाय पी लो फिर बाजार चलेंगे।"

"मालकिन कहाँ गई?"

"वह तो क्लब चली गई।···तो चलोगी न चाय पीके?"

"आज तबियत ठीक नही है···कल चलेंगे।"

कल सही। ''और वह अन्दर चली गई।···और चाय के प्याले मे चन्दा अपने भावी जीवन की तस्वीर देखने की कोशिश करने लगी।

चाय ठण्डी हुई जा रही थी।

× × ×

मुसाफ़िरो को उतारते हुए चली जा रही थी ट्रेन—जिसके विशाल-

काय काले इजन से झक-झक की आवाज काला धुँआ आकाश की ऊँचाइयो तक छोडते हुये निकल रही थी ।

कम्पार्टमेट की ऊपर की सीट पर बैठा हुआ विनय सोच रहा था अतीत की बातें । कितनी जल्दी अचानक ही दुनिया बदल जाती है ।

कितनी बेरुखी से विनोद ने कहा था ।

भाई दरअसल बात यह है कि मै जिस अरमान से तुम्हे लाया था पूरा न हो सका या यूँ कहो कि तुम्हारी कलम मे अब वह ताकत नही रही जो पहले थी·· नही तो काम की कौन कहे सब तुम्हारे पीछे दौडते ।

और किस बेवफाई से अलका ने कहा था—अच्छा है अगर तुम घर वापस चले जाओ क्योकि यहाँ तुम्हारे लिये कोई चान्स नही है व्यर्थ मे समय और जीवन बरबाद करने से फायदा ही क्या ?

तुम्हे मालूम नही अलका···मै अपनी कलम घर पर ही भूल आया था इसलिये यह सब हुआ असफलता मिली ··और अब उसे लेने जा रहा हूँ· ·फिर देखना सफलता मेरे कदम चूमेगी ।

और केवल हँसकर रह गई थी अलका ?

आज तेरह अगस्त है···और परसो पन्द्रह अगस्त होगा ।···लेटे-ही-लेटे बडबडाया विनय । "सबके साथ देखूँगा अपनी पिक्चर को । फिर एकाएक ख्याल आ गया सबका—माया कैसी होगी···चन्दा क्या कर रही होगी···सन्तू ने अब तो कही-न-कही नौकरी कर ली होगी ।

और एकाएक चौककर उठ बैठा वह कानपुर आ गया था··· वही पुराना जाना पहचाना स्टेशन···अजीब-सी खुशी महसूस हो रही थी ।

कुली बुलवा कर उसने बैंडिग और अटैची केस उतरवाया और चल दिया बाहर की ओर ।

कुछ ही देर बाद रिक्शा आकर रुका टूटी हवेली के सामने ।··· उसने रिक्शे वाले को पैसे दिये—सामान उतारा · ·अनायास ही नजर

बँगले पर जा पडी···सन्नाटा था···नीचे दो कार अवश्य खड़ी थी।

कोठरी का दरवाजा खोला उसने और चौककर पीछे की ओर हट गया·· सुनसान पडी थी कोठरी फिर अपने आप ही उसके कदम बँगले की ओर बढ चले।

नीचे ही नौकर से मुठभेड हो गई।

माया कहाँ है ?

"ऊपर है· तबियत बहुत खराब है उनका···माथा ठनका विनय का···काँपते दिल से वह ऊपर पहुँचा···माया के कमरे के सामने पहुँच कर वह ठिठक गया।···सेठ जी और डाक्टर बैठे हुये थे धीरे से वह अन्दर घुस गया। चौक पड़े सेठ जी।

"नमस्ते।"

"कहिये होश आ गया आपको।···सेठ जी के स्वर मे तीखापन था···मिल लीजिये माया से···आइये डाक्टर हम उधर चले।

और वह डाक्टर के साथ बाहर चले गये आँखें बन्द किये लेटी थी माया।···एक बार तो विनय को अपनी आँखो पर विश्वास नही हुआ। क्या यह वही माया है ?···जिसके चेहरे का रग सफेद पड़ चुका था··· हड्डी-हड्डी नजर आ रही थी।

माया।···उसने धीरे से कहा। लेकिन वह वैसे ही पडी रही··· बेहोश···बे असर···।

मैं आ गया हूँ माया।···और एकाएक चौक कर आँखें खोल दी माया ने।

"तुम।···उसने उठने की कोशिश की लेकिन उठ न सकी।"

"कब आये ?'

"अभी चला आ रहा हूँ।"

"ठीक तो है।"

"मैं तो ठीक हूँ···लेकिन तुमने यह क्या हालत बना ली है··· क्या हो गया है तुम्हे।"

और एक फीकी-सी हँसी हँसकर वह बोली।

आखिरी घडियाँ गिन रही हूँ कि कब शान्ति मिले इस दिल को।

"माया।···और आँखो में आये हुए आँसुओ को छिपाने के लिये वह उठकर खिडकी की तरफ चला गया।···कुछ देर तक खामोशी छाई रही फिर भीगी आवाज मे विनय ने कहना शुरू किया।"

"चन्दा और सन्तू कहाँ हैं?"

"दोनो का कुछ पता नही।"

"उफ।" और उसने अपना सिर दीवार से टिका दिया—तुमने मुझ जैसे बदजात और आवारा इन्सान से प्यार क्यो किया माया··· क्यो किया·· मै कितना गिरा हुआ इन्सान हूँ···जिसने अपने स्वार्थ मे अन्धा होकर कितनी मासूम जिन्दगियो को तबाह कर दिया···नाम शोहरत और पैसे का फूल पाने के लिए कितने फूलो को मसल दिया। मुझे दौलत से नफरत थी···और उसी दौलत की खातिर मैंने यह गुनाह किया···मैं गुनहगार हूँ माया···

तुम्हारा मुरझाया हुआ चेहरा· सूखा हुआ यह हड्डियो का ढाँचा ···चन्दा और सन्तू की खोई हुई याद···यह सब मेरे गुनाहो का डका पीट रहे थे ·।

दुनियाँ की कहानियाँ बनाते-बनाते आज मेरी ही कहानी बन गई··· जिसमे मेरा सबसे गिरा हुआ चरित्र है···लेकिन···तुम खामोश क्यो हो···मुझे दुत्कार क्यो नही देती···मुझसे नफरत क्यो नही करती · बोलो· ?"

और वह माया के सिरहाने आकर बैठ गया।

"मैने एक बार कहा था कि तुम इन्सान नही हो और आज फिर से कह रहा हूँ कि तुम इन्सान नही · देवी हो···लेकिन मैं इन्सान तो क्या जानवर से भी गिरा हुआ हूँ।···अपने आपको मैं लेखक समझता हूँ···लेखक सारी दुनिया के दर्द पहचान लेता है और मै तुम्हारा दर्द तक न पहचान सका···तुम्हारे प्यार को परख न सका।·· और तुम

देवी की तरह मुझ नीच के लिए खामोश मोहब्बत दिल मे छिपाये रही। तुम मेरी खातिर बम्बई पहुँची और शराब से डूबे हुये जलील इन्सान को सहारा देकर वापस लौट आई।

लेकिन तुमने सहारा क्यो दिया···ठोकर क्यो न मार दी···जबकि मै इसी काबिल था।

"एक बार अपने मुँह से कह दो माया·· कि तुम मुझे प्यार नही करती·· तुम नफरत करती हो।—कह दो देवी।"

आत्मा कभी झूठ नही बोलती···लेखक यह समय पछतावा करने का नही है · भावुकता मे खोने का नहीं है···मेरी जिन्दगी का अब कोई भरोसा नही···एक दिन या दो दिन···बस इससे अधिक नही क्या मरते समय भी मुझे एक खुशी न दे सकोगे।

"क्या ?"

"इसी समय जाकर सन्तू और चन्दा को ढूँढो···और मौत से पहले वापस लौट आओ। मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगी···लेकिन यह याद रखना लेखक कि अगर मैं चन्दा को देखे बगैर मर गई तो अगले जन्म के लिए भी मेरे माथे पर एक कलक लग जाएगा कि मैंने चन्दा का ख्याल नही रखा।"

'तुम मर नही सकोगी माया वरना मेरी कहानी अधूरी रह जायेगी···मैं जल्दी ही वापस लौट आऊँगा।"

और लडखडाते हुए कदमो से वह निकल गया बगले से बाहर।

पानी बरसने लगा था और ऐसे मे भीगते हुये वह आगे बढ़ रहा था एक अनजाने पथ पर···कि कानो मे किसी की जानी-पहिचानी आवाज पडी।

"भैया।"···चौककर पलटा विनय···सन्तू खडा था खम्भे की आड मे।"

"सन्तू। और सीने से लगा लिया उसने मानो जिन्दगी मिल गई हो।"

"यहाँ इस तरह खड़ा रहना मेरे लिये खतरनाक है।" बोला सन्तू।"

"क्यो ?"

"आओ चलें फिर बताऊँगा सब।" और वह उसे ले गया गली के एक सुनसान से होटल मे···और सिसकी भरे स्वर मे उसने सुना दी पूरी कहानी।"

"तो चन्दा कहाँ है ?"···बोला विनय।

"यही जानने के लिये तो मै परेशान हूँ · सारा कानपुर छान मारा है · खैर दो मिनट ठहरो·· मै तुम्हारे साथ ही चलता हूँ · फिर से ढूंढने की कोशिश करेंगे।···

और कुछ ही देर में वह वापस लौट आया सूरत कुछ-कुछ बदल-सी गई थी···अच्छी तरह जानने वाले ही पहचान सकते थे ·और फिर दोनो चल दिये चन्दा को ढूंढने के लिये।

चलते-चलते शाम हो गई थी ··एकाएक विनय सडक के किनारे ही पेट दबाकर बैठ गया···

"क्या हुआ ?"

"बहुत बुरी आदत पड गई सन्तू · और वह आदत बीमारी मे बदल गई है·· लेकिन दवा यहाँ शायद ही मिले।"

"कौन-सी दवा ?"

"शराब।"

'भैया।"

"हाँ सन्तू·· नही तो यह दर्द चैन नही लेने देगा।"

"लखनऊ चलना पडेगा ··यहाँ तो मुश्किल है।"

"कही भी चलो।"

और वह फिर से हिम्मत करके उठ खडा हुआ ·शराब के लिये शराबी नरक मे जाने तक के लिये तैयार हो जाता है · ।

लखनऊ पहुँचते-पहुँचते आठ बज चुके थे। सडको पर काफी रौनक थी। लिबर्टी होटल मे दौर-पर-दौर चल रहे थे···प्यासा जिस तरह रेगिस्तान मे पानी देखकर लपकता है उसी तरह विनय घुस गया अन्दर सन्तू के साथ।

"थोडी-सी तुम भी पियो।" बोला विनय और न टाल सका सन्तू···क्योकि इतने दिनो बाद मिले हुए दोस्त की जिद थी।

"अमाँ सुना है आज झुम्मन बाई के यहाँ कोई नया माल आया है।"···एक ने कहा।

"अरे···कमाल है यार·· वही तो चलने का प्रोग्राम है। दूसरे ने जवाब दिया।"

गले के नीचे नीली पीली ··उतरती चली गयी।···नशे ने अपना रग दिखाया···और दोनो के कदम दूसरे आदमियो के पीछे उठ चले।

जब आँख उठायी तो झुम्मन बाई के कोठे पर पहुँच चुके थे।

"सन्तू हम कहाँ आ गये ?"···

"मुझे क्या मालूम···तुम्ही तो लाये हो।" और सन्तू ने बाजार से खरीदा हुआ फूलो का हार हाथ मे लपेट लिया।

नशा कुछ-कुछ ढीला हो चला था।···विनय सोच ही रहा था उठकर चल देने के लिये कि अन्दर किसी के सिसकने की आवाज आई और वह फिर बैठ गया।

"ए बाई जी।"···एक आदमी बैठी हुई औरत से बोला···"कहाँ है झुम्मन बाई और वह नया माल ?"

"अभी आये जाते है।"

तभी फिर अन्दर से आवाज आई।

"मैं नहीं जाऊँगी···मुझे अपना सौदा नही करना है।"

"चलना पड़ेगा तुम्हें···नौकरी दी है कोई खेल नही किया है···"

"लेकिन इस बात की नौकरी तो नही की है मैंने···।"

"अब सीधी तरह चलती है या बुलाऊँ।" तीखा स्वर था। "भगवान मेरे वे भाई कहाँ हैं जिन्होने दुनियाँ में अकेले रह जाने पर मुझे सहारा दिया था।" चौक पड़ा सन्तू।

"भैया....यह क्या हो रहा अन्दर?" और तभी एकाएक हाथ पकड़कर खीचते हुये एक औरत किसी लडकी जिसने शर्म से चेहरा छिपाया हुआ था बाहर ले आई। चौक पडा सन्तू।

'सन्ध्या।"...

"तुम।"...उसी समय घूंघट पलट दिया उस लडकी ने।

"चन्दा।"...चीख उठा विनय।

"भैया।"...और लिपट गई वह विनय से।...सन्ध्या अन्दर भाग गई थी खून सवार था सन्तू के ऊपर वह तेजी से भागा अन्दर की ओर...और कुछ ही देर मे अन्दर से एक आह की आवाज आई साथ सन्तू तेजी से बाहर आया और चन्दा का हाथ पकड़ कर नीचे उतर गया। विनय पीछे-पीछे था।

"तू यहाँ आई कैसे चन्दा?" पूछा विनय ने।

"यह बात करने का समय नही है...मेरे पीछे-पीछे आओ जल्दी से।" ..और सन्तू ने एक टैक्सी वाले को इशारा किया।

चालीस रुपये पर तैयार हो गया वह कानपुर चलने को।...और वे तीनो बैठ गये टैक्सी पर।

सिसकियो के बीच कहानी सुना रही थी चन्दा और आग-सी सुलगाती जा रही थी विनय के दिल में।...करीब दो घण्टे बाद कानपुर मे प्रवेश किया टैक्सी ने...लेकिन उसी समय सन्तू ने पलट कर पीछे देखा...पुलिस की कार चली आ रही थी।

"भैया।"

"हूँ...।"

"जरा पीछे देखो...यह क्या है?"

"कार है।"

"इधर क्यो आ रही है ?"···

"तुझे अब भी वह मजाक याद है पागल।" और फिर वह टैक्सी वाले की ओर झुक गया। और पैसे ले लेना लेकिन जरा तेजी से बढाओ।

चन्दा को तुम्हें सौप रहा हूँ भैया···अब इसे छोडकर बम्बई न चले जाना।"

"क्यो ?"···चौका विनय।

"अपनी जिन्दगी अब खत्म समझो···पुलिस को अब और अधिक तग नही करना चाहता।" बोला सन्तू।

और कुछ ही देर मे बंगले के सामने आकर रुकी टैक्सी।···आगे-आगे विनय और पीछे-पीछे वे दोनो भागकर ऊपर पहुँचे···सेठ जी ने गोद मे सिर रखा हुआ था माया का।

"माया !"···चीख पडा विनय···"देखो मैं ले आया हूँ दोनो को।"

उसने धीरे से आँखे खोली···सेठ जी एक ओर हट गये हया को छोडकर विनय ने उसका सिर अपनी गोद मे रख लिया—

बाहर खटपट की आवाज हुई···सबने एक साथ पलट कर पीछे देखा···पुलिस का दस्ता था।

"डरो नही भैया ?"···सन्तू बोला।

'चन्दा···तुम···।"···चन्दा ने माया का हाथ···हाथ मे पकड़ लिया···। और माया ने दूसरा हाथ मुश्किल से तकिये के नीचे डाला।

"ले···ख···क क ··ल···म।" विनय ने कलम हाथ में ले लिया।

"मैं तुम्हे···प्या···र···।"···और उसकी गर्दन पीछे को लटक गई।

"माया।"···चीख कर लिपट गया विनय।

"बेटी।"···और सेठ जी उसके पलंग पर सिर रख कर सिसक उठे। चन्दा उसके पैरों से लिपट चुकी थी।

"चलिये।"...धीरे से कहा सन्तू ने और एक बार सिर झुकाकर वह खामोशी से बाहर निकल गया।

चौककर विनय ने सिर उठाया...माया खामोशी सोई हुई चिर निद्रा की गोद मे।

"भैया।"...सिसक उठी चन्दा। "सन्तू भैया...।"

लेकिन नजदीक ही श्मशेन से सिर उठाए पड़े थे कुछ फूल...।

"मुट्ठी भर फूल।"